आर.ए.एन. पंजीयन क्रमांक
CHHIN/2017/72506

वर्ष 04, अंक 06 जुलाई 2020

किलोल

KARGIL VIJAY DIWAS

HTTP://WWW.KILOL.CO.IN

मूल्य 80/-

स्कूली शिक्षा में समर्पण हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

H. No. 580/1 Street 17 B Durga Chowk,
Adarsh Nagar, Mowa Raipur (CG) 492007
email : wings2flysociety@gmail.com

अनुक्रमाणिका

प्रार्थना 6

प्रार्थना 7

प्यारी माँ 8

तिरंगे की शान 10

माँ 11

कारगिल- अदम्य साहस और शौर्य की गाथा 12

छत्तीसगढ़ 14

माँ तुम्हारे बिना 16

गणित का खेल 18

चलो पूछते हैं 20

किट्टू की समझदारी 21

वृक्षारोपण 23

वे गरीब मजदूर 25

मेरे पापा हीरो हैं 27

कोरोना अभिशाप में वरदान 28

जागो, प्यारे बच्चो 29

गाल फुला कर बैठी है 31

भालू वाला 32

नटखट नन्ही 34

बिल्ली को झुकाम 36

मोटर आती 37

हम चाँद पर चढ़ेंगे 38

मेरी डॉल 40

गुलेल 41

नन्हे-मुन्ने बच्चे हैं हम 43

कोरोना योद्धाओं को सलाम 44

आनंद का राज - तीक्ष्ण बुद्धि, कड़ी मेहनत और लगन 46

आई रे गर्मी आई 48

सपना करे साकार, पढ़ई तुँहर दुआर 50
जहाँ चाह - वहाँ राह 53
हक़ है 55
आओ बरखा रानी आओ 56
बेटी जब दुनिया में आई 57
सुनहरा बचपन 59
प्लास्टिक बैग नहीं चलेगा 61
बादर ह बदरावत हे 63
चिड़िया 64
जघन्य कृत 65
विश्व पेपर बैग दिवस (12 जुलाई) 66
प्यारे बच्चे 68
वर्षा की रात 69
पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन 71
तितली रानी 76
कोरोना से करुणा 77
सीखें हम जीवन का सार 78
शिक्षा जीवन की बुनियाद है, शिक्षा उन्नति का सार है 79
मेरा घोड़ा 81
वह कौन? 82
बनवारी सब्जी वाला 84
गेंडा 86
वह बचपन के बदलते रंग 87
आई बदरिया 89
बच्चों को बनाएँ स्वस्थ प्रतियोगिता का हिस्सा 90
शिक्षक की सीख 92
रक्तदान 94
गौरैया 96
नीटू का मास्क 98
चिड़िया रानी 101

जीवन में आध्यात्म का महत्व 103
चन्द्रमा की रोचक जानकारियाँ 104
मन की बात 106
सफलता की कहानी :- क्या ऐसा भी होता हैं 107
तमन्ना 109
तम्बाखू 110
The Teacher is more than a teacher 112
देशभक्ति 115
सूरज 117
कैसे बनता है इंद्रधनुष?? 118
पानी आगे 120
भारत के सपूत 121
वन 122
शिक्षक और विद्यार्थी 124
बगिया 126
रेल का खेल 128
प्यारी चींटी 129
नमन की पढ़ाई 131
लड़का 134
पहेलियाँ 135
My online classes 137
पंचतंत्र की कथाएं 138
सियार और ढोल 138
पढ़े ला आबे पाठशाला मा 140
नमामि गंगे 141
गाँधी 143
गोदना कला से निर्मित मास्क व दस्ताने 145
अधूरी कहानी पूरी करो 146
टेकराम ध्रुव 'दिनेश' व्दारा पूरी की गई कहानी 147
बसेरा 147

प्रियंका सिंह व्दारा पूरी की गई कहानी....148
पश्चाताप....148
संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी....149
बहादुर का प्रायश्चित....149
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी....150
नन्हें-मुन्हें बच्चे....152
नई इबारत लिख जाना....153
All Likes....154
एक था अनिर्बान....155
शहीद वीर नारायण सिंह....158
प्रकृति की लीला....160
आओ हम वृक्ष लगाएं....161
Decision....163
नन्हे तारे....164
पर्यावरण बचाओ....165
जहाज आया जहाज आया....166
हमारे प्रेरणास्त्रोत - शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा....167
प्यारा हाथी....169
चित्र देख कर कहानी लिखो....171
सुभाष राजवाड़े,शा. उ. मा. विद्यालय कनकी द्वारा भेजी गई कहानी....172
पल्लवी साहू द्वारा भेजी गई कहानी....173
लॉक डाउन में मज़दूरों की समस्या....173
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी....174
लॉकडाउन में फँसा मजदूर....174
अगले माह हेतु चित्र....175
गुमनाम....176
खुल गे स्कूल....178
भाखा जनऊला....180

संपादक

डा. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. रचना अजमेरा, डॉ. माया नायर, डॉ शिप्रा बेग, रीता मंडल, कंचन लता यादव, पुर्णेश डडसेना, शिप्रा बेग, कविता आचार्य

तकनीकी सहायक एवं ई-पत्रिका

पुनीत मंगल

आवरण पृष्ठ

हेमन्त कुमार साहू

प्यारे बच्चों,

उम्मीद है कि इन छुट्टियों में घर पर आप सुरक्षित होंगे और कोरोना वायरस से अपनी सुरक्षा के लिए सभी नियमों जैसे फिजिकल डिस्टेन्सिंग और साबुन से नियमित हाथ धोना आदि का पालन कर रहे होंगे. अपने खाली समय में किलोल पत्रिका में आपके लिए उपलब्ध कहानी, कविताएँ एवं अन्य रचनाएँ पढ़ना जारी रखें. किलोल में प्रकाशन के लिए आप अपने आलेख भी लिखकर हमें भेज सकते हैं. इसके अलावा पढाई से जुड़े रहने के लिए आपके पास आपके अपने घर पर “पढ़ई तुंहर दुआर” भी उपलब्ध है. आपको पता ही है कि “पढ़ई तुंहर दुआर” में कक्षावार, विषयवार एवं पाठवार ढेर सारी सामग्री उपलब्ध है. इन सामग्रियों का उपयोग अवश्य करें. खेल-कूद के लिए ऐसे खेलों का चयन करें जिनमें फिजिकल डिस्टेन्सिंग का आसानी से पालन किया जा सके.

सब कुछ ठीक रहा तो हम सब स्कूल में अपने दोस्तों से जल्दी मिलेंगे !

आपका
आलोक शुक्ला

प्रार्थना

रचनाकार- विजय लक्ष्मी राव

नन्हें-नन्हें हाथ जोड़कर,
हम सब माँगे यह वरदान.
हमको देना ऐसा ज्ञान,
सबको माने एक समान.
पढ़-लिखकर हम बने महान,
मन में न हो कभी अभिमान.

प्रार्थना

रचनाकार- शशि पाठक

हे प्रभु मुझे शक्ति देना,
कर्म ऐसा कर सकूँ.
जनकल्याण का ले संकल्प
सन्मार्ग पर मैं चल सकूँ.

चहुँओर विश्व में शांति हो,
मन में न कोई भ्रांति हो.
नई सोच औऱ उमंग का,
हर एक पल नव क्रांति हो.

कोई रोग का न वास हो,
सब कष्ट मिटें न संताप हो.
धरा मुक्त हो दुर्व्यसनों से,
सुख-समृद्धि का निवास हो.

दुर्बलों का सबल बनूँ मैं,
निःस्वार्थ सेवा कर सकूँ.
रहकर मार्ग पर अविचल,
कुछ राष्ट्रहित मैं कर सकूँ.

प्यारी माँ

रचनाकार- रीना मौर्या 'मुस्कान'

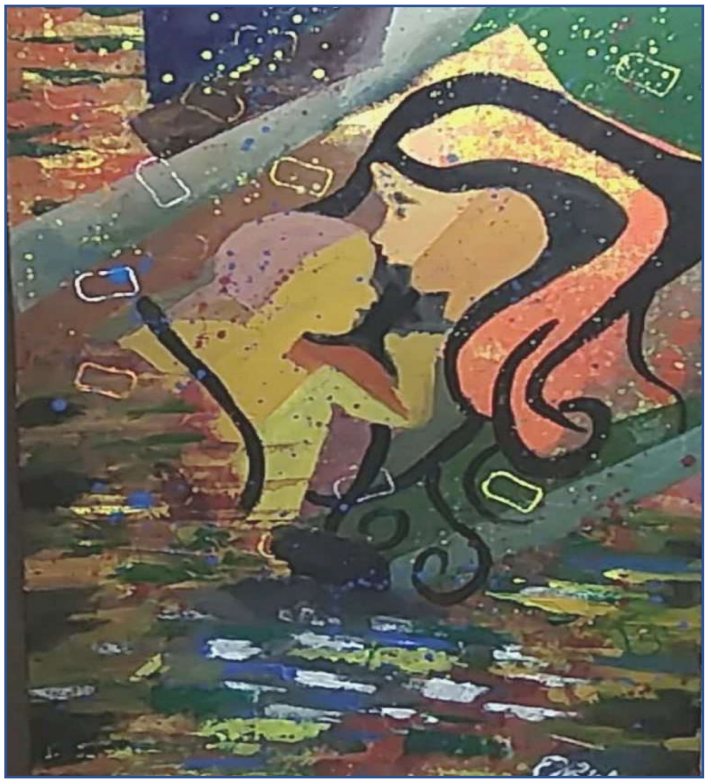

बड़े प्यार से गोदी में ले,
हमको माँ जगाती है.
मीठी-मीठी बातें करके,
माँ हमको बहलाती है.

बड़े सवेरे हमें उठाती,
उगता सूर्य दिखाती है.
फिर थोड़ा व्यायाम कराती,
रोटी हमें खिलाती है.

जब जाते हम विद्यालय,
हमें छोड़ने आती है.
निपटाकर घर के काम सभी
हमको खूब पढ़ाती है.

अच्छा सा पकवान बनाकर,
हमको रोज खिलाती है.
संस्कारों के पाठ पढ़ाती,
हमको इंसान बनाती है.

तिरंगे की शान

रचनाकार- यशवंत कुमार चौधरी

भारत की पहचान तिरंगा,
हम सब की है जान तिरंगा.
तीन रंगों से है सुसज्जित,
वीरों की है आन तिरंगा..

बलिदानों की गौरव गाथा,
और उनका अभिमान तिरंगा.
हिन्दुस्तान के हर कोने पर,
समृद्धि की पहचान तिरंगा..

झुका कभी न झुकने देंगे,
लहराता मधुमय गान तिरंगा.
जय-जय हिंद के नारों से,
लगता गुंजायमान तिरंगा.

माँ

रचनाकार - निखिल तिवारी

माँ के आँचल की छैंया में, छैंया में,
बड़ा मजा आए सुतइया में.

माँ संग स्कूल जवइया में, जवइया में,
बड़ा मजा आए पढ़इया में.

माँ संग रोटी बनइया में, बनइया में,
बड़ा मजा आए खवइया में.

माँ संग खेल खेलइया में, खेलइया में,
बड़ा मजा आये हंसइया में.

कारगिल- अदम्य साहस और शौर्य की गाथा

लेखक - पुनीत मंगल

"वह खून कहो किस मतलब का, जिसमें उबाल का नाम नहीं.
वह खून कहो किस मतलब का, आ सके देश के काम नहीं."

प्यारे बच्चो, भारत की फौज अपने अदम्य साहस, वीरता और बलिदान के लिए जानी जाती है. इतिहास गवाह है कि भारत ने कभी भी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया, लेकिन हमारी फौज कितनी साहसी एवं मजबूत है इसको बताने के लिए हमारे पड़ोसी देश कोई न कोई मौका दे ही देते हैं.

आज हम ऐसे ही एक प्रामाणिक युद्ध की बात करेंगे जिसमें हमारी फौज ने अपने अदम्य साहस और अद्भुत वीरता का प्रदर्शन किया और पूरे विश्व को अपने शौर्य से नतमस्तक कर दिया.

वर्ष 1999 के मई माह में पाकिस्तान के सैनिकों और पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों ने मिलकर भारत की वास्तविक सीमा रेखा में घुसपैठ कर भारत के लेह लद्दाख क्षेत्र की कई महत्वपूर्ण चोटियों पर कब्जा कर लिया था. भारत के अन्य क्षेत्रों को लेह लद्दाख से जोड़ने वाली सड़क पर नियंत्रण हासिल कर घुसपैठियों ने सियाचिन ग्लेशियर पर भारत की स्थिति

को कमजोर कर दिया. यह हमारी राष्ट्रीय अस्मिता के लिये बहुत बड़ा खतरा था. संचार के माध्यमों की कमी होने के कारण भारतीय सेना को इस स्थिति की जानकारी चरवाहों से मिली. भारतीय सेना ने उस क्षेत्र को वापस अपने अधिकार में लेने के लिए अदम्य साहस और शौर्य का परिचय दिया एवं दुर्गम चोटियों पर स्थित पाकिस्तानी सेना को भागने के लिए मजबूर कर दिया. पाकिस्तानी घुसपैठियों ने जिस क्षेत्र पर कब्जा किया था और जहाँ यह युद्ध हुआ वह क्षेत्र कश्मीर के कारगिल जिले में आता है अतः इस युद्ध को कारगिल के युद्ध के नाम से जाना जाता है.

कारगिल का युद्ध 2 महीने तक चला था. 26जुलाई 1999 को भारतीय सेना ने युद्ध में चलाए गए आपरेशन विजय को सफलतापूर्वक अंजाम देकर भारत की जमीन से पाकिस्तानी घुसपैठियों को मार भगाया और विजयश्री हासिल की. इस जीत की याद में हर वर्ष 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस मनाया जाता है.

इस युद्ध में भारतीय सेना के 527 जवान वीरगति को प्राप्त हुए थे. इन सभी जवानों की वीरता की कहानियों को एक ही बार में बता पाना संभव नहीं है. इस युद्ध में प्राकृतिक विषम परिस्थितियों के होते हुए भी भारतीय सेना ने जिस साहस और शौर्य का प्रदर्शन किया था वह हमेशा अविस्मरणीय रहेगा.

इस युद्ध के वीरों के कुछ कथन जो भारत की फ़ौज को जोश और शौर्य से ओतप्रोत कर देते हैं

'मैं तिरंगा फहराकर वापस आऊंगा या फिर तिरंगे में लिपटकर आऊंगा, लेकिन मैं वापस अवश्य आऊंगा.' **- कैप्टन विक्रम बत्रा**

'यदि मौत तब आती है, जब तक कि मैं अपनी रगों में बहते खून को साबित ना कर पाऊं, तो मैं कसम खाता हूं कि मैं मौत को मार दूंगा.'**-कैप्टन मनोज कुमार पांडेय**

हमारा तिरंगा इसीलिए नहीं लहराता, क्योंकि हवा चलती है, बल्कि यह हर उस सैनिक की अंतिम सांस से लहराता है जो इसकी रक्षा करने के लिए शहीद होते हैं **-कैप्टन अनुज नय्यर**

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा."

जय हिन्द

छत्तीसगढ़

रचनाकार -तेजेश साहू

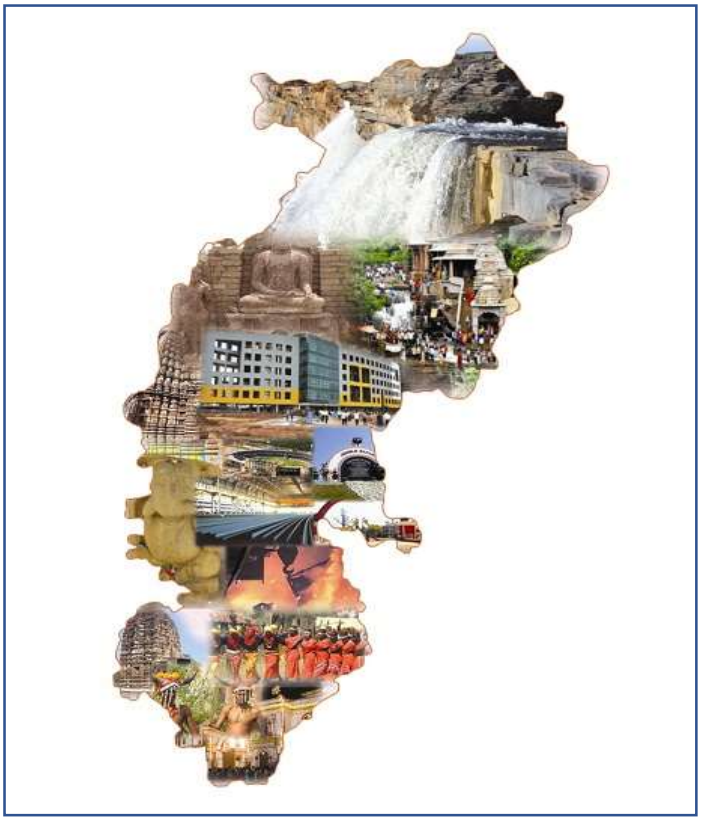

आओ घूमें हम,
आज हमारा छत्तीसगढ़.
यह तो है,
आदिवासियों का घर.
आओ घूमें हम,
आज हमारा छत्तीसगढ़..

छत्तीसगढ़ की छटा निराली,
सुंदर - सुहावनी इसकी हरियाली.
छत्तीसगढ़ में अनेकों जंगल,
इसलिए यहां है मंगल.
आओ घूमें हम,
आज हमारा छत्तीसगढ़..

यहाँ बहती बहुत सी नदियाँ,
जो हैं इस राज्य की गंगा यमुना.
यहाँ की राज्य पक्षी भी बढ़िया,
जिसका नाम है पहाड़ी मैना.
आओ घूमें हम,
आज हमारा छत्तीसगढ़..

यहाँ वाल्मीकि की है कुटिया न्यारी,
और सबरी का आश्रम प्यारा.
यहाँ महानदी की है बहती धारा,
जिसको पूजे छत्तीसगढ़ सारा.
आओ घूमें हम,
आज हमारा छत्तीसगढ़..

आओ बच्चों जाने हम,
राजकीय पशु का नाम.
नाम है उसका वन भैंसा,
हट्टा-कट्टा हाथी जैसा.
आओ घूमें हम,
आज हमारा छत्तीसगढ़..

आओ बच्चों जाने हम,
राजकीय वृक्ष का नाम.
नाम है उसका वृक्ष साल,
जो है बहुत बड़ा विकराल.
आओ घूमें हम,
आज हमारा छत्तीसगढ़..

माँ तुम्हारे बिना.....

रचनाकार- कृष्ण कुमार ध्रुव

अब रहा नहीं जाता तुम्हारे बिना.
मुझे कभी कोई शिकवा नहीं तुम्हारी बातों से.
मालुम नहीं था, मुझे इतनी जल्दी छोड़ चली जाओगी.
सूख गई हैं, तुम्हारी ये मांसपेशियाँ.
शायद आराम करने की तुम्हें फुर्सत नहीं.
तुम्हारे चेहरे की वो मुस्कान और चमक.
लगता है कहीं खो सी गई है.
बिना कहे तुम सब दर्द समझ जाती हो.
हिम्मत कमजोर हो गई है, अब तुम्हारे बिना.
यकीन नहीं था, इतनी जल्दी दूर हो जाते हैं एक दिन.
तुम्हारी वो ममता भरे आँचल की छांव.
जो अब सपने में भी नसीब नहीं.
अपनी हथेलियाँ, हमारे सिर पे जब फेरती थी.
जहाँ के सारे गम भूल जाते थे.
करुणा और अनुराग की खान हो तुम.
कितना साधारण और सच्चा इंसान हो तुम.
नहीं जाना था, तुम्हारा जाना इतना बुरा होता है.

शायद दुनिया में इससे बुरा कुछ भी नहीं होता.
तुमसे इस दुनिया ने सीखा, बहुत ज्ञान.
सब रास्ते तुमने दिखलाए, तुम हो इतनी महान.
कभी सोचा नहीं था, इतना सुंदर घर बसाकर.
एक दिन दूसरी दुनिया की देहरी पर चली जाओगी.
माँ तुम्हारे बिना.....

गणित का खेल

रचनाकार - शुभम पांडेय

दो - दो मिलकर चार हुए,
चार - चार हुए आठ.
जब जोड़ा आठ - आठ को
हो गए सोलह साथ.

जोड़ हमें मिलना सिखलाता,
मिलकर बड़ा हो जाना.
और घटाना सिखलाता है,
कमियों को हटाना.

नित -नित तुम बढ़ते जाना,
गुणा गुणों का करके.
और बांटना अपनी खुशियां,
भाग दुखों का ले के.

गणित नहीं है जाना केवल,
संख्याओं का खेल.
मीठे पानी का झरना है,
सौ खुशियों का मेल.

चलो पूछते हैं

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत, दरभंगा

चलो पूछते हैं बागों से,
क्यों उदास है वन का माली.

चलो पूछते हैं पेड़ों से,
क्यों उदास है उसकी डाली.

चलो पूछते हैं जंगल से,
क्यों उदास है यह हरियाली.

चलो पूछते हैं फूलों से,
क्यों उदास है उसकी लाली.

चलो पूछते हैं कोयल से,
क्यों उदास है तू री काली.

<u>किट्टू की समझदारी</u>

लेखक - अर्चित श्रीवास्तव, कक्षा छटवीं, रिसाली, भिलाई

एक समय की बात है,एक गाँव में एक किसान रहता था. किसान के पास दो बकरे थे. एक बकरे का नाम किट्टू था और दूसरे का नाम दीपू था. किट्टू था तो बहुत समझदार पर उसकी उम्र ज्यादा हो गयी थी और वह अब थोड़ा कमजोर भी हो गया था इसीलिए दीपू अपने दोस्तों के साथ मिलकर किट्टू का मजाक उड़ाया करता "अरे देखो यह किट्टू तो बूढ़ा हो गया है. यह हमसे तेज नहीं दौड़ सकता है हा हा हा हा !" दीपू के दोस्त भी किट्टू का मज़ाक उड़ाने में दीपू का साथ देते थे. दीपू इसी तरह रोज किट्टू को चिढ़ाया करता था और किट्टू के साथ न रहकर अपने दोस्तों के साथ हीं ज्यादातर समय बिताता था.

दीपू भी बहुत डर गया और सहायता के लिए जोर जोर से चिल्लाने लगा. "बचाओ बचाओ" की आवाज जब किट्टू ने सुनी तब उसे लगा कि यह तो दीपू की आवाज है. किट्टू ने समझदारी से काम लिया और सावधानी से आवाज़ की तरफ़ गया छिप कर देखने पर किट्टू की समझ में सारा मामला आ गया.

अब किट्टू ने सोचा कि वह अकेला तो दीपू को शिकारियों से नहीं बचा सकता इसलिए मदद के लिए किट्टू गाँव की ओर जाने लगा पर उसे लग रहा था कि जब तक वह गाँव जाकर वापस आएगा तब तक कहीं बहुत देर न हो जाए. तभी उसे जंगल में एक हाथी दिखाई दिया. उसने सोचा, कि क्यों ना हाथी को मदद के लिए बुलाया जाए? किट्टू जल्दी से दौड़कर हाथी के पास गया, हाथी को सारी बात बताई और उस से सहायता मांगी. हाथी मदद करने को तैयार हो गया. किट्टू, हाथी को उस जगह पर ले गया जहाँ शिकारियों ने दीपू को पकड़कर

रखा था. हाथी जोर से चिंघाड़ता हुआ शिकारियों की तरफ दौड़ा शिकारी हाथी को गुस्से में अपनी ओर आता देखकर घबराकर भाग गये. हाथी और किट्टू की मदद से दीपू को शिकारियों से बचने का मौका मिल गया. किट्टू और दीपू ने हाथी को मदद के लिए धन्यवाद दिया.

अब दीपू की समझ में आ गया कि भले ही किट्टू कमजोर हो गया है पर किट्टू की समझदारी के कारण ही आज उसकी जान बची है. फिर दीपू ने किट्टू से माफी मांगी और दोनों मित्रों की तरह रहने लगे.

वृक्षारोपण

रचनाकार - चन्द्रहास सेन

सुख का जीवन जीना है तो, गलत काम से डरना सीखो.
बरस पड़ेंगे काले बादल, वृक्षारोपण करना सीखो.

वृक्ष ही जल है और, जल ही सबका जीवन.
जीवन अमूल्य है साथी, करो न वायु प्रदूषण.

सूरज चाँद नहीं बदले, और बदला नहीं गगन.
बदला केवल मानव मन, उजड़ रहा है चमन.

देख कर्म इंसानों के, वृक्ष भी कैसे जल रहे.
उनके कृत्य पर रोते - रोते, पत्ते भी रंग बदल रहे.

न रुका प्रदूषण तो, धरा विषैली हो जाएगी.
और बेचारी मानवता, बन अपंग रह जाएगी.

चलो सभी बढ़ाए कदम, हरियाली की ओर.
बाहें फैला कर देख रही, धरती चारों ओर.

एक वृक्ष काटने से पहले, हम दस वृक्ष लगा दें.
फूलों की मीठी खुशबू से,सबका घर महका दें.

गाँव गली हर शहर में अब, पेड़ों की कतार हो.
धरती के हर मानव को, वृक्षारोपण से प्यार हो.

बहने लगे बयार बसंती, नदियों में जल की धार हो.
बिछ जाए हरियाली जग में, धरती का उद्धार हो.

वे गरीब मजदूर

रचनाकार -कुमारी स्वाति आदित्य, कक्षा दसवीं

होकर मजबूर.
घर से अपने दूर..
आजीविका की आस में.
बच्चे भी लेकर साथ में..
गोद में नन्ही- सी जान.
न रहने को कोई मकान..

थी मन में भी कोई सोच.
और सर पे लिए बोझ..
अनजान-सा एक शहर.
और कोरोना का कहर..

जब हुआ लॉकडाऊन.
था बंद सारा टाऊन..
नहीं मिला कोई काम.
न गठरी में था दाम..

बढ़े जब राशन के रेट.
तब कैसे भरते वे पेट..
वह भरी दोपहर.
थे भटकते दर-बदर..
नसीब में न था छाँव.
और जलते थे पाँव..

न थी मोटर न गाड़ी.
ऊपर से अनपढ़- अनाड़ी..
पर लेकर मन में सम्बल.
यूँ ही चल पड़े पैदल..
थककर हो गए चूर.
वे गरीब मजदूर..
वे गरीब मजदूर..

मेरे पापा हीरो हैं

रचनाकार- डॉ, प्रदीप कुमार निर्णेजक

मेरे पापा हैं हवलदार,
वो बहुत हैं वफादार.
कर्तव्य पथ पर डटें हुए हैं,
घर परिवार से कटे हुए हैं.
घर कब आएँगे पता नहीं,
उनकी कोई ख़ता नहीं.
घर का खाना खा पाते नहीं,
क्योंकि वे घर आ पाते नहीं.
जिनकी रक्षा को जाते हैं,
पत्थर ही उनसे खाते हैं.
चौक- चैराहों पर खड़े मिलेंगे,
ड्यूटी में ही वे अड़े मिलेंगे.

कोरोना अभिशाप में वरदान

लेखक - रजनी शर्मा बस्तरिया

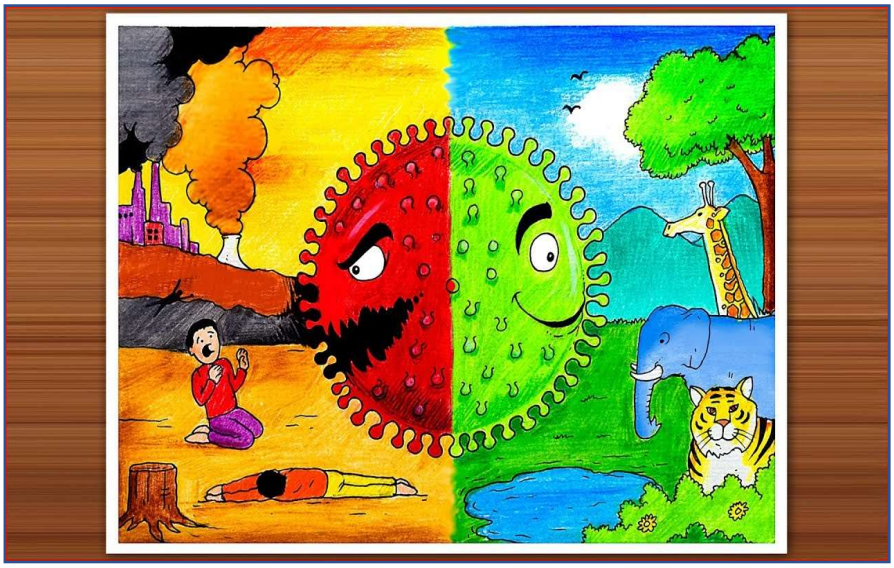

जिसका जैसा दृष्टिकोण होता हैं वैसे ही परिणाम की प्राप्ति होती है. कोरोनाकाल अभिशाप कम वरदान ज्यादा सिद्ध हुआ है. सर्वप्रथम समूचे राष्ट्र के संदर्भ में कहा जाये तो इससे उपजे तनाव ने पूरे भारत को एक सूत्र में बांध कर इसके निवारण का संकल्प दोहरा दिया है. राज्य अपनी पहचान अपने उपलब्ध संसाधनों के एवज में कोरोनाकाल में अर्जित कर पाए हैं. इसी प्रकार शहर, गांव भी. अब बात की जाए घर की. प्रत्येक घर की अपनी अपनी मूल्यों की विरासत जो कहीं खो सी गई थी. जैसे किफायत, सहयोग, स्वालंबन, सहभागिता आदि आदि. सबसे बड़ी बात सबने अपने अपने हिस्से का पर्याप्त सुकून सबने लिया. प्रकृति ने, हवा ने,धूप ने, बारिश ने. इन सब ने कोरोनाकाल में मानव जाति द्वारा अपने प्रति किये गये उपकार का प्रतिदान दे ही दिया. साफ़ हवा, खिली-खिली धूप, चहकते पंक्षी, प्रदूषण रहित आसमान,ध्वनि प्रदूषण रहित शांत मन. क्या यह वरदान नही है.

शारीरिक से ज्यादा मानसिक स्वास्थ्य के लिए कोरोनाकाल वरदान सिद्ध हुआ है.

" मोको कहां ढूंढ़े रे बंधु मै तो तेरे पास रे "

जागो, प्यारे बच्चो

रचनाकार- शशि पाठक

जागो प्यारे बच्चो देखो,
नया सवेरा आया है.
सूरज का नया प्रकाश,
संदेशा कितने लाया है.

सुबह-सवेरे जल्दी उठकर,
माता- पिता को करो प्रणाम.
करके फिर स्नान और भोजन,
तुम विद्यालय करो प्रस्थान.

पढ़-लिखकर तुम बनो महान,
राष्ट्रहित का सदा रखो ध्यान.
परोपकार हो धर्म तुम्हारा,
ऐसे बनो तुम संस्कारवान.

कितना भी हो घना अँधेरा,
उजालों से डर जाता है.
अथक परिश्रम करने वाला,
मंजिल तक जा पाता है.

नौनिहाल हो भारतवर्ष के,
अपनी क्षमता पहचान लो.
सभ्य समाज है तुम्हें बनाना,
यह बात गाँठ तुम बाँध लो.

मर्यादा का ध्यान रखो तुम,
कभी न करो गलत काम.
मंजिल जब तक न मिल जाए,
तुम नहीं करना कहीं विश्राम.

गाल फुला कर बैठी है

रचनाकार- श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल', भिण्ड, म०प्र०

बहन हमारी गुड़िया है,
वह जादू की पुड़िया है.

हमसे तो वह छोटी है,
लेकिन दिखती खोटी है.

खुशियों की वह पिटारी है,
प्यारी बहन हमारी है.

हमसे ऐसी रूठी है,
गाल फुलाकर बैठी है.

भालू वाला

रचनाकार- डॉ.त्रिलोकी सिंह, प्रयागराज

भालू वाला भालू लेकर,
आया नाच दिखाने.
बीच गाँव में आकर अपना,
डमरू लगा बजाने..
डम-डम-डम आवाज सुनी तो,
बच्चे दौड़े आए.
भीड़ लगी तो उस भालू ने,
करतब खूब दिखाए..
इसी बीच में पता नहीं क्यों,
वह भालू गुस्साया.
भालू वाला था नौसिखिया,
कुछ भी समझ न पाया..

गुस्से में भालू ने उसके,
सिर पर डंडा मारा.
मूर्च्छित होकर धरती पर वह,
लुढ़क गया बेचारा..

हालत पतली हुई सभी की,
उस भालू से डर कर.
सारे बच्चे घर को भागे,
अपनी जान बचाकर..

नटखट नन्ही

1. टीचर: बच्चो, हम ऑक्सीजन के बिना जिंदा नहीं रह सकते.
   ऑक्सीजन की खोज प्रीस्टले ने सन् 1774 में की थी.
   नन्ही: तो फिर मैम उसके पहले लोग कैसे जिंदा रहते थे?

2. टीचर: नन्ही,तुम्हें शाकाहार के फायदे पता हैं ?
   नन्ही: मैम,शाकाहार से आँखें कमजोर नहीं होतीं.
   टीचर: पर तुम यह कैसे कह सकती हो?
   नन्ही: मैम,मैंने आज तक किसी भी गाय या बकरी को चश्मा लगाए नहीं देखा है.

3. टीचर: नन्ही, किसी लंबी सी चीज का नाम बताओ.
   नन्ही: रबर
   टीचर: अच्छा, पर कैसे?
   नन्ही: रबर को खींचकर आप जितना चाहें लंबा कर सकती हैं.

4. नन्ही: दादी, मम्मी कहती हैं कि मेरे सारे दाँत टूट जाएँगे. क्या सच में?
   दादी: हाँ नन्ही,तुम्हारे दूध के दाँत टूट जाएँगे और नये दाँत आ जाएँगे.
   नन्ही: अच्छा,तो मैं अपने दाँत आपको लाकर दूँगी,उन्हें आप लगा लेना.

5. नन्ही: पापा,मेरे लिए बाँसुरी खरीद दीजिए.
   पापा: नहीं नन्ही, तुम बाँसुरी बजाकर सबको परेशान करोगी.
   नन्ही: नहीं पापा, मैं बाँसुरी तभी बजाऊँगी जब आप सभी सो रहे होंगे.

6. नन्ही: दादी देखो,यह बिल्ली बातें करती है, यह अपना नाम भी बता सकती है.
   दादी: अरे वाह! यह तो होशियार बिल्ली है. क्या नाम है इसका?
   नन्ही: इसका नाम है,म्याऊँ.

7. पापा: नन्ही,क्या तुमने अखबार वाले का बिल देखा है?
   नन्ही: नहीं पापा, पर क्या अखबार वाला बिल में रहता है?
   मैं तो सोचती थी कि बिल में सिर्फ चूहे रहते हैं.

8. नन्ही: दादी,मैंने एक चीज़ ढूँढ़ी है जिससे हम दीवार की दूसरी ओर देख सकते हैं.
   दादी: अरे वाह नन्ही! कहाँ है वह चीज? हमें भी दिखाओ.
   नन्ही: यह रही, खिड़की.

9. नन्ही: मैम,क्या आप मुझे उस काम के लिए सजा देंगी
   जो मैंने नहीं किया?
   टीचर: नहीं नन्ही, पर तुम ऐसा क्यों सोच रही हो?
   नन्ही: मैंने आज होमवर्क नहीं किया है न, इसलिए.

बिल्ली को झुकाम

रचनाकार- विजय लक्ष्मी राव

बिल्ली बोली म्याऊं_म्याऊं,

मुझको हुआ जुकाम.
अब मैं हो गई बेकाम..

चूहे दादा गोली दे दो,
जल्दी हो जाए आराम.

चूहा बोला बतलाता हूँ,
दवा एक बेजोड़.

अब आगे से चूहे को,
खाना दो तुम छोड़..

मोटर आती

रचनाकार -मनोज कुमार आदित्य

पों-पों करती मोटर आती,
धूल उड़ाती मोटर आती.
तेज दौड़ती खूब सड़क पर,
जरा न थकती चलती दिनभर.
ले सामान वह दौड़ लगाती,
दूर गाँव भी झट पहुँचाती.

पों-पों करती मोटर आती,
धूल उड़ाती मोटर आती.
वर्षा हो या धूप हो चाहे,
आगे-आगे कदम बढ़ाएँ
जाने कितना काम है करती,
थककर भी आराम न करती.
पों-पों करती मोटर आती,
धूल उड़ाती मोटर आती.

हम चाँद पर चढ़ेंगे

रचनाकार - देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

पढ़ेंगे लिखेंगे चाँद पर चढ़ेंगे,
सच राह पर हम आगे बढ़ेंगे.
बड़ों, शिक्षक की सीख मान,
भारत का नाम रोशन करेंगे..

जेब खर्च के पैसे बचा कर,
हम इक चंद्र यान बनाएँगे.
मम्मी पापा दीदी संग बैठ,
हम चाँद पर घूमने जाएँगे..

बिस्किट, टॉफी व चॉकलेट,
चंद्रयान में साथ ले जाएँगे.
भूख लगेगी जब भी मुझको,
ख़ूब मौज मस्ती कर खाएँगे..

चंद्रयान पर घूम कर हम सब,
वापस अपने घर जब आएँगे.
अगले दिन हम स्कूल में जाके,
दोस्तों को सब बात बताएँगे..

मैं स्कूल से जब घर आई,
अपने मन की यह बात बताई.
बोले, पढ़ने से सब संभव बेटा,
पढ़ने लिखने में बहुत भलाई.

मेरी डॉल

रचनाकार - देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

मेरे पास इक सुंदर डॉल,
प्रतिदिन उसे सजाती हूँ.
सुबह मैं ब्रश जब करती,
डॉल को ब्रश कराती हूँ..

मैं जाकर के रोज नहाती,
डॉल को मैं नहलाती हूँ.
सुंदर सा मैं कपड़े पहनूँ,
डॉल को फ्रॉक पहनाती हूँ..

सुबह शाम मैं पढ़ने बैठूँ,
डॉल को भी पढ़ाती हूँ.
पढ़ने से अच्छा बन जाएँ
ये बात उसे सिखाती हूँ..

पापा कहते पढ़ लिख के,
नेक कार्य कर सकती हूँ.
अच्छी आदत अपना कर,
जीवन में बढ़ सकती हूँ..

गुलेल

रचनाकार - महेन्द्र कुमार वर्मा

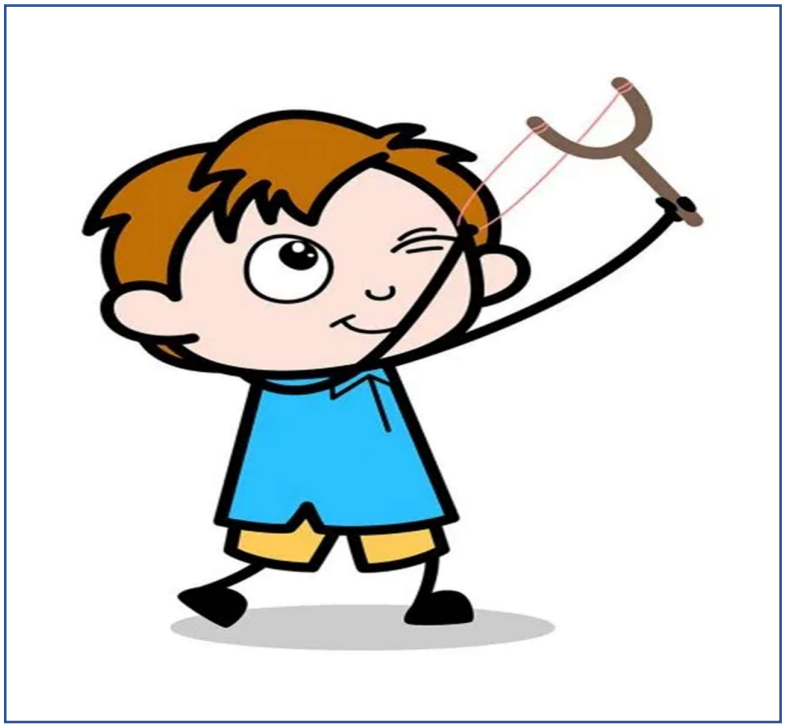

दिन भर दाना चुगकर तथा बगिया में फुदक- फुदक कर जब थक गई मीनू चिड़िया तो वापिस बरगद के पेड़ पर आई, जहाँ उसका घोंसला था. उसने देखा, उसका घोंसला टूटा हुआ जमीन पर पड़ा था.तभी नीतू कबूतर ने उसे बताया कि एक शरारती बच्चे ने गुलेल से निशाना लगाकर उसका घोंसला तोड़ दिया. यह सुनकर मीनू चिड़िया को बहुत गुस्सा आया. नीतू ने उससे कहा- "चलो गुस्सा छोड़ो और आज मेरे घोंसले में आराम कर लो. कल हम सब मिलकर तुम्हारा एक सुन्दर-सा घोंसला बना देंगें. अगले दिन बरगद के रहवासी चिड़ियों ने मिलकर मीनू चिड़िया का एक सुन्दर- सा घोंसला बना दिया. मगर मीनू जब भी शरारती बच्चे को देखती, उसे गुस्सा आ जाता.

सुनील ही वह शरारती बच्चा था, वह स्कूल में भी खूब शरारत किया करता था. उसके पास एक गुलेल थी, जो उसे जान से भी प्यारी थी. उसी गुलेल से वह कभी फल तोड़ता कभी चिड़ियों पर निशाना साधता. अक्सर वह स्कूल से बंक मार के उसी बरगद के नीचे बैठकर दिन भर आराम करता और शाम होते ही घर वापिस जाता. माँ समझती बेटा स्कूल से पढ़कर घर आ रहा है.

एक दिन उसने नीतू कबूतर पर निशाना साधकर गुलेल चलाया. मगर नीतू बच गई और घने पत्तों के बीच छुप गई. सभी चिड़ियों को बहुत गुस्सा आया. उन्होंने सोचा इसे तो अब मजा चखाना चाहिये. अगले दिन जैसे ही सुनील दिखा, सभी चिड़ियों ने एक साथ उस पर हमला बोल दिया. अचानक हमले से सुनील घबरा गया, और भाग निकला.

फिर कई दिनों तक सुनील बरगद से दूर ही रहा. जब तीन चार दिन गुजर गए तो सुनील ने सोचा अब मामला ठण्डा हो गया है, अब बरगद के पास चलना चाहिये. सुनील जब बरगद के पास पहुँचा तो देखा वहाँ अथाह शांति थी. वह आराम से बरगद के नीचे बैठ गया. चिड़ियों ने जब उसे देखा तो उन्हें लगा सुनील सुधर गया है, तो उन्होंने फिर सुनील पर हमला नही किया.

थोड़ी देर बाद अचानक नीतू कबूतर ने देखा भयानक से दिखने वाले दो आदमी आए और सुनील को पकड़ कर ले जाने लगे. वे आपस में कह रहे थे-"इसके हाथ पैर तोड़कर इससे भीख मंगवाएँगे, तो बहुत पैसा मिलेगा."

नीतू ने सभी चिड़ियों को बुलाकर बताया कि दो आदमी सुनील को पकड़कर ले जा रहे हैं. हमें उसे बचाना चाहिये. रानी चिड़िया ने कहा-"मगर हम उसे कैसे बचा सकेंगे. नीतू ने सभी को अपनी योजना बताई. सभी ने हामी भरी. फिर नीतू ने जब कहा- "हमला"- तो सभी चिड़ियाँ दोनो आदमियों पर टूट पड़ीं. अचानक हमले से वे दोनों घबरा कर भाग निकले. सुनील ने जब देखा चिड़ियों ने उसकी जान बचाई तो उसके आँसूं बह निकले.

अगले दिन सुनील बरगद के पास आया, तब उसने फिर से गुलेल निकाली. गुलेल देख के सभी चिड़िया छुप गईं. सुनील ने सूखे पत्ते इकटठे किये और उसमें आग लगा दी. पत्ते धू -धू करके जलने लगे, फिर उसने अपनी प्यारी गुलेल को आग में डाल दिया. गुलेल जल गई. फिर उसने जेब से एक पैकेट निकाला और ढेर सारा दाना चिड़ियों के लिये धरती पर बिखेर दिया.सभी चिड़िया चीं- चीं कर दाना चुगते हुए उसका अभिवादन करने लगी. अब वे दोस्त थे.

नन्हे-मुन्ने बच्चे हैं हम

रचनाकार - तेजेश साहू

नन्हे-मुन्ने बच्चे हैं हम
पर थोड़े कच्चे हैं हम
गलती थोड़ी हो जाती
पर मन से सच्चे हैं हम,
नन्हे-मुन्ने बच्चे हैं हम.

कभी झगड़ते लड़ते हैं हम
लेकिन प्रीत करते हैं हम
कभी-कभी इठलाते है हम
मम्मी को सताते हैं हम
नन्हे-मुन्ने बच्चे हैं हम.

कभी रूठ जाते हैं हम
कभी प्यार जताते हैं हम
गड़बड़ गीत सुनाते हैं हम
और कभी छुप जाते हैं हम
नन्हे मुन्ने बच्चे हैं हम.

कोरोना योद्धाओं को सलाम

रचनाकार- लुकेश्वर सिंह

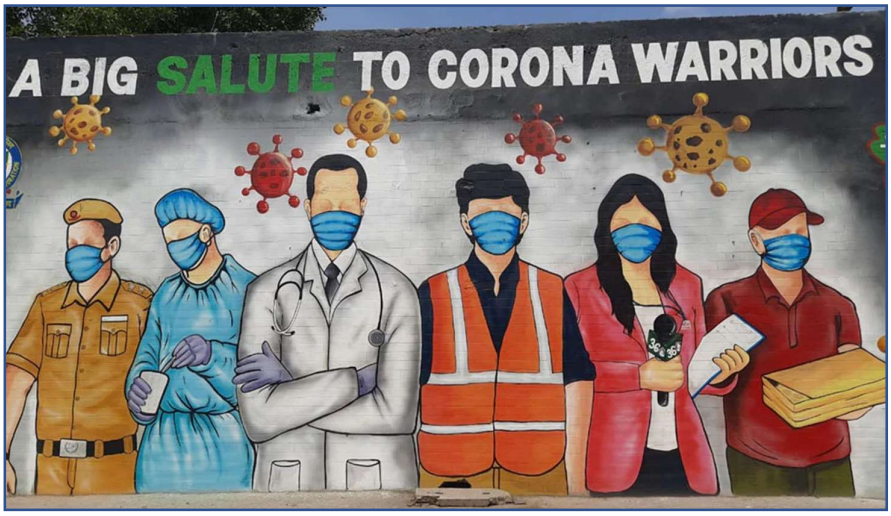

हर घर दीप जलाना है,
रख हौसला बढ़ते जाना है.
डटें रहें हम, अड़े रहें हम,
मिलकर कोरोना को हराना है.

लॉक-डाउन का पालन कर,
घर में ही समय बिताना है.
सब बंद है,क्यों बाहर जाना,
दूर से ही रिश्ता हमें निभाना है.

घर पर कुछ दिन ठहर जा मानव,
यह समय न फिर आना है.
धीर बनें हम वीर बनें हम,
भारत से कोरोना को भगाना है.

करें दृढ़ संकल्प यह मन में,
भारत माँ का कर्ज चुकाना है.
जान बचाने जान दिए जो उनको,
सम्मान दिलाना है..

उन कर्म वीरों के इस कर्ज को,
हमको नहीं भुलाना है.
सच्चे नायक का सही अर्थ सुनकर,
वीरों ने बतलाया है..

खुद की परवाह करना छोड़,
इंसानियत का फर्ज निभाया है.
इस ऋण से कैसे उऋण हो पाएंगे,
हम सबका दिल ही भर आया है..

आनंद का राज - तीक्ष्ण बुद्धि, कड़ी मेहनत और लगन

रचनाकार- हेमन्त खुटे

विश्वनाथन आनंद का नाम आज किसी परिचय का मोहताज नहीं. दरअसल विश्वनाथन का असली नाम आनंद वी. है. हुआ यूँ कि एक बार विदेश रवाना होते वक्त उन्होंने देखा कि पासपोर्ट पर उनका नाम आनंद वी. के वी. को आनंद से पहले जोड़कर वी. आनंद लिख दिया गया था. समयाभाव के के कारण सुधरवाना संभव नहीं था और आनंद वी. से वी. आनंद यानी विश्वनाथन (उनके पिता का नाम) आनंद बन गए.

आनंद का जन्म 11 दिसंबर 1969 को चेन्नई में हुआ. उन्होंने पहली सांस शतरंजी माहौल में ली. उनके मामा क्लब स्तर के अच्छे खिलाड़ी थे. माता सुशीला विश्वनाथन भी शतरंज में विशेष रुचि रखती थीं और अपने इसी शौक को उन्होंने आनंद में उतार दिया.

मद्रास (चेन्नई) के मिखाइल टाल क्लब में आनंद ने पहली प्रतियोगिता खेली. इस समय उनकी उम्र 6 वर्ष की थी. वाणिज्य निकाय में स्नातक आनंद स्कूल- कॉलेज में हमेशा अव्वल आते रहे. स्कूल के दिनों में पढ़ाई के बाद के समय आनंद मिखाईल टाल क्लब में ही व्यतीत किया करते थे.

1977 में मद्रास जिला सब जूनियर प्रतियोगिता में आनंद के विशिष्ट प्रदर्शन से प्रभावित होकर आयोजकों ने उन्हें सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया. सन् 1978 में वे परिवार के साथ फिलीपींस गए और वहीं अपनी पढ़ाई के साथ अपने खेल को भरपूर निखारा.

फिलीपींस रेडियो द्वारा प्रसारित शतरंज की जटिल पहेलियों की अनेक प्रतियोगिताएं आनंद ने जीती. अंततः आयोजकों को आनंद से निवेदन करना पड़ा कि वे प्रतियोगिता में हिस्सा ना ले ताकि अन्य प्रतियोगियों को भी जीत का अवसर मिल सके. इसी तरह फिलीपींस टेलीविजन के चेस टुडे कार्यक्रम में आनंद को विजयी ट्रॉफी देने से सात बार रोका गया क्योंकि एक व्यक्ति को 3 से अधिक बार ट्राफी देना नियम के विरुद्ध था. फिलीपींस में रहते हुए आनंद इंटर स्कूल की शतरंज में स्पर्धाओं में छाए रहे. तदनंतर स्वदेश लौटकर मद्रास के डॉन बॉस्को स्कूल में पढ़ते हुए 1982 में पहली बार तमिलनाडु स्टेट जूनियर चैंपियनशिप जीती. सन् 1983 में नेशनल जूनियर चैंपियनशिप तथा सन् 1984 में नेशनल सब जूनियर एवं नेशनल जूनियर चैंपियनशिप जीतकर आनंद सीनियर वर्ग मे चौथे स्थान पर रहे. इसी वर्ष आनंद ने एशियाई जूनियर चैंपियनशिप (कोयंबटूर)और लायड्स बैंक मास्टर जूनियर ट्राफी (लंदन)जीतकर इंटरनेशनल मास्टर (आई. एम)का पहला नार्म प्राप्त किया. बाद में 26 वें शतरंज ओलंपियाड में भारत में सर्वाधिक अंक बनाते हुए दूसरा नार्म प्राप्त किया. 15 वर्ष की अल्पायु में ग्रैंड मास्टर जोनाथन मेस्टल को पराजित कर आनंद ने सबको चकित कर दिया. 1983- 84 में उन्होंने नेशनल जूनियर चैंपियनशिप में 9 -9 अंक लेकर नया कीर्तिमान बनाया

1984-85 में लगातार दो बार एशियाई जूनियर चैंपियनशिप जीतकर महज 15 साल की उम्र में वे इंटरनेशनल मास्टर (आई. एम) बन गए. सबसे कम उम्र में यह खिताब पाने वाले वे पहले एशियाई थे. 1987 में आनंद पहले भारतीय ग्रैंडमास्टर बने. आनंद का विजय क्रम जारी रहा. अलेखाइन मेमोरियल टूर्नामेंट मास्को (1992) जीतकर आनंद विश्व के नंबर एक खिलाड़ी गैरी कासपरोव से आगे रहे और 2700 की रेटिंग प्राप्त की. ऐसा करके वे विश्व के उन 8 लोगों में शामिल हो गए जिन्हें यह सम्मान हासिल था. 1995 में उन्होंने अमेरिका के गाटा कामस्की को हराकर रूस के धुरंधर गैरी कास्पारोव से भिड़ंत के लिए क्वालीफाई किया. सन् 1997 में एक साथ 6 कंप्यूटरों के साथ खेलते हुए आनंद ने उन्हें 4-2 से हराया. इसी वर्ष फ्रैंकफर्ट में हुए चेस क्लासिक रेटिंग टूर्नामेंट में दो राउंड पूरे होने से पहले ही प्रतियोगिता जीत ली. इस स्पर्धा में उन्होंने कास्पारोव को अंतिम दौर में पराजित किया. आनंद ने शतरंज की दुनिया में उस वक्त कदम रखा जब इस खेल पर रूस का एकाधिकार था. इस एकाधिकार को आनंद ने चुनौती दी और जल्द ही वर्ल्ड चैंपियन जीतकर विश्व विजेता बने.

आनंद के खेल की मुख्य विशेषता तेज तर्रार और हाजिर जवाब चाले हैं. उन्हें खेलते हुए देखना काफी रोमांचक होता है. तेज गति से उनका गहरा रिश्ता रहा है. शायद यही वजह है कि 1987 में आनंद ने 5 महीनों के अंदर ही ग्रैंड मास्टर के तीनों नार्म पूरे कर लिए थे. अपनी तीक्ष्ण बुद्धि, कड़ी मेहनत और लगन के बल पर आनंद ने साल दर साल नई-नई उपलब्धियां प्राप्त की और नए-नए कीर्तिमान बनाते हुए सन 2000, 2007, 2008, 2010 व 2012 में 5वीं बार विश्व विजेता बनने का गौरव हासिल किया.

आई रे गर्मी आई

रचनाकार- कृष्ण कुमार ध्रुव

आई रे गर्मी आई,
मन भर के छुट्टी लाई.
आओ छोटू, आओ मोटू खेलें,
गर्मी छुट्टी का खूब मजा ले लें.

अब पानी हमको ज्यादा पीना,
चाहे जितना आये पसीना.
खेलेंगे और मजा करेंगे,
लड़ेंगे पर एक साथ रहेंगे.

रोयेंगे, हसेंगे, कभी चुप रहेंगे,
साथ बीता पल सदा याद करेंगे.
मिट्टी गूथेंगे, खूब खिलौने बनाएंगे,
इससे फिर अपना घरौंदा सजायेंगे.

हमें नहीं चाहिए महंगी मोटर गाड़ी,
खिलौनों में मिलती हमें खुशियां सारी.
छुट्टी में हम नानी घर जाएंगे,
बर्फी, खोवा, पेड़ा, मिठाई खाएंगे.

नाना- नानी प्यार करेंगे,
कांधे में बाजार घुमाएंगे.
गर्मी छुट्टी बीत जाएगा,
बीता हुआ पल बहुत याद आएगा!

सपना करे साकार, पढ़ई तुँहर दुआर

रचनाकार- मंजूषा साहू

कोरोना महामारी के संकट में,
फँसा है सारा संसार.

शिक्षा का दीप जलाता,
पढ़ई तुँहर दुआर.

लॉकडाउन के ऐसे समय में,
घर-घर शिक्षा उपलब्ध कराएँगे.

मोबाइल फोन में ही अब हम,
बच्चों को पढ़ना सिखाएँगे.

सपना करे साकार,
पढ़ई तुँहर दुआर,

सीजी स्कूल डॉट इन में,
पंजीयन कराएँगे.

अपना शिक्षक हम,
अपने ही घर में पाएँगे.

पढ़ाई-लिखाई, असाइनमेंट होमवर्क,
घर पर ही आ जाएँगे.

पोर्टल में अपलोड कर,
इसकी जाँच कराएँगे.

कोरोना महामारी के संकट में,
फँसा है सारा संसार.

शिक्षा का दीप जलाता,
पढ़ई तुँहर दुआर, पढ़ई तुंहर दुआर.

छत्तीसगढ़ सरकार की है,
अनोखी यह योजना.

राज्य में शिक्षा को है,
सँवारना और सहेजना.

अनुभवी शिक्षाविदों से,
होगी रोज मुलाकात.

पाठ्यक्रम और परीक्षा पद्धति पर,
करेंगे उनसे बात.

सपना करे साकार,
पढ़ई तुँहर दुआर, पढ़ई तुँहर दुआर.

ऑडियो, वीडियो, पीडीएफ, इमेज,
ऑनलाइन क्लास है इन सबमें विशेष.

गाँव-गाँव,नगर -नगर में है,
आज इसकी चर्चा.

त्रासदी में भी बढ़ाया संबल,
और लहराया है परचम.

सपना करे साकार,
पढ़ई तुँहर दुआर, पढ़ई तुँहर दुआर.

लॉकडाउन में व्यर्थ न,
अपना समय गवाँएगे.

वर्चुअल स्कूल और क्लास से,
ज्ञान का प्रकाश फैलाएँगे.

पहली कक्षा से महाविद्यालय,
तक की होगी पढ़ाई.

इस नई उपलब्धि पर,
छत्तीसगढ़ के शिक्षाविदों को.
बहुत-बहुत बहुत बहुत बधाई.

जहाँ चाह - वहाँ राह

रचनाकार - यशवंत कुमार चौधरी

एक गाँव की बात है, जहाँ की जनसंख्या लगभग 1500 है. इस गाँव में राधिका नाम की एक महिला भी निवासरत थी. उसके पति बहुत सीधे -सरल पर दोनों के बच्चे बहुत नटखट थे. घर में उसके साथ सास- ससुर भी थे, जो शांतप्रिय एवं राधिका को बेटी की तरह रखते थे. राधिका अपने मायके में सातवीं कक्षा तक की पढाई की थी. उसके बाद उसकी पढाई- लिखाई लम्बी अवधि तक घरेलू परिस्थिति के कारण बंद रही. पर उसके दिल में पढ़ने का जूनुन सवार था. उसकी शादी के बाद वह सोचने लगी, कि मुझे अब पढाई करना चाहिए. मैं जीवन में कुछ करना चाहती हूँ. अब परिस्थितियाँ मेरे पढ़ने -लिखने के अनुकूल हो चुकी हैं. इसका लाभ लेना चाहिए. उसने गाँव में एक अच्छे शिक्षक जो सबकी खुब मदद करते थे. उनसे मदद लेने की ठानी और उन्हें घर पर बुलाया और सलाह लिया और आगे पढने में आने वाली कागजात की समस्या को दूर करने सहायता मांगी. शिक्षक ने भरपूर मदद करने का आश्वासन दिया, पूरा परिवार गदगद हो उठा. शिक्षक ने आगे पढ़ने की तरकीब सहजता से बताई. पर समस्या अब भी कम ना था. लोक -लज्जा लोगों का ताना झेलना जो था. शिक्षक ने राधिका को गाँव के स्कूल में शिक्षादूत के रूप में बच्चों को नि:शुल्क पढ़ाने की जिम्मेदारी सौंप दिया जिससे उसकी पकड़ पढ़ाईई -लिखाई में मजबूत हो और उसका ज्ञान बढ़े. उसने लगातार घर के कामकाज करके अकेले पैदल स्कूल जाती, जो उसके घर से लगभग एक कि.मी. की दूरी पर था. वापसी

उसके स्कूली बच्चों के संग -संग हो जाती. बच्चों के दिलों में राज करने लगी. अब धीरे -धीरे वह सीखने लगी. उसका आत्मविश्वास बढ़ने लगा. कदम- कदम पर शिक्षक ने उसकी हौसला अफ़जाई किया, जिसका नतीजा यह हुआ कि अवसरों का पिटारा खुलना प्रारम्भ हुआ और वह साक्षर भारत कार्यक्रम के तहत आठवीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली और उसके बाद ओपन स्कूल के माध्यम से दसवीं और बारहवीं की परीक्षा अपने अथक प्रयास एवं शिक्षक के उचित निर्देशन में अच्छे से पास कर लिया. अब उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा, पर अब भी चुनौतियाँ कम न थीं. उसके पास जाति प्रमाण-पत्र, निवास प्रमाण- पत्र, रोजगार पंजीयन जैसे मूलभूत दस्तावेजों से अब भी वह बहुत दूर थी. शिक्षक ने क्रमश: उसके इन सभी प्रमाण पत्र बनवाने में काफी मदद की और उसे यह दस्तावेज भी प्राप्त हो गया. अब उस गाँव में एक प्रेरक का पद रिक्त था जिसके लिए जनपद पंचायत से आवेदन आमंत्रित हुआ. राधिका ने भी आवेदन जमा किया और उसका चयन प्रेरक के रूप में हो गया. अब वह गाँव में सेवा देने लगी और उसको मानदेय भी मिलने लगा. उसके इस प्रयास एवं सफलता को देख गाँव वालों ने दांतों तले ऊंगली दबा ली. हैरत में थे, कि आखिरकार राधिका ने शिक्षक के उचित मार्गदर्शन में आगे बढ़ते हुए निश्चित रूप से सफलता प्राप्त कर ही लिया. राधिका अब इस गाँव एवं आस-पास के लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है और आज एक सफल शिक्षित महिला है, जिसका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हो रहा है. उसने महिला स्वसहायता समूह की टीम बना लिया है.

सीख - जीवन में सफल होने के लिए धैर्यता के साथ कड़ी मेहनत -लगन के साथ कार्य करने एवं एक अच्छे मार्गदर्शक की ज़रुरत होती है. जहाँ चाह -वहाँ राह, बुलंद हौसले के आगे मुश्किलें आखिर घुटने टेक ही देती हैं. अच्छे कार्य का परिणाम सदा अच्छा ही होता है.

हक़ है

रचनाकार- यशवंत कुमार चौधरी

जीने दो उसे कि,
जीना उसका भी हक़ है.
यूँ न कुचलो उसे कि,
बोलना उसका भी हक़ है.
सदियाँ गुजर गईं उसे,
तपती रेत पर चलते हुए,
खुशियों की जमीं पर,
रहना उसका भी हक़ है.
काँधे पर बोझ ढोता रहा,
घर हमारा बनाने को.
सिर छुपा सके, ऐसी छत पर,
अब उसका भी हक़ है.
आँसुओं से बोझिल होती,
रही आँखें उसकी,
मुस्कराने दो कि,
मुस्कराने का उसका भी हक़ है.
दो रोटियों के ख़ातिर
जागता रहा वह उम्र भर,
सपनों वाली नींद पर,
अब उसका भी हक़ है....

आओ बरखा रानी आओ

रचनाकार- निमिषा कुर्रे

आओ बरखा रानी आओ,
वसुधा की तुम प्यास बुझाओ.

नाद छेड़कर बादलों में दंगल करो,
इठलाकर प्राणियों का मंगल करो.

बूँदो की रिमझिम झड़ी लगा दो,
मधुमय सावन की लड़ी लगा दो.

सतरंगी मुझे इंद्रधनुष दिखा दो,
मेंढक,झिंगुर की आवाज सुना दो.

आगमन से कूकेंगी कोयल बागों में,
जुगनू पकड़ के रखूँगा चिरागों में.

आँख मिचोली खेलूँगा मैं पानी में,
वर्णन तुम्हारा करूँगा कहानी में.

आओ बरखा रानी आओ,
वसुधा की तुम प्यास बुझाओ.

बेटी जब दुनिया में आई

रचनाकार - जितेंद्र सिन्हा

बेटी जब दुनिया में आई,
मैं थोड़ा शरमाया सकुचाया था
कुछ कहानी कुछ किस्सो ने,
मुझे रुलाया था.
बेटी ने जब हाथ थामा,
कोमल पैरों से जब आंगन महकाया
माँ से ज्यादा मुझ पर
जब उसने हक जताया था.
तब एक बात समझ आया,
बेटी बरकत का नाम है
बेटी चहकती चिड़िया का नाम है
बेटी महकती कली का नाम है.
बेटी जन्नत का पैगाम है और
मेरी परछाई का ही नाम है
बेटी कुछ हल्के रंगों से सजी
उस नायाब चित्रकारी का नाम है.
फिर मैंने ठाना
क्यों न अधूरी रंगों को भर दूँ
क्यों न उसके भी सपनो को पूरा कर दूँ

क्यों न मकसद जीने का उसे दूँ.
क्यों न उनके जीवन को
खुशियो से भर दूं
आज मैं सीना तानकर कहता हूं
कि बेटी हमारी शिखर तक जायेगी.
कुछ टूटे मेरे ख़्वाब को सजायेगी
दायरा न होगा चारदीवारी का
दुनिया में अपनी पहचान बनायेगी
मेरे बेटी कुछ कपूतों के सिर झुकायेगी.

सुनहरा बचपन

रचनाकार- रुपेश कुमार श्रीवास्तव "रजत", देवरिया

कितने अच्छे थे वो दिन,
गलियों में घूमते थे सारा दिन.
पकड़म-पकड़ाई, लुका-छिपी,
कटते थे न एक भी दिन, इनके बिन.
जाने कहाँ गए वो दिन.

बिन चप्पल के घूमा करते
जब पूरा-पूरा दिन.
एक बीती हुई बनकर यादें
रह गए वो प्यारे दिन.
जाने कहाँ गए वो दिन.

अब तो बारिश में भी,
कागज की नाव उदास है.
बीते पूरा दिन घर पर
मानो उदासी में अवकाश है.
जाने कहाँ गए वो दिन.

उन सुनहरी यादों के रूप में,
कटता अब हर एक दिन.
कितना भी भुलाना चाहें,
ना भूल पाएँ वो बीते दिन.
जाने कहाँ गए वो दिन.

"रजत" चाहे, हो कोई चमत्कार,
और वापस आ जाए वो दिन.
अफसोस! समय के पहिये को,
थामना है नामुमकिन.
जाने कहाँ गए वो दिन.

<u>प्लास्टिक बैग नहीं चलेगा</u>

लेखक - शशि पाठक

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नवाचारी शिक्षा के साथ- साथ छात्रों के सर्वांगीण विकास पर भी पुरजोर पहल किया जा रहा है. इसके लिए स्काउट गाइड, इको क्लब, युथ क्लब, रेडक्रॉस, खेल, योगा, व्यायाम, स्वच्छता, प्रतियोगिताओं का आयोजन इत्यादि कई ऐसे क्रियाकलाप हैं, जो न सिर्फ बच्चों के शैक्षिक, अपितु सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के विकास में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. इसी क्रम में जिला सूरजपुर के विकासखण्ड प्रतापपुर में प्लास्टिक वेस्ट मटेरियल की स्वच्छता हेतु चलाये गई एक मुहिम छात्र आधारित होने के कारण एक कीर्तिमान स्थापित कर रही है.

आजाक कन्या उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय,प्रतापपुर की व्याख्याता श्रीमती शशि पाठक ने बसंत ऋतु पश्चात प्लास्टिक वेस्ट मटेरियल के एकत्रीकरण की एक मुहिम शुरू की. इस मुहिम का मुख्य उद्देश्य था- "छात्रों के माध्यम से ग्रामीण अंचलों में भी प्लास्टिक कचरे के दुष्परिणामों की जन जागरूकता आना"

मुहिम की विशेषताएँ -

1. **पुरस्कार की व्यवस्था** -इस मुहिम के तहत प्रत्येक सप्ताह में सर्वाधिक प्लास्टिक एकत्र करने वालों को प्रोत्साहन हेतु पुरस्कृत किया जाता है.

2. **गाँव- गाँव तक लहर** - चूँकि छात्राएं अलग अलग गाँवों से आती हैं, अतः उनके माध्यम से जन जागरूकता फैलाई जा रही है. साथ ही उनके द्वारा भी इन कार्यों में सहयोग मिल रहा है.
3. **कचरे का सही निपटारा**- एकत्र किए गए प्लास्टिक कचरों को एस एल आर एम सेंटर नगर पंचायत प्रतापपुर में उचित प्रबंधन हेतु दिया जाता है.
4. **सभी स्कूलों का सहयोग** -इस मुहिम में नगर के स्थित सभी विद्यालयों का सहयोग मिल रहा है और उनके बच्चों को भी पुरस्कृत किया जा रहा है.
5. **प्लास्टिक एकत्रित करना**- छात्रों या अन्य स्रोतों से प्राप्त प्लास्टिक कचरे को एकत्र किया जाता है और अधिक मात्रा में एकत्रित हो जाने पर उचित निपटारे हेतु दिया जाता है.

मुहिम की उपलब्धियाँ: -

1. **जानवरों का बचाव**-इस मुहिम के तहत हर गाँव से भी प्लास्टिक कचरा इकट्ठा कराया जा रहा है, जिससे हमारे मवेशी सबसे ज्यादा सुरक्षित हैं. गर्मियों में मवेशी चारे के अभाव में प्लास्टिक कचरा खा जाते हैं. जिससे कितने मवेशियों की मौत हो चुकी है.अब जब ज्यादा से ज्यादा कचरा एकत्र कर लिया गया है तो जानवरों द्वारा प्लास्टिक खाने के खतरों को कम किया जा सका है.
2. **छात्राओं में स्वच्छता के प्रति रुझान**- इस मुहिम से जुड़कर छात्रओं में स्वच्छता के प्रति विशेष रुचि आयी है और वे इस कार्य में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रहीं हैं.
3. **जिम्मेदारी का अहसाह** -छात्राओं में प्लास्टिक कचरा इकट्ठा करने की होड़ ने उन्हें अधिक जिम्मेदार बना दिया है. अब वो केवल पुरस्कार के लिए ही नही, अपितु बेजुबान जानवरों और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए भी दृढ़ संकल्पित हैं और लॉकडाउन के दौरान भी अपने घर के कचरा प्रबंधन में लगे हैं.
4. **पर्यावरण स्वच्छता** -इस मुहिम से प्लास्टिक कचरों से होने वाले प्रदूषण से कुछ हद तक निजात पाया जा सका. प्लास्टिक कचरा नदियों, नालियों, को जाम और धरती की उर्वरा क्षमता को कम करने जैसी विषम परिस्थितियों का कारण बनती है. इन समस्याओं पर भी निजात पाया जा सकेगा.
5. **दो बार दिया गया कचरा**- अभी तक एस एल आर एम सेंटर में दो बार प्लास्टिक कचरा उचित निपटारे हेतु दिया जा चुका है.

एक अपील: - आप सभी शिक्षकों औऱ छात्र / छात्राओं से विनम्र निवेदन है सभी अपने अपने स्तर पर इस मुहिम में अपना योगदान दें और स्वच्छ भारत के गठन की महत्वपूर्ण कड़ी बने.

बादर ह बदरावत हे

रचनाकार - महेन्द्र देवांगन माटी

बरसा के दिन आगे संगी, बादर ह बदरावत हे.
सुरूर सुरूर हवा चलत हे, पेड़ सबो लहरावत हे..

पुचुक पुचुक मेचका कूदे, पानी में टररावत हे.
उल्हा उल्हा पाना देखके, कोयली गाना गावत हे..

गडगड गडगड बादर गरजे, बछरू ह मेछरावत हे.
बरसा के दिन आगे संगी, बादर ह बदरावत हे..

नाँगर धर के सोनू कका, खेत डाहर जावत हे.
गाडा बइला फाँद के सरवन, खातू माटी लावत हे..

बड़े बिहनिया ललित भैया, खातू ल बगरावत हे.
बरसा के दिन आगे संगी, बादर ह बदरावत हे..

टपटप टपटप पानी गिरे, रेला घलो बोहावत हे.
कूद कूद के लइका नाचे, ओरछा में नहावत हे..

चिखला माटी में खेलत हावय, दाई ह खिसयावत हे
बरसा के दिन आगे संगी, बादर ह बदरावत हे..

चिड़िया

रचनाकार- प्रिया चतुर्वेदी

आकाश की लालिमा को देख,
उठ जाती जो चूँ-चूँ करके
वह है मेरी चिड़िया रानी.

छोटे छोटे तिनके बटोरकर,
जो बनाती है अपना घोंसला,
वह है मेरी चिड़िया रानी.

पेड़ों की शाखाओं पर जो,
करती है अपना गुजारा,
वह है मेरी चिड़िया रानी.

एक-एक दाना चुनकर जो,
ले जाती है अपने बच्चों तक,
वह है मेरी चिड़िया रानी.

जघन्य कृत

रचनाकार- अविनाश तिवारी

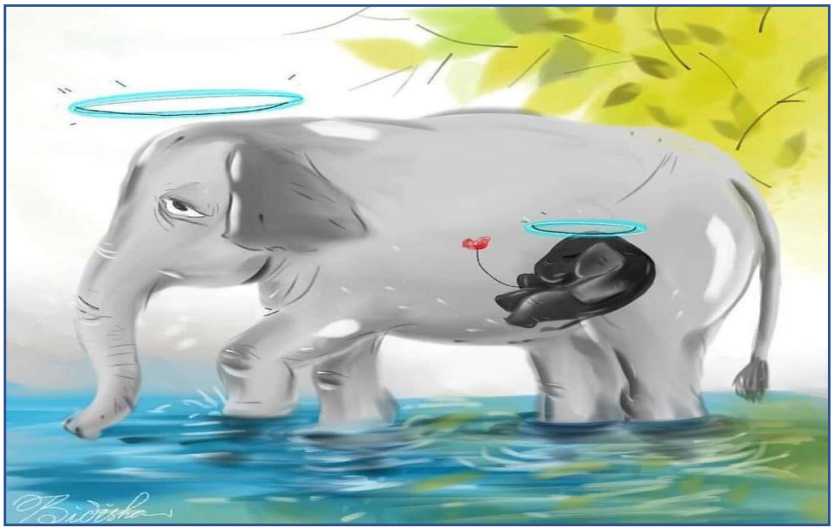

वह भी एक माँ थी
भूख से व्याकुल,
अन्तस्थ शिशु की चिंता
से थी वो आतुर.

मानवता हुई शर्मसार,
विस्फोटक मुँह में डाल दिया.
निरीह मूक प्राणी को क्यों,
जान से ही मार दिया.

कलंक लगा इंसनियित पर,
नव पीढ़ी बच पाएँगी.
प्रकृति के न्याय से,
कुकृत्य हैवानियत टकराएँगीं.

अंत हुआ इस कु कृत्य से भरोसे का,
जो निरीह प्राणी ने हम पर किया.
हे विधाता न्याय करना,
कृत्य जघन्य जो ये हुआ.

विश्व पेपर बैग दिवस (12 जुलाई)

रचनाकार- चानी ऐरी

क्या आपको पता है कि प्रतिवर्ष 12 जुलाई को विश्व पेपर बैग दिवस मनाया जाता है? आइए इस दिवस और पेपर बैग के बारे में कुछ और जानते हैं. हम सभी को यह बात पता है कि प्लास्टिक के बढ़ते उपयोग से हमारी पृथ्वी के पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है. प्लास्टिक के स्थान पर पेपर बैग का उपयोग करना पृथ्वी के पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. क्योंकि पेपर बैग बायोडिग्रेडेबल और इको फ्रेंडली हैं. उपयोग के पश्चात पेपर बैग आसानी से बिना पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए विघटित हो जाते हैं जबकि प्लास्टिक सैकड़ों वर्षों तक विघटित नहीं होता और पृथ्वी को रासायनिक रूप से नुकसान पहुँचाता है. पेपर बैग का पुन: चक्रण भी आसानी से संभव है.

प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगने के बाद आज सभी जगह कागज के बने बैग का चलन फिर से शुरु हुआ है. इनके उपयोग से काफी हद तक प्रदूषण को भी रोका जा सकता है.

आइए, आपको पेपर बैग के इतिहास के बारे में बताते हैं. 1852 में एक अमेरिकी आविष्कारक फ्रांसिस वोले ने पेपर बैग बनाने की पहली मशीन की स्थापना की थी. इनके बाद 1871 में, मार्गरेट ई नाइट ने एक और मशीन डिजाइन की, जो फ्लैट-बॉटम पेपर बैग का उत्पादन कर सकती थी. वह मशीन बहुत प्रसिद्ध हुई और "किराना बैग की माँ" (The mother of grocery bag) के रूप में जानी जाने लगी. 1883 में, चार्ल्स स्टिलवेल ने एक और ऐसी मशीन का आविष्कार किया, जो वर्ग-तल वाले कागज के थैलों का उत्पादन कर सकती थी, ऐसे बैग में घिरे हुए किनारों को मोड़ना और संग्रहीत करना आसान होता है. 1912 में, वाल्टर डबनेर ने

कागज के थैलों को सुदृढ़ करने और ले जाने वाले हैंडल को जोड़ने के लिए कॉर्ड का उपयोग किया. बाद के वर्षों में कई और आविष्कारकों ने पेपर बैग के उत्पादन की तकनीक में सुधार किया.

पेपर बैग का उपयोग करने से पर्यावरण को अनेक लाभ होते हैं. सबसे पहला लाभ यह है कि पेपर बैग इको फ्रेंडली हैं, ये पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं. यह बायोडिग्रेडेबल होते है अर्थात आसानी से नष्ट हो जाते हैं और विषाक्त पदार्थों का उत्सर्जन नहीं करते हैं.पेपर बैग साधारण से लेकर सुंदर रंगीन और प्रिंटेड भी हो सकते हैं..पेपर बैग अक्षय संसाधनों से बने हैं, इसलिए इनका आसानी से दोबारा उपयोग किया जा सकता है. फलों सब्जियों की खरीददारी, गिफ्ट बैग के रुप में, आर्ट एंड क्राफ्ट के रूप में, पेपर बैग को घर पर ही खाद के रुप में कंपोजर में कंपोस्ट किया जा सकता है. तो देखा आपने, पेपर बैग कितना महत्वपूर्ण और उपयोगी है. हम स्वयं प्लास्टिक बैग के स्थान पर पेपर बैग का उपयोग करने का संकल्प लेकर और अपने घर, शाला, बाजार में भी प्लास्टिक के इस्तेमाल को बंद करने का संदेश देकर पृथ्वी के पर्यावरण की रक्षा करने में अपना योगदान दे सकते है

प्यारे बच्चे

रचनाकार- सुजीत कुमार मौर्य

प्यारे बच्चे, न्यारे बच्चे,
हम सबके दुलारे बच्चे.
खेलो-कूदो, पढ़ो-लिखो तुम,
आदत सीखो अच्छे-अच्छे..

माता-पिता का कहना मानो,
उनको ही तुम ईश्वर जानो.
लक्ष्य हमेशा ऊँचा रखना,
बातें बताते तुमको सच्चे..

उनकी सेवा हरदम करना,
जीवन में तुम आगे बढ़ना.
जब उनका आशीष मिलेगा,
काम बनेंगे हँसते-हँसते..

वर्षा की रात

रचनाकार- निमिषा कुर्रे

रात का आँचल सरक रहा था,
दिल का अंबर महक रहा था.
बादलों से इठलाकर वर्षा आई,
संग प्रीत का अमर संदेशा लाई.

बूँदो कि सरगोशी से होती,
दिल में राहत कि बौछारें.
ढह गयी खंडहर प्यार की,
और जज़्बातों कि मीनारें.
मन के प्रांगण में बजती शहनाई

हो प्रसन्न मोर नाचे वन में,
कोयल कूक-कूक मुस्काई.
उमड़-घुमड़ घनघोर घटा,
मिलने भू से संग जब आयी.
बहती हैं चारों ओर मौसम कि पुरवाई

भरकर तिजोरी बूँदो से,
मिलने समंदर से बेचैन हैं नदियाँ.
खिली तबस्सुम बागों में,
और खिल उठी हैं कलियाँ.
प्रेमियों कि हो गयी अब दूर तन्हा

पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन

लेखक- रीता गिरि

"प्रकृति का ना करें हरण, आओ बचाएँ पर्यावरण"

मानवीय जीवन के आरंभ से ही मनुष्य एवं पर्यावरण का अटूट सम्बन्ध रहा है. मनुष्य का जीवन प्रकृति पर निर्भर करता है अतः उसके अस्तित्व के लिए प्राकृतिक परिवेश अनिवार्य है. जिस दिन पर्यावरण का अस्तित्व मिट गया उस दिन मानव जाति का अस्तित्व भी मिट जाएगा, यह आधारभूत सत्य है.

भारतीय संस्कृति में प्रकृति "पृथ्वी" को माँ कहा गया है. "माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्या" अर्थात् पृथ्वी हमारी माँ है और हम पृथ्वी के पुत्र हैं. चूंकि पृथ्वी माता रुप में संपूर्ण ब्रह्मांड के जीवों का पालन-पोषण करती है अतः इसका संरक्षण करना हमारा नैतिक कर्तव्य है.

पर्यावरण हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है. पर्यावरण की रक्षा करने में लापरवाही बरतने का अर्थ है अपना विनाश करना. हम अपने दैनिक जीवन में पर्यावरणीय संसाधनों का उपयोग करते हैं.

मानव की सभी क्रियाओं का पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है. अतः पर्यावरण को बचाने के लिए जागरूकता, सजगता तथा अपने दायित्वों का पूर्ण ईमानदारी से हर व्यक्ति को निर्वाहन करना होगा.

पर्यावरण का अर्थ - पर्यावरण शब्द संस्कृत भाषा के'परि'उपसर्ग (चारों ओर) और आवरण से मिलकर बना है. जिसका अर्थ है- ऐसी चीजों का समुच्चय जो किसी व्यक्ति या जीवधारी को चारों ओर से आवृत्त किये हुए है.

पर्यावरण को अंग्रेजी में Environment कहते हैं जिसका अर्थ है हमारे चारों ओर का आवरण जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है.

पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा परितंत्रिय आबादी को प्रभावित करते हैं तथा उनके रुप, जीवन और जीविता को तय करते हैं.

पर्यावरण संरक्षण - पर्यावरण संरक्षण का अर्थ है हमारे पर्यावरण को सुरक्षित रखना यानि की पर्यावरण की सुरक्षा. पर्यावरण सुरक्षा से तात्पर्य है- अपने चारों ओर के आवरण को सुरक्षा प्रदान करना तथा उसे अनुकूल बनाए रखना.

पर्यावरण संरक्षण न केवल मानव के लिए बल्कि अन्य जीवित प्राणियों के लिए भी बहुत ही आवश्यक है क्योंकि यदि पर्यावरण सुरक्षित नहीं रहेगा तो पृथ्वी पर भी जीवन की संभावना कम हो जायेगी. इसीलिए हमें अपने पर्यावरण के संरक्षण के लिए ऐसे कदम उठाने चाहिए जिससे हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहे.

पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य -

- पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए आकाश, वायु, मृदा और जल सभी तत्वों का संरक्षण करना.
- पर्यावरण को स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाए रखना.
- वृक्षारोपण करना.
- वक्षों की कटाई का विरोध करना.
- वृक्ष काटने वालों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करवाना.
- वृक्षों की सेवा करने के लिए उनकी सुरक्षा का इंतजाम करना.
- पानी सींचने की व्यवस्था जन सहयोग से करवाना.
- विद्यार्थी वर्ग को पर्यावरण संरक्षण के लिए शिक्षण संस्थानों के माध्यम से संकल्प दिलाना, उक्त विषयों पर प्रतियोगिता आयोजित कराना.
- पर्यावरण संरक्षण के लिए जन जागरूकता अभियान चलाना.
- पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा देने वाले ऐतिहासिक तथ्यों को उजागर करना.
- पर्यावरण संरक्षण से संबंधित सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार में सहयोग करना.

भारतीय संविधान व पर्यावरण संरक्षण- भारत प्राचीन काल से ही पर्यावरण संरक्षण को लेकर सदैव सजग रहा है, इसी कारण उसने संवैधानिक स्तर पर भी पर्यावरण संरक्षण की तरफ ध्यान दिया.

हमारे देश में पर्यावरण के अनुकूल एक समृद्ध संस्कृति भी रही है. यही कारण है कि देश में हर स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के प्रति ध्यान दिया गया और हमारे संविधान निर्माताओं ने इसका ध्यान रखते हुए संविधान में पर्यावरण की जगह सुनिश्चित की. पर्यावरण को संवैधानिक स्तर पर मान्यता देते हुए इसे सरकार और नागरिकों के संवैधानिक दायित्व से जोड़ा गया.

आज के दौर में मानव विकास की दौड़ में इतना आगे बढ़ गया है कि उसे अपने पर्यावरण की ओर देखने का समय नहीं है. वह यह भूलता जा रहा है कि उसे पृथ्वी पर रहना है. विश्व में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह बच्चा हो या वृद्ध अपने पर्यावरण के प्रति सजगता, जागरूकता, चेतना और पर्यावरण अनुकूल को विकसित करने की आवश्यकता है और तभी इस गंभीर समस्या का समाधान किया जा सकता है.

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम- पर्यावरण की सुरक्षा एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए संसद द्वारा 23 मई 1986 को पर्यावरण संरक्षण अधिनियम पारित किया गया था. और 19 नवंबर 1986 को लागू किया गया था. इस अधिनियम के तहत कुछ महत्वपूर्ण बिंदु निम्नानुसार है:-

- पर्यावरण की गुणवत्ता के संरक्षण हेतु सभी आवश्यक कदम उठाना.
- पर्यावरण प्रदूषण के निवारण, नियंत्रण और उपशमन हेतु राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम की योजना बनाना एवं उसे कियान्वित करना.
- पर्यावरण की गुणवत्ता के मानक निर्धारित करना.
- पर्यावरण सुरक्षा से संबंधित अधिनियमों के अंतर्गत राज्य-सरकारो, अधिकारियों और संबंधितों के काम में समन्वय स्थापित करना.
- ऐसे क्षेत्रों का परिसीमन करना, जहाँ किसी भी उद्योग की स्थापना अथवा औद्योगिक गतिविधियाँ संचालित न की जा सके.

पर्यावरण संरक्षण का महत्व - पर्यावरण संरक्षण का समस्त प्राणियों के जीवन तथा इस धरती के समस्त प्राकृतिक परिवेश से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है. प्रदूषण के कारण सारी पृथ्वी दूषित हो रही है और निकट भविष्य में मानव सभ्यता का अंत दिखाई दे रहा है. इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए सन् 1992 में ब्राजील में विश्व के 174 देशों का 'पृथ्वी सम्मेलन' आयोजित किया गया. इसके पश्चात् सन् 2002 में जोहान्सबर्ग में पृथ्वी सम्मेलन आयोजित कर विश्व के सभी देशों को पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देने के लिए अनेक उपाय सुझाए गए. वस्तुत: पर्यावरण के संरक्षण से ही धरती पर जीवन का संरक्षण हो सकता है.

पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता - प्राचीन काल में मनुष्य अपने चारों ओर की सुंदर प्रकृति को सहेज कर रखता था. मनुष्य का जीवन बहुत सीधा-साधा और सरल था. धीरे-धीरे समय बदला और मनुष्य ने अपने जीवन में नये-नये आविष्कारों से न जाने कितनी उपलब्धियाँ हासिल कर ली. इन सब उपलब्धियों के साथ जाने-अनजाने वह प्रकृति के साथ छेड़छाड़ भी करते गया और हमारी प्रकृति को नुकसान पहुँचा. पर्यावरण संरक्षण को नुकसान पहुँचाने वाले मुख्य प्रकार हैं -

- जल प्रदूषण
- वायु प्रदूषण
- भूमि प्रदूषण
- ध्वनि प्रदूषण
- प्रकाश प्रदूषण
- रेडियोधर्मी प्रदूषण

समय रहते हमें इन प्रदूषण से हमारी पृथ्वी और हमारी जान बचानी है इसलिए इसके संरक्षण का उपाय हर व्यक्ति को करना आवश्यक है.

पर्यावरण संरक्षण में हमारी भूमिका - पर्यावरण संरक्षण एक ऐसा मुद्दा है जिसे अकेले कोई हल नहीं कर सकता. इसके लिए हम सभी कुछ न कुछ योगदान अवश्य ही कर सकते हैं. हम विद्यार्थी हैं, शिक्षक हैं,जन-प्रतिनिधि हैं, किसान हैं, युवा हैं, गृहणी हैं या व्यापारी. हम सबकी पर्यावरण संरक्षण में भूमिका हो सकती है. यदि हम दैनिक जीवन में कुछ छोटी - छोटी बातों का ध्यान रखकर कार्य करें. जैसे ---

- 'यूज एंड थ्रो' की दुनिया को छोड़ पुनः सहेजने वाली सभ्यता को अपनाया जाये.
- अपने भवन में चाहे व्यक्तिगत हो या सरकारी कार्यालय हो, वर्षा जल-संचयन प्रणाली प्रयोग में लाए.
- जैविक खाद अपनाएँ.
- पेड़-पौधे लगाएँ और उसकी देखभाल करें ताकि वह विषैली गैसों को सोखने में मदद कर सके.
- अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखें. सड़क पर कूड़ा ना फेंके.
- नदी, तालाब जैसे जल स्त्रोतों के पास कूड़ा ना डालें. यह कूड़ा नदी में जाकर पानी को गंदा करता है.
- कपड़े के थैले इस्तेमाल करें, पालिथिन व प्लाष्टिक को ना कहें.
- जितना खाएँ उतना ही लें.

- काम न लिए जाने की स्थिति में बिजली से चलने वाले उपकरणों के स्विच बंद रखें तथा ऊर्जा बचायें.
- वायुमंडल में कार्बन की मात्रा कम करने के लिए सौर-ऊर्जा का अधिकाधिक इस्तेमाल करें, सोलर कुकर का इस्तेमाल बढाये तथा स्वच्छ ईंधन का प्रयोग करें.
- पानी का प्रयोग करने के बाद नल को तुरंत बंद कर दें.
- फोन, मोबाइल, लैपटॉप आदि का इस्तेमाल पावर सेविंग मोड पर करें.
- विशिष्ट अवसरों पर एक पौधा अनिवार्यतः उपहार स्वरुप दें. *कूड़ा-करकट, सूखे पत्ते, फसलों के अवशेष और अपशिष्ट न जलायें. इससे पृथ्वी के अंदर रहने वाले जीव मर जाते हैं और वायु प्रदूषण स्तर में वृद्धि होती है.
- तीन आर - रिसाइकिल, रिड्यूस और रियूज का हमेशा ध्यान रखें.

निष्कर्ष - पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण हेतु पूरे विश्व में 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है. पर्यावरण सुरक्षा और उसमें संतुलन हमेशा बना रहे इसके लिए हमें जागरूक और सचेत रहना होगा. प्रत्येक प्रकार के हानिकारक प्रदूषण जैसे- जल, वायु, ध्वनि इन सब खतरनाक प्रदूषण से बचने के लिए अगर हम धीरे-धीरे भी कोई उपाय करें तो हमारी पृथ्वी की सुंदरता जो कि पर्यावरण है उसे बचा सकते हैं और अपने जीवन को भी स्वस्थ और स्वच्छ रुप में प्राप्त कर सकते हैं.

पर्यावरण है तो हमारा जीवन है.

"पर्यावरण को शुद्ध बनाना होगा,
प्रदूषण मुक्त विश्व बनाना होगा. "

तितली रानी

रचनाकार- प्रिया चतुर्वेदी

ओ प्यारी-सुंदर तितली रानी,
तुम लगती कितनी प्यारी हो.

जी बहलाना, मन मचलाना,
तितली रानी तुम करती हो.

ओ प्यारी- सुंदर तितली रानी,
तुम लगती कितनी प्यारी हो.

पास क्यों नहीं आती हो तुम,
दूर हमसे क्यों तुम रहती हो.

ओ प्यारी -सुंदर तितली रानी,
तुम लगती कितनी प्यारी हो.

चूसकर फूलों के रस को तुम,
रँग लेती हो अपने पंखों को.

ओ प्यारी- सुंदर तितली रानी,
तुम लगती कितनी प्यारी हो.

कोरोना से करुणा

रचनाकार - गोवर्धन सिंह

हर बच्चा-बूढा आज देश में आज कोरोना विषय का पंडित है,
विविधता वाला देश कोरोना के बाद भी अखंडित है..
अजनबी भी दूसरों की मदद कर रहे हैं,
संक्रमण के संकट में गैर भी अपने हो रहे है..
कल युग के बच्चे, सत युग के रामायण-महाभारत देख रहे हैं,
कोरोना से करुणा का भाव बढ़ा रहे है..
गंगा मईया भी अपने पुराने स्वरूप में लौट आई.
विलुप्त पशु- पक्षी को देख रौनक लौट आई..
भूल गए जीभ का स्वाद, तला-भूना होटल वाला कचरा,
आहार में आँवला, एलोवेरा गिलोय, मक्का और बाजरा..
हमें स्वयं कोरोना वायरस से लड़ना पड़ेगा.
हमें सैकड़ों साल पुरानी जीवन शैली अपनाना पड़ेगा..

सीखें हम जीवन का सार

रचनाकार- प्रतिभा सिंह, साल्टलेक

प्यारे बच्चो! प्रकृति जगत से,
सीखें हम जीवन का सार.
वृक्षों से मिलते मीठे फल,
तरुवर हमको छाया देते.
अपनी शीतल मंद वायु से,
तन का रोग-शोक हर लेते.
हम भी तरुवर-सदृश सभी का,
करते ही जाएं उपकार.
पंछी, नदियां, पर्वत सारे,
मिलकर रहना ही सिखलाते.
जाति-धर्म का भेद मिटाकर,
सबसे प्रेम-भाव दिखलाते.
निर्मल स्वच्छ प्रकृति-सा मन हो,
सबको हो जन-जन से प्यार.
सूरज-चांद-सितारे देखो,
अंधकार जग का हरते हैं.
प्रतिदिन ही प्रकाश फैलाकर,
जग को आलोकित करते हैं.
प्रिय बच्चो! परहित में जीना,
कभी न जाता है बेकार.

शिक्षा जीवन की बुनियाद है, शिक्षा उन्नति का सार है

रचनाकार - हेमन्त खुटे

पिथौरा छत्तीसगढ़ शासन के स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा प्रारंभ किए गए ऑनलाइन कार्यक्रम" पढ़ई तुंहर दुवार" के अंतर्गत शिक्षा गुणवत्ता में वृद्धि करने और शिक्षकों, विद्यार्थियों, पालकों के बीच जागरूकता प्रोत्साहन के लिए नियमित कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं. इसी कड़ी में राज्य स्तर पर 11 जून से 23 जून तक "गुरु तुझे सलाम" अभियान के तहत विस्तृत रूपरेखा तैयार की गई. इस अभियान के तहत शिक्षक, छात्र और पालकों के बीच शैक्षणिक संबंधों के अलावा अन्य क्रियाकलापों एवं उनके अनुभव को साझा करने की कोशिश की गई जिसमें संबंधित शिक्षक द्वारा किए गए अनुकरणीय प्रयास, विद्यार्थियों द्वारा सीखे गए क्रियाकलापों एवं पालकों, अभिभावकों द्वारा उसके लाभप्रद परिणाम को जानने की कोशिश की गई.

प्रथम चरण में 11 जून को ऑनलाइन माध्यम से प्राचार्य, व्याख्याता,प्रधान पाठक, शिक्षक एवं सहायक शिक्षकों ने अपने जीवन के अविस्मरणीय संस्मरण एक दूसरे के साथ साझा किए जिससे उनकी व्यक्तिगत सोच,शिक्षकीय सोच एवं जीवन शैली में होने वाले परिवर्तनों का उल्लेख किया. शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बरेकेल खुर्द के प्रधान पाठक अंतर्यामी प्रधान ने अपने छात्र जीवन के संस्मरण साझा करते हुए कहा कि तत्कालीन तोषगांव स्कूल के प्रधान पाठक कैलाश चंद्र प्रधान मेरे प्रेरणास्रोत रहे हैं. छात्र और गुरु के बीच आत्मीय संबंधों को जिस तरह से उन्होंने विकसित किया वह आज के परिवेश में अनुकरणीय है. शिक्षकीय दायित्व के अलावा उन्होंने प्रतिभा प्रोत्साहन के अंतर्गत न केवल मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान किया बल्कि उन्हें कैरियर मार्गदर्शन देकर उच्च पदों पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया.उसी का

यह सुखद परिणाम है कि अंचल में शासकीय पदों पर कई लोगों ने सेवारत होकर अंचल का नाम रोशन किया है. शासकीय प्राथमिक शाला परसापली के शिक्षक डीगम साहू ने कहा कि छात्र जीवन में पढ़ाई -लिखाई में कमजोर था और मेरी रुचि पढ़ने- लिखने में नहीं थी. मैं अक्सर स्कूल से गायब हो जाता था.रमेश कुमार वर्मा ने मेरी कमजोरी को पकड़ा और उन्होंने मेरा मनोबल बढ़ाया उनके प्रोत्साहन से ही मैंने पढ़ने लिखने का संकल्प लिया. 5वीं की परीक्षा मैनें स्वाध्यायी छात्र के रूप में उत्तीर्ण की. यदि सही समय पर श्री वर्मा का मार्गदर्शन व सहयोग नहीं मिलता तो शायद मैं शिक्षक नही बन पाता. मुझे खुशी है कि मैं आज शिक्षक के रूप में अपने दायित्वों का बखूबी निर्वहन कर रहा हूं.

शासकीय कन्या हायर सेकंडरी स्कूल के प्राचार्य श्री आसाराम बरिहा ने कहा कि शिक्षक ही जीवन का निर्माता होता है.अभावग्रस्त माहौल में मैंने शिक्षा ग्रहण की ग्रामीण परिवेश में रहकर अपना लक्ष्य निर्धारित किया और आज प्राचार्य के दायित्व का निर्वहन कर मुझे खुशी हो रही है.अभावों के बीच जीना और लक्ष्य का निर्धारण करना यही जीवन के संतुलन और सफलता का प्रमुख आधार है. बी आर सी पिथौरा श्री एफ़ ए नंद ने कहा कि शिक्षक का जीवन समर्पणयुक्त होता है. वह हमेशा लोकहित की बात सोचता है और विद्यार्थियों को सदाचार, नैतिकता का पाठ पढ़ाता है. आज की शिक्षा व्यवस्था का दायरा इतना बढ़ चुका है कि शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक एक दूसरे के पूरक बन गए हैं.पाठ्यक्रम के अलावा सहपाठ्यक्रम की गतिविधियां संचालित हो रही है जिससे शैक्षणिक क्रियाकलापों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है. ऑनलाइन कार्यक्रम एक अनुकरणीय पहल है जिसका लाभ सभी को मिलेगा. वर्चुअल क्लास के ब्लॉक मीडिया प्रभारी श्री हेमन्त खुटे ने कहा कि शिक्षा जीवन की बुनियाद है, शिक्षा जीवन की उन्नति का सार है. आज की शिक्षा प्रणाली पूर्णतः आधुनिक हो गई है. इसलिए कई नवाचार करके शिक्षा में गुणवत्ता लाने का प्रयास शिक्षकों द्वारा किया जा रहा है. विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच विकसित करना और उनके मन से नकारात्मक विचारों को मिटाना शिक्षक का सबसे बड़ा दायित्व है. एक शिक्षक का प्रभाव विद्यार्थियों पर अत्यधिक पड़ता है. इसलिए शिक्षक ही विद्यार्थियों के लिए रोल माडल साबित होते हैं.आज शिक्षक और विद्यार्थी के बीच आत्मीय एवं मधुर संबंधों की आवश्यकता है. पढ़ई तुंहर दुवार के अंतर्गत गांव -गांव में जागरूकता आ रही है. अहा मोमेंट के अंतर्गत पिथौरा संकुल के जे. के. महापात्रो, नरेश नायक, अब्दुल सईद खान, हेमलता साहू, नरेंद्र साहू तथा सोनासिल्ली संकुल के हितेश पटेल, लोकनाथ सिन्हा, राधेश्याम पटेल,तबस्सुम,नरेंद्र दीवान, हेमलाल दीवान ने भी अपने विचार साझा किए. अंत में ऑनलाइन कार्यक्रम संयोजक एवं संकुल समन्वयक खगेश्वर डड़सेना ने आमंत्रित शिक्षाविदों प्रति आभार प्रकट किया

मेरा घोड़ा

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

मेरा घोड़ा, सरपट दौड़ा
सरपट-सरपट, सरपट दौड़ा.

भागा - भागा सबसे आगे
सबसे आगे, सबसे आगे.

उससे आगे कोई न आया
उसने सबको धूल चटाया.

करतब उसने गजब दिखाया
उसने मेरा मान बढ़ाया.

वह कौन?

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार

जितनी मुहब्बत करता हूँ, मैं उनसे,
उससे भी अधिक प्यार करती है, वह मुझसे.
मेरे हँसने से उसे सुकून मिलता है.
मेरा आँसू देख ले तो, वह तड़प उठती है.
मेरे लिए वह सब कुछ करती है,
कुछ ना कर सके तो दिन भर दुआ करती है.
मेरी खुशियाँ ही, उनका सपना होती हैं,
जिसके पूरे होने पर,वह बहुत खुश होती है.
जब मेरा जीवन दुश्वार होता है,
सब कुछ वार, जीवन संवार देती है.
जिसने मुझे दिए, जीवन के सारे संस्कार,
चुका ना पाऊंगा, मैं उनके यह उपकार.
उसके रहते, मेरा घर है जन्नत,
वह खुश रहे, यही रब से मांगू मन्नत.
वह मेरी भूल पर, कर देती है क्षमा.
उसके रहने से, मेरे घर में है शमा.
उसके पहले, जग से होऊं रुखसत,

बस यही है मेरी, दिली हसरत.
दम निकले उन्हीं के कदमों तले.
जब भी जन्म लूँ, उन्हीं का दामन मिले.
नहीं उनसे, मुझे कोई शिकवा गिला.
वह हमेशा, मेरा हौसला बढ़ाते मिली.
वह कौन है बतलाता हूँ.
पहेली से पर्दा उठाता हूँ..
उससे ही घर की, आन -बान और शान है.
वह मेरा अभिमान है, वह ही मेरी जान है..
उससे ही मेरी पहचान है.
आप उससे नहीं अन्जान हैं..
वह कोई और नहीं...
वह मेरी माँ है, माँ है, माँ है..

बनवारी सब्जी वाला

रचनाकार - नीरज त्यागी

शहर की पॉश कॉलोनी में बनवारी नाम का एक सब्जी वाला सब्जियाँ बेचने आता था. बनवारी काफी समय से यहाँ पर सब्जियाँ बेचने का काम कर रहा था. उसका परिचय कॉलोनी के सभी लोगों से था. बनवारी जो सब्जियाँ लाता वह काफी अच्छी होतीं और इसलिए उसके रेट भी बाकी सब्जी वालों से ज्यादा ही होते, लेकिन लोगों को उसकी कुछ ऐसी आदत हो गई थी कि लोग इसके अलावा किसी से सब्जी लेना पसंद नहीं करते. धीरे धीरे बनवारी से लोगों का मेलजोल बहुत बढ़ गया. बनवारी की आदत कुछ लोगों से उधार लेने की हो गई. 500 - 1000 ऐसी छोटी-छोटी रकम उसने कई लोगों से उधार ले रखी थी.

फिर अचानक पता नहीं क्या हुआ कि बनवारी ने कॉलोनी में आना जाना बंद कर दिया. जब लगभग 2 सप्ताह हो गए तो लोग परेशान होने लगे. अब उन्हें सब्जी खरीदने के लिए बाजार जाना पड़ता था. बाजार हालाँकि ज्यादा दूर नहीं था लेकिन जाने आने में समय तो लगता ही था. बनवारी के आने से लोगों का समय बच जाता था. अब लोगों को बनवारी की चिंता होने लगी. चिंता के भाव अलग-अलग थे, लोग बनवारी की चिंता इसलिए भी कर रहे थे कि उसने उनसे उधार लिया हुआ था. जिन लोगों ने बनवारी को ₹500 उधार दिया हुआ था, वो 5000 बताने लगे, और जिन्होंने 1000 उधार दिया हुआ था वह 10000 बताने लगे और वे सभी अपने अपने कयास लगाने लगे कि बनवारी शायद इसलिए नहीं आ रहा कि वह लोगों के पैसे

खा गया है और अब वह वापस नहीं आएगा. धीरे-धीरे समय बीतता गया लगभग 6 माह बाद एक दिन बनवारी मिठाई का डब्बा लिए हुए कॉलोनी में आया. सभी को मिठाई खिलाते हुए उसने जिन लोगों से जितने पैसे उधार लिए हुए थे, वो भी लौटाता जा रहा था. वह सभी से अपने न आने की माफी भी माँग रहा था. इन सबके बीच बनवारी सभी को एक खुशखबरी सुना रहा था कि उसका बेटा पढ़ लिख कर एक सरकारी अधिकारी के रूप में नियुक्त हो गया है और लगभग 4 माह से लड़के को उसकी नौकरी वाली जगह पर स्थापित करने में व्यस्त होंने के कारण वह कॉलोनी में सब्जियों बेचने नहीं आ रहा था. अब उसका बेटा कमाने लगा है. लेकिन बनवारी ने तय किया है कि वह सब्जी बेचने का काम बंद नहीं करेगा ताकि लोग परेशान ना हों. आखिर इन्ही लोगो ने बुरे वक्त में उसे उधार देकर उसके लड़के को पढ़ने के लिए सहारा दिया था.

गेंडा

रचनाकार- डॉ.अखिलेश शर्मा, इन्दौर

बहुत बड़ा एक गेंडा था,
दिमाग से थोड़ा बेंडा था..

एक दिन वह निकला घर से,
उलझ गया एक बंदर से..

बंदर ने उसका सिर फोड़ा,
जोर से मारा एक हथौड़ा..

गेंडा बैठा सिर पकड़ कर,
सींग उग गया उसके सर पर..

वह बचपन के बदलते रंग

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार, नई दिल्ली

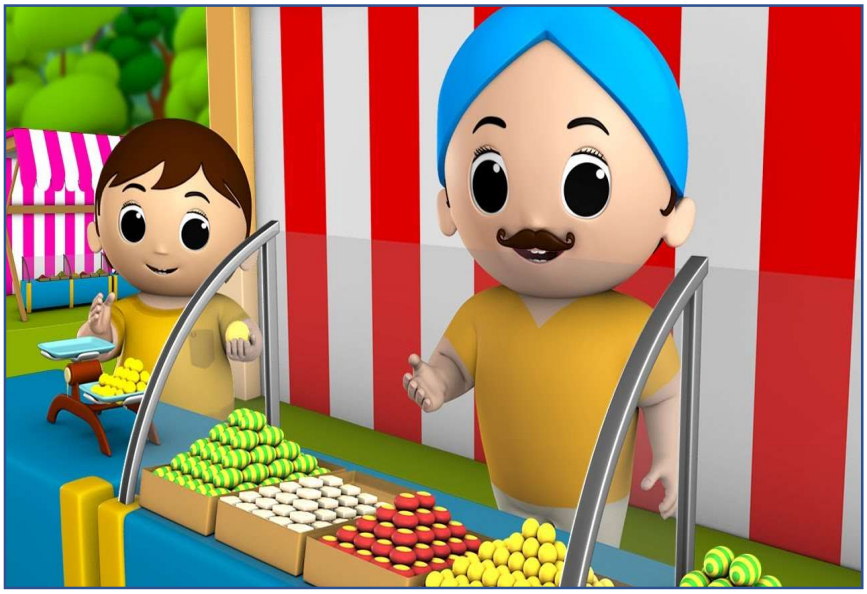

अपने युग में हर बालक ने,
जो भाया सो खाया.
किसी को माखन किसी को मिश्री,
किसी को मोदक भाया.
कच्चे - पक्के बेर न छोड़े,
लग्गी बाँधी आम गिराये.
अंगूरों के तोड़े गुच्छे,
मीठी जामुन मन ललचाये.
वक्त ने बदली अपनी करवट,
क्या - क्या रंग दिखलाये.
फास्ट फूड जंक फूड संग,
चिप्स कुरकुरे नूडल आये.
शीतल पेय गटागट पीते,
दूध दही न भाये.
सत्तू छाछ रबड़ी भूले,
बर्गर पिज्जा मन ललचाये.
वक्त से पहले यौवन गया,

थुलथुल तोंद हिलाये भैया.
सीढ़ी चढ़ते साँस फूलती,
दौड़ न पाते बड़े खवैया.
जीभ चटोरी बड़ी निगोड़ी,
मुँह में पानी भर लाये भैया.
ज़रा सोचकर खाना बाबू,
क्या खायें क्या ना खायें भैया!!

आई बदरिया

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा " गब्दीवाला "

आई बदरिया, छाई बदरिया
मदमस्त हो चली हवा,
धूसर रंग की उड़ी चुनरिया.
आई बदरिया.....

आसमां में बजा डम-डम,
चम-चम चमकी बिजुरिया.
आई बदरिया.....

नाचती हुई वर्षा रानी के,
देखो हाथ से छूटी गगरिया.
आई बदरिया.....

बच्चों को बनाएँ स्वस्थ प्रतियोगिता का हिस्सा

रचनाकार - रीना मौर्य मुस्कान, महाराष्ट्र

सभी बच्चों के भीतर कोई न कोई प्रतिभा छिपी होती है. उस प्रतिभा को जानना और समझना शिक्षकों अभिभावकों एवं स्वयं बच्चों के लिए भी बहुत जरुरी है. बच्चों में छिपी प्रतिभा को उजागर करने के लिए विद्यालयों में तरह -तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है. इन प्रतियोगिताओं का मुख्य उद्देश्य बच्चों में छिपी प्रतिभा को सामने लाना, उनका उत्साह बढ़ाना बच्चों के बौद्धिक विकास के साथ उनका शारीरिक मानसिक विकास करना है. इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से बच्चे विभिन्न्न क्रियाओं में हिस्सा लेते हैं उनका आनंद लेते है कुछ समय के लिए शिक्षा के तनाव से भी राहत पाते है.

परंतु आजकल इन प्रतियोगिताओं को कुछ अभिभावकों एवं कुछ शिक्षकों ने युद्ध के मैदान जैसा बना दिया है. ये सभी मिलकर हमेशा बच्चों पर जीत का दबाव बनाए रखते हैं. खासकर अभिभावक यह समझ ही नहीं पाते कि उनके बच्चों की रूचि किसमे है? ऐसे अभिभावक अपने किसी पड़ोसी या दोस्त को नीचा दिखाने के उद्देश्य से इन प्रतियोगिताओं को युद्ध का मैदान बना देते है. अगर पड़ोसी का बच्चा क्रिकेट अच्छा खेलता है तो हमारे बच्चे को उससे भी अच्छा क्रिकेट खेलना चाहिए कुछ इसी तरह की चाहत रखनेवाले माता-पिता भी होते है फिर भले ही उनके बच्चे की रूचि क्रिकेट में न होकर किसी और कार्य मे हो. अपने अहं की तुष्टि के लिए ये अभिभावक सबकुछ नजरअंदाज कर देते हैं. यह नजरिया आगे चलकर उन बच्चों के विकास में बाधक साबित होता है. कई बार ऐसा भी देखा गया है कि कुछ अभिभावक

प्रतियोगिता पर नहीं बल्कि साथी प्रतिभागी पर ज्यादा ध्यान देते हैं. और अपने बच्चे पर साथी प्रतिभागी से जीतने का दबाव बनाए रखते हैं. ऐसे में बच्चों के मन से खेल का उत्साह ख़त्म हो जाता है. एक-दूसरे के प्रति चिढ़ और कुंठा की भावना जागती है. जो कि बच्चों के मानसिक विकास में बाधा पहुँचाती है.

हमें अपने बच्चों को उनकी रूचि के अनुसार प्रतियोगिता में हिस्सा लेने और उसे जीतने के लिए उत्साहित करना चाहिए. प्रतियोगिता के महत्त्व से अवगत कराना चाहिए. जिससे बच्चे स्वस्थ प्रतियोगिता का हिस्सा बन सकें. प्रतियोगिता एवं अन्य कार्यक्रमों का लाभ उठाएँ, उनका आनंद ले सकें. साथ ही अपने अंदर छिपी प्रतिभा को समझ सकें. जिससे शिक्षा के साथ ही वे अन्य क्षेत्र मे भी अच्छी उपलब्धि हासिल कर सकें.

शिक्षक की सीख

रचनाकार - चानी ऐरी

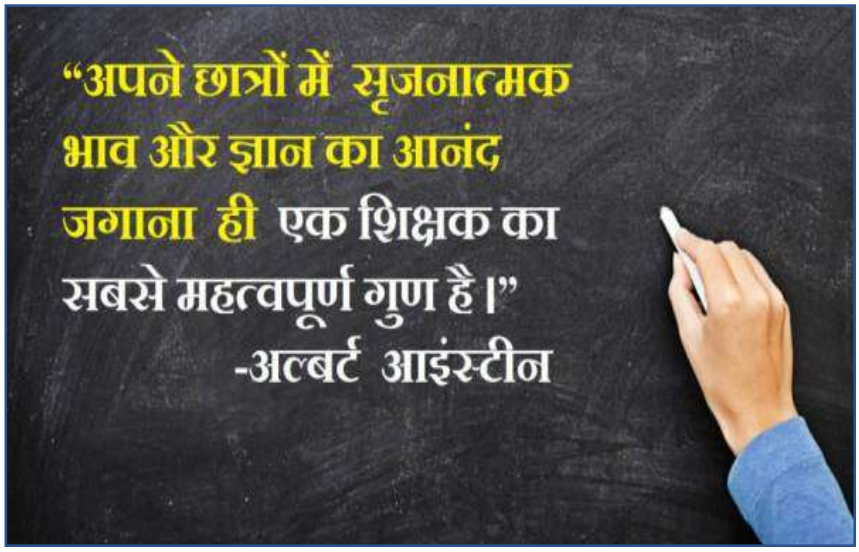

एक बड़े उद्योगपति शिक्षा संस्थानों के शिक्षकों को संबोधित कर रहे थे- "देखिए! बुरा मत मानिए ! लेकिन जिस तरह से आप काम करते हैं; जिस तरह से आपके संस्थान चलते हैं यदि मैं ऐसा करता तो अब तक मेरा व्यवसाय डूब चुका होता. " चेहरे पर सफलता का दर्प साफ दिखाई दे रहा था.

"समझिए! आपको बदलना होगा,आपके राजकीय संस्थानों को बदलना होगा; आप लोग पुराणी पद्दति पर चल रहे हैं और सबसे बड़ी समस्या आप शिक्षक स्वयं हैं, जो किसी भी परिवर्तन के विरोध में रहते हैं !"

"हमसे सीखिए! बिजनेस चलाना है तो लगातार सुधार करना होता है किसी तरह की चूक की कोई गुंजाइश नहीं. ”

अंग्रेजी में चला उनका भाषण समाप्त हुआ...

तो प्रश्न पूछने के लिए एक शिक्षिका का हाथ खड़ा था...

"सर! आप दुनिया की सबसे अच्छी कॉफी बनाने वाली कंपनी के मालिक हैं. एक जिज्ञासा थी कि आप कॉफी के कैसे बीज खरीदते हैं..? "

उद्योगपति का गर्व भरा ज़वाब था- "एकदम सुपर प्रीमियम! कोई समझौता नहीं..!"

शिक्षिका ने फिर पूछा:- "अच्छा मान लीजिए आपके पास जो माल भेजा जाए उसमें कॉफी के बीज घटिया क्वालिटी के हों तो..??"

उद्योगपति:-" सवाल ही नहीं ! हम उसे तुरंत वापस भेज देंगे; वेंडर कंपनी को ज़वाब देना पड़ेगा; हम उससे अपना क़रार रद्द कर सकते हैं !

कॉफी के बीज के चयन के हमारे बहुत सख्त मापदंड है इसी कारण हमारी कॉफी की प्रसिद्धि है. "आत्मविश्वास से भरे उद्योगपति का लगभग स्वचालित उत्तर था !

शिक्षिका:- "अच्छा है ! अब हमें यूँ समझिए कि हमारे पास रंग-स्वाद-और गुण में अत्यधिक विभिन्नता के बीज आते हैं लेकिन हम अपने कॉफी के बीज वापस नहीं भेजते. "

"हमारे यहाँ सब तरह के बच्चे आते है; अमीर-गरीब, होशियार-कमजोर, गाँव के-शहर के, चप्पल वाले-जूते वाले, हिंदी माध्यम के-अंग्रेजी माध्यम के, शांत- बिगड़ैल...सब तरह के! हम उनके अवगुण देखकर उनको निकाल नहीं देते! सबको लेते हैं.. सबको पढ़ाते हैं. सबको बनाते हैं..... क्योंकि सर, हम व्यापारी नहीं, शिक्षक हैं."

सीख- शिक्षक सभी बच्चे से समानता का व्यवहार रख कर पढ़ाते हैं, उन्हें लायक बनाते हैं.

रक्तदान

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

जो करता स्वेच्छिक रक्तदान,
उसका रहता उदार मन.
दूजे को देता जो जीवनदान,
करते सब उसे है नमन..

मरणासन्न मरीजों को
रक्त देकर देते जीवनदान.
प्राण बचाने को मानो,
आ पहुंचे साक्षात भगवान..

रक्तदान कर जो करते महादान,
उनका जीवन बनता है महान.
शरीर में रक्तता की शुद्धता होती,
मिलता लंबी आयु का है वरदान..

विश्व रक्तदान दिवस पर है अलख जगाना,
जनसमुदाय सम्मुख करना है बखान.
स्वैच्छिक रक्तदान को अपनाकर,
दे दो जरूरतमंद को अभयदान..

देकर रक्त जो नव जीवन दीप जलाते,
होता जग में उनका सम्मान.
रक्तदान सब दानों में है श्रेष्ठ,
रक्तदाता जग में बने महान..
जग में बने महान...

गौरैया

रचनाकार- अविनाश तिवारी

फुदक रही खिड़की पर,
फुर-फुर करती गौरैया.
चहक रही वह पर्दे पर,
क्या-क्या बोली गौरैया?

दाना-पानी माँग रही वह,
नीड़ में बच्चे चहक रहे.
तप्त वसुधा पिघल रही,
अधरों से प्यास झलक रही.

क्यों चुप बैठे घरों में तुम?
सड़कें क्यों वीरान है?
पूछ रही गौरैया हमसे,
मानव क्यों परेशान है?

जब-जब प्रकृति को छेड़ा,
हमने दुःख ही पाया है.
जतन करो अब आगे का,
नियति ने जो सीखाया है.

लौट चलों संस्कृति में अपनी,
अब जीवन सरल बनाओ.
भौतिकता के न पीछे भागो,
धरती को पुनः स्वर्ग बनाओ.

नीटू का मास्क

रचनाकार - डॉ. मंजरी शुक्ला, पानीपत, हरियाणा

"चलो नीटू, सामने की दुकान से कुछ सब्ज़ी और फल लेकर आते हैं." पापा ने नीटू को मास्क पकड़ाते हुए कहा.

"पर मैं मास्क लगाकर नहीं जाऊँगा." नीटू ने मास्क से दूर हटते हुए कहा.

मम्मी बोली- "याद है कल ही डॉक्टर अंकल ने कहा था कि जब कोई भी कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति खाँसता या छींकता है तो हवा में उसके थूक के बारीक कण फ़ैल जाते है और फ़िर ये विषाणुयुक्त कण साँस के द्वारा हमारे शरीर में भी प्रवेश कर सकते है."

"पर मुझे मास्क लगाना बिलकुल अच्छा नहीं लगता" नीटू अपने पैर पटकते हुए बोला.

"क्यों, उसमें बुराई क्या है?" पापा ने पूछा.

"क्योंकि मैंने पहले कभी मास्क नहीं लगाया है और इसलिए मेरी आदत नहीं है." नीटू रुआँसा होते बोला.

"तों फ़िर तुम घर पर ही रहो" कहते हुए पापा बाहर चले गए.

मम्मी ने बात बदलते हुए प्यार से कहा- "अच्छा, तुम्हें याद है कि तीन दिन बाद तुम्हारा जन्मदिन आने वाला है और तुम पूरे पाँच साल के हो जाओगे."

"हाँ, मैं बड़ा हो जाऊँगा और फ़िर मैं पुलिस ऑफ़िसर बनूँगा" कहते हुए नीटू ने अपनी प्लास्टिक की बंदूक उठा ली और कुर्सी पर पड़ी, सैनिक वाली टोपी पहन ली.

दादी हँसते हुए बोली- "पर सैनिक को ये तो पता होना चाहिए कि चोर कहाँ छिपा है."

नीटू अपनी आँखें घुमाता हुआ बोला - "हाँ, दादी! आप सही कह रही हो. पर ये कैसे पता लगेगा कि चोर कहाँ छिपा हुआ है?"

"ये जानने के लिए हमें चोर पुलिस का खेल खेलना पड़ेगा." दादी नीटू की टोपी को सीधा करते हुए बोली

खेलने के नाम से नीटू ख़ुश हो गया और बोला-"हाँ, मैं पुलिस बनूँगा और चोर को पकड़कर जेल में डाल दूँगा."

"नहीं, नहीं, पुलिस मैं बनूँगी." दादी ने मुस्कुराते हुए कहा

"पर मुझे चोर नहीं बनना है." नीटू ने ठुनकते हुए कहा

दादी ने समझाते हुए कहा-" पर जब तक तुम चोर नहीं बनोगे तुम्हें पता कैसे लगेगा कि चोर छुपने के लिए क्या क्या करता है?"

नीटू तुरंत बोला- "हाँ, और फ़िर जब मैं पुलिस बनूँगा तो मुझे पहले से ही पता होगा कि चोर कैसे छुपता है."

दादी हँसते हुए बोली- "चलो, अब जल्दी से मुझे अपनी बंदूक दो और तुम ये मास्क पहन लो."

"नहीं, नहीं, मैं मास्क नहीं पहनूँगा." नीटू ने मास्क को देखते हुए कहा

"ठीक है, तो फ़िर मैं तो तुम्हें तुरंत पकड़ लूँगी और खेल भी खत्म हो जाएगा."

"अरे दादी, अभी तो हमारा खेल शुरू भी नहीं हुआ और आप खत्म करने की बात कर रही हो." ये कहते हुए नीटू ने गंदा सा मुँह बनाते हुए मास्क पहन लिया

अब दादी ने इधर उधर देखते हुए कहा- "ओफ़्फ़ो, अभी तो एक चोर दिखाई दिया था, कहाँ चला गया?"

नीटू हँसता हुआ धीरे से बोला- "मैंने मास्क लगा लिया तो दादी भी मुझे पहचान ही नहीं पा रही."

उधर दादी कभी सोफ़े के पीछे देख रही थी तो कभी अलमारी के पीछे.

नीटू कभी उनके पीछे चलता तो कभी दौड़ता हुआ आगे खड़ा हो जाता.

पर दादी सामने खड़े नीटू को ऐसे ढूँढ रही थी मानों नीटू अदृश्य हो गया हो.

नीटू और दादी का चोर पुलिस का यह खेल तब तक चलता रहा जब तक मम्मी ने दोनों को खाना खाने के लिए नहीं बुला लिया.

नीटू खाना खाते हुए बोला- "दादी, बड़ा मज़ा आया. हम कल भी खेलेंगे."

दादी हँसते हुए बोली- "ज़रूर खेलेंगे पर तुम्हें तो मास्क लगाना पसंद नहीं है ना!"

"नहीं दादी, मास्क लगाना उतना भी बुरा नहीं है जितना मैं समझता था." कहते हुए नीटू मुस्कुराया.

"तो फ़िर अब घर से बाहर जाते समय मास्क लगाओगे ना?" मम्मी ने पूछा.

हाँ...बिलकुल लगाऊँगा ताकि कोरोना हमें पहचान नहीं पाए और हम सुरक्षित रहे.

“अरे वाह, हमारा नीटू तो बहुत समझदार हो गया.” पापा ने खुश होते हुए कहा.

“हाँ, पापा, मैं तो बहुत समझदार हूँ बस किसी को पता नहीं चल पाता.” नीटू ने मासूमियत से कहा पापा और मम्मी ने दादी की तरफ़ देखा और तीनों जोर से हँस पड़े.

चिड़िया रानी

रचनाकार - अजय कुमार यादव

मेरे अँगना में आई देखो चिड़िया रानी,
फुदक-फुदक के चुगती है दाना पानी..
काले- लाल -सफेद रंगों के पंखों वाली,
हरदम करती रहती है अपनी मनमानी..
मेरे अँगना में आई देखो चिड़िया रानी,
फुदक- फुदक के चुगती है दाना पानी..

ची ची करती चिड़िया रानी है ललचाती,
पास जाओ तो यह पकड़ में ना आती..
तिनकों से अपना घोंसला है बनाती,
चूज़ों के लिए लाती है दाना पानी.
मेरे अंगना आई देखो चिड़िया रानी,
फुदक- फुदक के चुगती है दाना पानी..

आवाज़ से अपने हमारे मन को बहलाती,
रोज सुबह आकर हमको नींद से जगाती.
आँगन में बिखरे दाना- पानी को है खाती,

मेहनत करना हम सबको है सीखलाती..
मेरे अँगना में आई, देखो चिड़िया रानी,
फुदक फुदक के चुगती है दाना पानी..

मुसीबत में सब मिलकर एक हो जाओ,
अपने दुश्मन को मिलकर मार भगाओ.
चिड़िया रानी तो मन की बहुत उदार है,
चिड़िया रानी का छोटा-सा घर संसार है..
मेरे अँगना में आई देखो चिड़िया रानी,
फुदक- फुदक के चुगती है दाना पानी..

जीवन में आध्यात्म का महत्व

लेखक - डिजेन्द्र कुर्रे

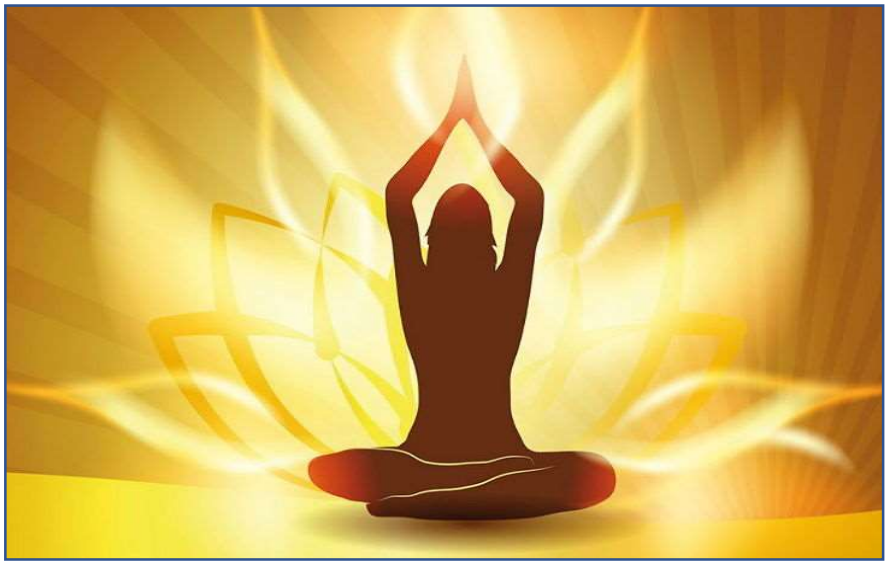

"ॐ संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते..."

आध्यात्म का शाब्दिक अर्थ - अंतर्मन हो जाना अर्थात अपनी आत्मा की आवाज है. जीवन में आध्यात्म का बड़ा महत्व है.आध्यात्म और योग एक दूसरे के पूरक है. योग साधना में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि,बंध एवं मुद्रा, सत्कर्म युक्त आहार, मंत्र जप युक्त कर्म आदि साधनाओं से हम आध्यात्म के परम आनंद की प्राप्ति कर सकते हैं.

आज मानव सांसारिक सुख सुविधाओं में ही लिप्त है. सांसारिक सुख बाह्य सुख है. आज लोग अपने जीवन के अधिकांश समय को सांसारिक सुख में ही बिताकर नष्ट कर देते है. फिर जीवन के अंतिम चरण में आध्यात्मिक शांति की खोज में देवालय मंदिर, गिरजाघर, मस्जिद आदि में भटकते फिरते हैं. वास्तव में असली शांति तो शरीर के अंतर्मन अर्थात अंतरात्मा में ही बसी होती है. यदि मानव इस आत्मिक शांति को बाहर न ढूँढकर अपने अंदर ही ढूँढे तो परम आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति हो सकती है. यदि जीवन में परम सुख की प्राप्ति करना चाहते हैं तो आध्यात्म को मानना पड़ेगा जानना पड़ेगा और जीवन में अपनाना पड़ेगा.

चन्द्रमा की रोचक जानकारियाँ

लेखक - राम नारायण प्रधान

- चन्द्रमा पृथ्वी का एक मात्र प्राकृतिक उपग्रह है. यह हमारे सौरमंडल का पाँचवाँ विशाल उपग्रह है.
- चंद्रमा पर जल और वायुमंडल दोनों नही हैं.
- चन्द्रमा में स्वयं का प्रकाश नहीं होता है, यह सूर्य के प्रकाश से चमकता है.
- चन्द्रमा की गुरुत्वाकर्षण शक्ति पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का 1/6 (छठा भाग) है.
- समुद्र में आने वाला ज्वार-भाटा चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण के कारण ही आता है.
- चंद्रमा पर दिन का तापमान लगभग 107अंश सेंटीग्रेड एवं रात का तापमान लगभग - 137 अंश सेंटीग्रेड होता है.
- चन्द्रमा की सतह बहुत उबड़-खाबड़ है और मोटी धूल की परत आच्छादित है.
- निम्न भाग को चन्द्रमा का समुद्र (लूनर मेरिया) कहा जाता है.
- यहाँ समुद्र और ऊँचे ऊँचे पहाड़ हैं.
- चन्द्रमा के समुद्रों का नाम इस प्रकार है - सी ऑफ़ ट्रेंक्विलिटी, सी ऑफ़ सेरीनीटी, सी ऑफ़ स्मार्मस, सी ऑफ़ टेनस, सी ऑफ़ क्लाइड्स.
- पर्वतों के नाम है -आल्पस, अपेनाइन, कार्पेनाईन आदि.
- सबसे ऊँची चोटी वाला पहाड़ है लिबनिट्ज जिसकी ऊँचाई 10,660 मीटर है.
- चन्द्रमा पर 600 से अधिक ज्वालामुखी है सबसे बड़े ज्वालामुखी का नाम "बेली" है.
- पृथ्वी की ओर दिखने वाले भाग में चन्द्रमा के 28 समुद्र, 19 पर्वत, और 11 पर्वत चोटियों नामकरण किया गया है.
- चन्द्रमा का आकार दीर्घ वृत्ताकार है.

- चंद्रमा का द्रव्यमान पृथ्वी के द्रव्यमान का 0.0123 गुना, और आयतन पृथ्वी के आयतन का 0.0203 गुना है.
- पृथ्वी से चन्द्रमा की दुरी 3,84,365 कि.मी. है.
- चंद्रमा की अक्षीय गति 2287 कि. मी./घंटा है एवं व्यास 3476 कि.मी. है.
- चन्द्रमा को पृथ्वी के एक चक्कर लगाने में 27 दिन 7 घंटे 43 मिनट और 11.47 सेकेण्ड लगते है.
- पृथ्वी को अपने अक्ष में एक चक्कर लगाने में 24 घंटे लगते है जबकि चंद्रमा को 27दिन 7 घंटे 43 मिनट तथा 11.47 सेकेण्ड लगते है अर्थात चंद्रमा के आधे भाग में 14 दिनों तक दिन और 14 दिनों तक रात होती है.
- चन्द्रमा की कक्षीय दूरी पृथ्वी के व्यास की 30 गुना है.
- हम पृथ्वी से चन्द्रमा के जिस भाग को देखते है वही भाग हमेशा दिखता है और उसी स्थिति को बनाये रखते हुए चन्द्रमा पृथ्वी का पूरा चक्कर लगता है.
- चन्द्रमा के प्रकाश को पृथ्वी तक आने में 1.3 सेकेण्ड का समय लगता है.
- हिंदी महीने चैत्र, वैसाख आदि चन्द्रमा के गति पर निर्धारित होते हैं. कृष्ण पक्ष से हिन्दी माह का प्रारंभ होता है.
- चन्द्रमा का आकार पूर्णिमा से अमावस्या तक क्रमशः घटता जाता है. अमावस्या को एक पक्ष समाप्त होता है उस रात और शुक्ल पक्ष की प्रथम रात को चाँद दिखाई नहीं देता है.
- शुक्ल पक्ष की दुसरी रात को चाँद बहुत पतला दिखाई देता है. यह शाम को पश्चिम दिशा में अंतिम छोर पर दिखाई देता है और रात को शीघ्र अस्त हो जाता है. इसे दूज का चाँद / ईद का चाँद कहते है.
- इसके बाद प्रत्येक रात क्रमशः बढ़ते हुए पूर्णिमा की रात को पूरा चाँद दिखाई देता है.
- चन्द्रमा की स्थिति अपने अक्ष पर गति करते हुए इस प्रकार होती है कि हम प्रति रात बदलते आकार को पृथ्वी से देख पाते है.
- शरद पूर्णिमा को चंद्रमा पृथ्वी के सबसे नजदीक होता है.
- चन्द्रमा का अध्ययन करने वाले विज्ञान को selenology कहा जाता है.
- 20 जुलाई 1969 को अपोलो 11 यान से नील आर्मस्ट्रांग एवं एडविन एल्ड्रिन चंद्रमा के सतह पर उतरे थे.
- इन दोनों ने 90 मी. घूमकर 20 कि.ग्रा. चट्टानों का नमूना एकत्र किया और चंद्रमा पर 2 घंटे 30 मिनट का समय बिता कर वापस लौट आए.
- भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो) के चन्द्र अन्वेषण कार्यक्रम के अंतर्गत 2008 में चंद्रयान 1 एवं 22 जुलाई 2019 को चंद्रयान 2 का प्रक्षेपण कर इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया हैं..

मन की बात

रचनाकार- रजनी शर्मा बस्तरिया

सबसे कहते आज फिरूंगी,
आज उठी मैं सबसे पहले.
कैसे डालियों पर पंक्षी चहके,
सूरज से छप्पर आंगन चमके.
बछड़ों की अम्मां कैसे रंभाती,
मंदिर की घंटी है मुझे सुहाती.
हवा बांचें चिठ्ठी मौसम पत्ते पत्ते,
गाल गुलाल फूलों के हंसते हंसते.
कैसे लिहाफ़ फेंक कर बादल का,
खोला गगन ने संदूक पूरब का.
ख़ज़ाना सुनहरा खुला सूरज का,
क्षण था वो मेरे जल्दी उठने का.

सफलता की कहानी :- क्या ऐसा भी होता हैं

लेखक - श्रीमती शारदा उइके, अधीक्षिका, के.जी.बी.वी. चपोरा,
ब्लॉक- कोटा, जिला- बिलासपुर

बिलासपुर ज़िले में कोटा ब्लॉक के अंतर्गत चपोरा ग्राम में कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय स्थित हैं. कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय एक आवासीय विद्यालय है जिसमें 85% अनुसूचित जनजाति की बालिकाएँ अध्ययन और निवास करती हैं विद्यालय में नया प्रवेश 6 वीं कक्षा में ही होता है. नव प्रविष्ट कुछ बालिकाएँ जल्दी ही वातावरण के अनुकूल ढल जाती हैं पर कुछ को बहुत समय लग जाता है. रोना, क्लास में नहीं बैठना, विद्यालय से बाहर जाने की कोशिश करना, बीमार होने का बहाना करना जैसी समस्याएँ होती हैं. आज हम ऐसी ही एक बालिका कु.चम्पा बैगा की कहानी आपको बता रहे हैं. चम्पा जब अपनी माँ के साथ विद्यालय में प्रवेश के लिए आई तो वह बहुत डरी सहमी थी. चम्पा को तब नहीं पता था कि उसे यहीं रहकर पढ़ाई करनी होगी. बहुत मुश्किल से वह विद्यालय में रुकने को तैयार हुई. वह हमेशा ही चुपचाप रहती जैसे उसे हँसना आता ही न हो. कक्षा में वह अनमनी सी रहती पढ़ाई में मन न लगने के कारण वह प्रश्नों के जवाब भी नहीं दे पाती.

कुछ दिनों बाद उसके सिर में बहुत दर्द होने लगा और वह घर जाने के लिए रोने लगी. उसके पिता जी आये और उसका इलाज कराने के बाद उसे घर ले गए.

चम्पा का घर जंगलों के बीच पहाड़ी के पास है. उसे वहाँ की खुली हवा में रहना बहुत पसंद था. विद्यालय आने के बाद भी चम्पा का मन पूरी तरह अपनी घर व जंगलों की यादों से घिरा हुआ था. एक बार फिर गाँव आने के बाद वह वहाँ से वापस नहीं जाना चाहती थी.

काफी दिन बीत गए पर चम्पा विद्यालय नहीं आई गाँव में फोन की सुविधा भी नहीं थी अतः उसके माता पिता से संपर्क भी नहीं हो पा रहा था. इसलिए अधीक्षिका ने विद्यालय की एक कर्मचारी को चम्पा के घर यह पता करने भेजा कि अब चम्पा कैसी है? वह वापस विद्यालय कब आएगी? कर्मचारी जब गाँव में पहुँची तो पता चला कि चम्पा अपनी दादी के साथ जंगल में बने घर में रहती है. चम्पा के घर पहुँचने पर देखा कि चम्पा अपनी दादी व अन्य लोगों के साथ गीत गाते-गाते जंगल में वनोपज संग्रहण में लगी थी.

कर्मचारी को देख कर चम्पा खुश तो हुई पर तुरंत ही उसके चेहरे के भाव बदल गए. दादी और चम्पा कर्मचारी के साथ घर आ गए. चम्पा के माता-पिता कर्मचारी द्वारा समझाने पर उसे विद्यालय भेजने को तैयार हो गए. पर जब चम्पा के पिता ने कहा कि वे खुद चम्पा को विद्यालय छोड़ने आएँगे तो यह सुनकर चम्पा बहुत ही उदास हो गई और अपनी माँ से लिपट कर रोने लगी.

तब कर्मचारी ने चम्पा को समझाते हुए बताया कि "चम्पा! विद्यालय में अधीक्षिका मैडम जीवन कौशल की कक्षा में सभी बच्चो के साथ बहुत खेलती हैं. सब मिलकर बहुत मज़े करते हैं और तुम्हारी सहेलियाँ भी तुम्हे याद करती हैं, तुम जल्दी से विद्यालय आओ वहाँ तुम्हे भी बहुत मजा आएगा." यह सुनकर चम्पा के चेहरे पर थोड़ी खुशी के भाव दिखे.

अगले दिन चम्पा के पिता उसे विद्यालय पहुँचाकर लौट गए. चम्पा के मन में जीवन कौशल की कक्षा को लेकर बड़ी जिज्ञासा थी. उसकी सहेलियों ने बताया की यह बहुत ही मज़ेदार सत्र है इसमें हम सब बहुत सी नई बातें सीखते हैं इसमें बहुत सी रोचक गतिविधियाँ भी हैं.

अब चम्पा को जीवन कौशल की कक्षा का ही इंतजार था. फिर वो दिन आया जब अधीक्षिका मैडम जीवन कौशल का सत्र लेने वाली थीं. सत्र का विषय था “भावनाओं की समझ बढ़ाना और गुस्से को समझना” काफी ध्यान से सभी ने सुना और अपनी बातें भी कहीं. चम्पा ने भी सत्र की गतिविधि में हिस्सा लिया पर ज्यादा नहीं बोली.

धीरे धीरे चम्पा के व्यवहार में परिवर्तन आने लगा. इस परिवर्तन को सभी देख पा रहे थे. अब वह घर जाने के लिए जिद नहीं करती पढ़ाई में भी उसने मन लगाना शुरु कर किया.

समय बीतता गया चम्पा अब विद्यालय के वातावरण में रम गई. दीपावली की छुट्टियों के बाद वह समय पर विद्यालय लौट आई. चम्पा के व्यवहार में जीवन कौशल की शिक्षा व सत्रों के द्वारा सकारात्मक बदलाव आये हैं. वह रोज अपने दोस्तों, अधीक्षिका शिक्षिकाओं से कुछ न कुछ नया सीखती है. अब वह विद्यालय में बहुत ख़ुश रहती है.

तमन्ना

रचनाकार- चन्द्रहास सेन

उड़ते हुए बादल को छू लेने की तमन्ना है.
बादल सा उड़-उड़ कर बरस जाने की तमन्ना है.

बरसों की चाहत है मेरी, सारे जहान को देखूँ.
गाँव-गली,घर-घर जाकर हाल सभी का पूछूँ.
जन-जन के दिलों में समा जाने की तमन्ना है.
उड़ते हुए बादल को छू लेने की तमन्ना है.

बहती हुई नदियों को इठलाते हुए मैं देखूँ.
सागर में जाकर उसे समा जाते हुए मैं देखूँ.
पंछियों जैसी उड़-उड़ कर गीत गाने की तमन्ना है.
उड़ते हुए बादल को छू लेने की तमन्ना है.

जाति-पाति की तोड़ दीवारें मानवता का पाठ पढ़ा दें.
उजड़े हुए चमन को आओ फिर से मिलकर सजा दें.
पत्थर जैसे दिलों को पिघलाने की तमन्ना है.
उड़ते हुए बादल को छू लेने की तमन्ना है.

तम्बाखू

रचनाकार - सीमांचल त्रिपाठी

इकतीस मई के दिन,
विश्व तम्बाखू निषेध दिवस है मेरे भाई.
तम्बाखू सेवन के दुष्परिणाम को,
जन-जन को बताना है मेरे भाई..

तम्बाखू के खेत मे,
पैदा हो यदि अन्न.
पेट हज़ारों के भरे,
मन भी रहे प्रसन्न..

तम्बाखू सेवन से,
हो जाती है कई बीमारियां.
घर की जमा पूंजी,
से क्रय करते हैं दवाइयां..

तम्बाखू सेवन से,
जिसने नही किया तौबा.
उसके घर प्रतिपल,
मचे हाय तौबा..

दिनों दिन खर्च बढ़े,
ना बचे पैसा.
खाने को अन्न नही,
शौक पूर्ति खातिर चाही पैसा..

तम्बाखू सेवन के शौक से,
हाथ फैलाने को हुए मजबूर.
मिली तो बाग-बाग,
नहीं तो फब्तियां कसते दो चार..

तम्बाखू सेवन के शौक ने,
किसी का भला नही किया.
घर मे मचे हल्ला,
जीवन को अशांत है किया..

The Teacher is more than a teacher

Writer- Lalit Sahu

If we visit to any of the school, we find some motivational lines/inspirational quotes quoted on the wall of the classrooms like-

“The mediocre teacher tells. The good teacher explains. The superior teacher demonstrates. The great teacher inspires.”

“They inspire you; they entertain you, and you end up learning a ton even when you don't know it” But it is needed to understand the real sense behind saying these lines; sometimes it seems difficult to make its interpretation. I remember the day, when an interaction was happening with the teachers in a training program, discussing on the role of a teacher. When they were asked the meaning of the line, which was quoted on the wall in the same room.

The line was- “A good teacher is like a candle - it consumes itself to light the way for others”.

“शिक्षक एक दिये के समान है जो स्वयं जलता पर दूसरों को प्रकाशवान बनाता है”

The interpretations were interesting-

“खुद जलता है औरों के जीवन मे प्रकाश फैलाता है”

“स्वयं जलते हुए अपनी ज़िदगी खत्म कर देता है और बच्चों को शिक्षा देता रहता है” | आदि आदि....

I also made one funny interpretation in this regard. “दिया तले अंधेरा” All the teachers laughed. What I meant to say all about, it is expected to each of the person who contributes herself/himself to the society for the social transformation through education, needs to understand the real sense of teachers’ role to the society. Deliberately, I put a context through an illustration to get through the sense of teacher’s role in the society.

Once upon a time a dialogue happens between ‘DIYA’ and ‘TUBE LIGHT’. Whose role is significant in the society and who is more useful and important.

TUBE LIGHT- Hey ‘Diya’ see how smart I look? I am long, milky, white appearance and people like me and my light very much. Just put on an electric button and see how I spread myself in the atmosphere. In every function I am preferred to get light. And see your appearance, very small, with limited BATI, black smoke and produces limited light etc.

DIYA- I agree with your all logic big brother, I do believe my limitations. But it is certain that what the differences you made by comparing each other cannot be denied but the kind of basic difference is there, can never ever be compared with all your colleagues in the world. What I contribute to the society that you can’t - I can enlighten one other DIYA, two DIYAs, ten DIYAs, hundred DIYAs thousands DIYAs from me as single one but you can never make flame other single one tube light, you can’t. That’s the vital role which I play in the society, and contribute myself for. (मैं एक दिया से दूसरा ही नहीं दस और दिये, सौ दिये, एक हज़ार दिये, दस हज़ार दिये जलाने की क्षमता रखता हूँ जबकि आप एक ट्यूबलाईट से दूसरा ट्यूबलाईट नहीं जला सकते)

The concern is not only to play his/her role as teacher in the society but to changing of his/her own attitude through lancing the society holistically. Teacher’s role in education doesn’t mean only to educate children instead of how does a teacher perform his/her role best as a facilitator, an inspiring, an

enabler, a motivator, a psychologist. Overall, as a good human being to the children who believes that education is not merely to provide; instead of,

How do I understand education? How do I live through? n How do I make understand?

So that I would be able to perform my role as a facilitator more; rather than teacher who creates a conducive environment for maximum learning as well as constructing children's own knowledge. The teacher needs to search out as well as understands his/her role in the society. This is what the society expects from a teacher yesterday, today, and tomorrow everlasting.

<u>देशभक्ति</u>

रचनाकार - दिनेश कुमार चन्द्राकर

मन में महके इस मिट्टी की खुशबू,
तन में चहके इस धरती का रंग.
मातृ भूमि सेवा समर्पण के लिए,
हर दिल में रहें नयी उमंग.

आँच न आवे अपने वतन पर,
मिलजुल कर जो करें जतन.
आँख उठाये जो देश के दुश्मन,
कर दे हम उन, सबको ख़त्म.

जिये तो सदा इस अभिमान से,
बेटे हैं हम हिंदुस्तान के.
बेटे का फर्ज हम निभाएंगे,
इस मिट्टी का कर्ज चुकाएंगे.

तन- मन क्या ये जान है अर्पित.
वतन के लिए हम पूर्ण समर्पित.
सौ बार जन्म लूँ तेरा ही लाल रहूँ माँ .
हर जन्म में सैनिक बन दुश्मन का काल रहूँ माँ . .

सागर की लहरों में लहराये,
ऊंचे आसमान में फहराये.
अपनी भारत माता का झन्डा
शान से फहराये प्यारा तिरंगा.

बापू ने दिया यही नारा,
मातृभूमि हो जान से प्यारा.
कभी नहीं चाहे हम,
लड़ाई, दंगा और क्रांति.
रहे सलामत देश दुनिया,
सत्य, अहिंसा और शान्ति..

सूरज

रचनाकार -मनोज कुमार आदित्य

रोज सबेरे सूरज आता,
अंधियारा को दूर भगाता.
बड़े सबेरे आसमान में
दूर क्षितिज पर पूरब में
मंद-मंद मुस्काता सूरज.
रोज सबेरे आता सूरज.

लगातार यह सुबह-शाम.
चलता हरदम यह अविराम.
ऐसे ही यह कर्मठता का,
पाठ हमें पढ़ाता सूरज.
रोज सबेरे आता सूरज.

सभी ग्रहों का स्वामी है यह
ऊर्जा का यह स्रोत प्रमुख
सच में सकल जगत का,
जीवन दाता है सूरज.
रोज सबेरे आता सूरज.

कैसे बनता है इंद्रधनुष??

लेखक - शेफाली श्रीवास्तव, भुसावल (महाराष्ट्र)

इन दिनों बारिश का मौसम चल रहा है और बारिश के दिनों में अक्सर हमें इंतजार रहता है कि किसी दिन आकाश में इंद्रधनुष दिख जाए तो मजा आ जाए.

आपने भी देखा होगा कि, बारिश के बाद जब धूप निकलती है तो आसमान में इंद्रधनुष दिखने लगता है. इंद्रधनुष एक ऐसा प्राकृतिक दृश्य है जिसे कभी न कभी हर किसी ने देखा ही होगा. इंद्रधनुष बारिश के बाद दिखाई देने वाला प्रकृति का एक अनूठा नज़ारा होता है. पर क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर इंद्रधनूष बनता क्यों है और बनता कैसे है ? चलिए आज हम आपको इसके बारे में बताते हैं.

आसमान में रेनबो यानी इंद्रधनुष का बनना बारिश की छोटी छोटी बूंदों का कमाल होता है. इंद्रधनुष कैसें बनता है यह समझने के लिए हमें पहले प्रकाश के गुण को समझना होगा.

हम रोज ही सूरज का सफेद प्रकाश देखते हैं पर क्या आपको पता है कि सूर्य का प्रकाश कई रंगो से मिलकर बना होता है. सूर्य के प्रकाश में मुख्य रुप से सात रंग मौजूद होते हैं - बैंगनी,जामुनी, नीला,,हरा, पीला, नारंगी और लाल, जिसे संक्षेप में "बैजानीहपीनाला " कहते हैं.

आपने अपने स्कूल में प्रिज्म देखा होगा यदि आप अपने विज्ञान के शिक्षक से कहेंगे तो वो आपको प्रिज़्म जरूर दिखा सकते हैं. प्रिज्म काँच की एक त्रिकोण आकार की आकृति होती है. प्रिज्म की एक सतह पर जब सफेद प्रकाश डाला जाता है तो वह प्रकाश प्रिज्म के दूसरी ओर सात रँगों में बँट कर निकलता है. आप खुद भी प्रिज्म से यह प्रयोग कर सकते हैं.

अब वापस आते हैं इंद्रधनुष पर!

सूरज की किरणें जब बारिश के समय पानी की बूँदों से गुज़रती है तो पानी की बूँदें प्रिज्म की तरह काम करती हैं और सूरज की किरणें सात रंगों मे बिखर जाती हैं. जिसे हम इंद्रधनुष के रुप में देख पाते हैं. आपने ध्यान दिया होगा कि इंद्रधनुष हमेशा सूर्य की विपरीत दिशा में दिखाई देता है. अगर आप चाहें तो एक छोटा सा प्रयोग करके अपने घर पर ही छोटा सा इंद्रधनुष बना सकते हैं. इसके लिए आपको बस तीन चीज़ों की आवश्यकता होगी :- एक बर्तन में पानी, दर्पण और सूरज की रोशनी. आइए देखें कि प्रयोग कैसे करना है.

एक बर्तन में पानी ले लीजिए और उस बर्तन में दर्पण को रख दीजिये. दर्पण का थोड़ा हिस्सा पानी में डूबा होना चाहिए और बाकी हिस्सा पानी के बाहर होना चाहिए. अब इस बर्तन को आप ऐसी जगह रखिए जहां सूरज का प्रकाश दर्पण पर पडे और फिर दर्पण से परावर्तित होकर दीवार या किसी भी सतह पर पड़े. इसके लिए आपको दर्पण का कोण अच्छी तरह से निश्चित करना होगा. अगर आपने दर्पण सही तरह से रख लिया तो आपको खुद का बनाया इंद्रधनुष जरूर दिखेगा. इस तरह से कोई भी अपने घर में इंद्रधनुष बना सकता है यह इंद्रधनुष आप अपनी हथेली पर भी देख सकते हैं वो भी बिना बारिश के. है न मजेदार बात.

पानी आगे

रचनाकार - बलदाऊ राम साहू

पानी आगे
मन हरसागे.

भाई छत्तर
आगे बत्तर.

धर ले नाँगर
समरथ जाँगर.

बाँवत कर ले
निकल घर ले.

खेत म जाबो
सुख ला पाब.

भारत के सपूत

रचनाकार -मनोज कुमार आदित्य

भारत के हम नन्हें सिपाही, आपस में हैं भाई-भाई.
छोड़ कर आपस का झगड़ा, आओ करे हम देश भलाई..
एक देश के वासी हैं, एक सबका मान है.
भारत माँ जननी हम सबकी, ग़ज़ब इसकी शान है..
काँटों की राह पे चलकर भी, फूलों की सेज सजाएं हम.
एक चमन के फूल हैं सब, मिल जुलकर मुसकाएँ हम..
ठोकर खाकर गिरे न कोई, मिलकर कदम बढ़ाएँ हम.
काम ऐसा आओ कर डालें, भारत के सपूत कहलाये हम..

वन

रचनाकार -मनोज कुमार आदित्य

हरा-भरा यह सुन्दर वन.
हम सबको देता जीवन.
औषधि,लकड़ी,फूलऔर फल,
इनसे मिलता हमको जल.
पशु-पक्षियों की करें सुरक्षा.
हम सबका ये मित्र है सच्चा.
दूषित हवा को दूर कर,
देता हम सबको आक्सीजन.

हरा-भरा कितना सुन्दर वन,
हम सबको देता है जीवन.
इनकी लकड़ी से बनते फर्नीचर.
लोग जंगल काट, बनाते घर.
जड़ी-बूटियों से बनती औषधि.
नाना किस्म की हरते जो ब्याधि.
अंत में इन्हीं लकड़ियों से लाशों का भी होता दहन.

हरा-भरा कितना सुन्दर वन,
हम सबको देता है जीवन.
पर्वत-झरने, झील और घाटी,
प्रकृति की है सुन्दर परिपाटी.
चातक-कोयल, मोर-चकोर,.
नाचे छम-छम भाव विभोर.
देखो कितने लगते प्यारे
रंग-बिरंगे सुमन ये सारे.
हरा-भरा कितना सुन्दर वन
हम सबको देता है जीवन.

शिक्षक और विद्यार्थी

लेखक- ऋषि पांडेय

एक शिक्षक के सामने स्कूल/ कक्षा के बच्चों के असंख्य सवाल हमेशा खड़े रहते हैं, इसलिए हम कह सकते हैं कि क्लासरूम टीचिंग (कक्षा शिक्षण) बेहतर संवाद का ही पर्याय है. मेरी शाला में ऐसे ही स्वतंत्र बातचीत संवाद के चलते कक्षा पहली के विद्यार्थी ने मेरे सामने एक ऐसा सवाल रख दिया था कि मेरे लिए वह एक चिंतन का विषय बन गया.

बात दो साल पुरानी है. उन दिनों मैं कबीरधाम जिले के एक शाला में पदस्थ था. मैंने अपनी कक्षा में क्लास लिया और पीरियड खत्म होते ही कक्षा से बाहर निकला. मेरे निकलते ही पीछे खड़े बच्चे ने अपना सिर खुजाते हुए मुझसे एक सवाल किया कि "आप रोज-रोज एक ही कपड़े को पहनकर स्कूल क्यों आते हो?" मैं उसके इस प्रश्न को सुनकर थोड़ी देर के लिए एकदम शांत हो गया, लेकिन त्वरित मुझे उसका जवाब भी देना था, कुछ क्षण सोच कर मैंने उसे कहा- “बेटा, मेरे कपड़े धुले नहीं थे, इसलिए आज भी मुझे इसी कपड़े को पहन कर आना पड़ा.”

इसके बाद मैं ऑफिस की ओर चल पड़ा और बच्चा स्कूल ग्राउंड में खेलने के लिए दौड़ा.

इसके बाद मैं ऑफिस में बैठकर उसके इस प्रश्न को सोच कर बहुत चिंतन करने लगा कि जिन बातों का हमने पुस्तकों में एक सैद्धांतिक पक्ष को पढ़ा है वे सब बातें मुझे बच्चों के व्यावहारिक प्रतिबिंब (बिहेव्यरल रिफ्लेक्शन)में देखने को मिल रहा हैं.

आशय यह कि मैं बच्चे के इस आचरण को सीखने के संदर्भ से जोड़कर देखने लगा जिसको लेकर मेरी कुछ मान्यताओं पर पुनः चिंतन का अवसर मिला.

जैसे:-

1)बच्चों की सूक्ष्म अवलोकन की क्षमता.

2)बच्चों को कमतर आंकने की हमारी मानवीय प्रवृत्ति.

3)सीखने के सिद्धांतों को व्यवहारिक जीवन में घटित होते कैसे देखा जाना चाहिए.

सीखने में उपर्युक्त तीनों बिंदुओं का सैद्धांतिक पक्ष जब किसी बच्चे के सीखने के व्यावहारिक आचरण में देखने को मिले तो मेरी सीखने की समझ और भी पुख्ता हुई क्योंकि

1)बच्चों की अवलोकन क्षमता कैसे उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करती है जिससे किसी और धारणाओं का बनना तय होता है.

2)बच्चे कहीं भी, कैसे भी सीख सकते हैं, बस हम उन्हें कमतर न आँकें. बस जरूरत है तो उन्हें सीखने के उचित अवसर प्रदान करने की.

3)बच्चा जो भी सीखेगा, समझेगा उसे वह अपने व्यावहारिक आचरण में उतारेगा.

यह सभी बातें बच्चे के उस एक प्रश्न ने मेरे चिंतन को बढ़ाते हुए मेरी समझ को और पुख्ता कर दिया जो वह पल सच में मेरे लिए एक प्रेरित करने वाला पल था. ऐसा लगा मानो मेरे भीतर चेतना की एक और लहर उठ गई.

मैं आप सभी लोगों तक यही संदेश पहुँचाना चाहता हूँ कि किसी भी बच्चे का कोई भी सवाल, बेवजह या गलत नहीं होता. हमें उनके मनोभाव को समझते हुए, उचित उत्तर और स्वर्णिम अवसर प्रदान करना चाहिए क्योंकि कोई भी बच्चा केवल अपने पाठ्य- पुस्तक पर आधारित सवाल नहीं करता है बल्कि अपने जीवन के समस्त क्षेत्रों से उनके मन में लाखों सवाल होते हैं, जिनको जानने के लिए वे आतुर होते हैं. और इन सब सवालों के समाधान के लिए केवल और केवल हम शिक्षक और उनके माता -पिता होते हैं.

जय हिन्द!

बगिया

रचनाकार -अजय कुमार यादव

आओ बच्चों हम खेलें कूदे,
आनंद मनाए, छोटी बगिया में.
यहां पर रंग -बिरंगे फूल खिले,
कितने भंवरे तितली यहां मिले..

आम, अमरूद, जामुन के पेड़ खड़े,
जैसे एक- दूसरे से हो गले मिले.
फूलों के खुशबू से आई है बहार,
ऐसा मानो जैसे कोई हो त्योहार..

यहां पक्षियों की बोलियां सुनो,
कानों में मधुर संगीत है घोलती.
मन भी गीत -गुनगुनाने लगता,
यहां आ के हर कोई है बोलता..

बगिया में दिल बहलाते हम,
दोस्तों को भी यहां बुलाते हम
हर शाम सवेरे घूमने आते हम,
बगिया की हवाओं में है दम..

भागदौड़ भरी इस जिंदगी में
सुकून पाते हम इस बगिया में,
खाली समय बिताते बगिया में
आओ आनंद मनाएं बगिया में.

रेल का खेल

रचनाकार - रीता मंडल

लंबी टेढ़ी - मेढ़ी रेल,
आओ हम मिलकर खेलें खेल..

जुड़कर हम सब डिब्बा बन जाएँ,
आज रेल का खेल खिलाएँ..

मुँह से छुक- छुक की आवाज,
मजे करेंगे मिलकर आज..

एक-दूजे का कंधा पकड़े,
रेल के डिब्बे जैसे जकड़े..

ऐसे मिलकर बन जाएँ रेल,
आओ मिलकर खेलें खेल..

चलते रहने का संदेश,
रेल दे रही है उपदेश..

इक-दूजे से जुड़े रहेंगे,
आगे बढ़ेंगे मज़े करेंगे..

प्यारी चींटी

रचनाकार - कु. प्रिया चतुर्वेदी

ओ! प्यारी सी नन्हीं चींटी,
मेहनत इतनी तुम करती हो.
नन्हीं-सी तुम गिर-गिर कर भी
कभी आस नहीं खोती हो..

ओ! प्यारी सी नन्हीं चींटी,
मेहनत इतनी तुम करती हो.
लक्ष्य एक चुनकर तुम हमेशा,
उसके पीछे चल देती हो..

ओ! प्यारी सी नन्हीं चींटी,
मेहनत इतनी तुम करती हो.
हिम्मत कभी न हारने की,
सीख हम सबको देती हो..

ओ! प्यारी सी नन्हीं चींटी,
मेहनत इतनी तुम करती हो.
परिश्रम करने का पाठ हमें,
सिखाकर तुम चली जाती हो..

ओ! प्यारी सी नन्हीं चींटी,
मेहनत इतनी तुम करती हो.

नमन की पढ़ाई

रचनाकार - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

परीक्षा चल रही थी. एक ही कमरे में तीन कक्षाओं के बच्चे एक के बाद एक बैठे थे. सभी बच्चे अपने-अपने पर्चे में व्यस्त थे. कक्षा पाँचवी के नमन ने देखा कि उसके आगे बैठे कक्षा छठवीं के मनोज के पर्चे की लिखावट उसकी लिखावट से बिल्कुल अलग लग रही थी. वह लिखावट नमन को बिल्कुल समझ नहीं आ रही थी. नमन को जिज्ञासा हुई. उसने पूछ ही लिया- 'मनोज भैया, आपका कौन से विषय का पेपर है? आप ये क्या लिख रहे हैं?'

'अंग्रेजी का' मनोज का जवाब सुनकर नमन सोचने लगा कि इतने कठिन होते हैं अंग्रेजी के अक्षर. मुझे भी अगले साल इन्हें पढ़ना-लिखना होगा. अगले दिन नमन कक्षा शिक्षक श्री हेमलाल साहू जी के पास गया. साहू जी समझ गये कि नमन कुछ पूछना चाह रहा है. बोले - 'क्या बात है नमन...कोई समस्या..?'

नमन ने अपनी पूरी बात शिक्षक को बता दी. साहू जी ने नमन को समझाया - 'इसमें घबराने की कोई बात नहीं है. अंग्रेजी भी एक विषय ही है. इसे भी सीख जाओगे. घबराओ मत. अपनी मेहनत पर भरोसा रखो.'

छठवीं में श्री बलराम सिन्हा नमन के अंग्रेजी अध्यापक हुए. वे कर्मठ, निष्ठावान व कर्तव्यपरायण शिक्षक थे. श्री सिन्हा की अध्यापन-शैली से नमन का अंग्रेजी से डर कम हुआ. कक्षा के स्तर के मुताबिक ग्रामर में उसने अपनी मजबूत पकड़ बनाये रखी. कोई समस्या होती

तो अपने शिक्षकों से पूछ लिया करता था शिक्षक भी उससे खुश रहते थे. इस तरह नमन ने अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी कर ली.

अब हाई स्कूल पढ़ने की बारी आई. उसके माता-पिता अब उसे पढ़ाना नहीं चाहते थे. घर में गरीबी थी. खाने के लाले पड़ने लगे थे. थोड़ी सी कृषि-भूमि व मजदूरी ही उनके जीवन-निर्वाह का स्रोत था. नमन की दादी ने नमन को आगे पढ़ाने की बात कही. नमन के पिता ने अपनी माँ के कहने पर घर की एक बड़ी थाली को गिरवी रखकर नमन की स्कूल फीस का इंतजाम किया. हाईस्कूल में नमन का एडमिशन हुआ. नमन अपनी पढ़ाई में जुट गया. हाईस्कूल में श्री परसराम खरांशु जी ने नमन को अंग्रेजी पढ़ाई. नमन उनसे बहुत प्रभावित हुआ. ग्रामर का स्वाध्याय भी जारी रखा. उसने हाईस्कूल की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की. प्रथम श्रेणी के लिए चार अंकों की कमी रह गई.

अब नमन कक्षा ग्यारहवीं में दाखिल हुआ. स्कूल दूसरे गाँव मे था. बच्चे व शिक्षक सभी अपरिचित थे. यहाँ पहली बार एक शिक्षिका वायलट डेनियल, उसकी अंग्रेजी-शिक्षिका हुई जो मलयालम भाषी थी उनकी हिन्दी पर पकड़ कम थी, पर अंग्रेजी बहुत ही अच्छी थी. अपनी प्रतिभा के चलते नमन अंग्रेजी-शिक्षिका का प्रिय विद्यार्थी हुआ. नमन उनका खूब सम्मान करता था. ग्यारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की बारहवीं में द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ. शिक्षिका ने नमन के अंग्रेजी विषय के अंक देखकर उसे बी. ए. संकाय में अंग्रेजी साहित्य पढ़ने का सुझाव दिया. शिक्षिका ने उसे अंग्रेजी की कुछ पुस्तकें भी दीं.

बारहवीं कक्षा के बाद आगे कॉलेज की पढ़ाई मुश्किल थी. सो नमन ने शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में एडमिशन ले लिया. इसी सत्र में उसने अपनी रुचि के चलते स्वाध्यायी छात्र के रूप में बी. ए. प्रथम वर्ष का परीक्षा फॉर्म भरा. अंग्रेजी साहित्य, हिन्दी साहित्य व समाज शास्त्र उसके चयनित विषय थे. बड़ी मुश्किल से उसने पुस्तकें खरीदी. अपनी टेक्निकल पढ़ाई के साथ उसने कॉलेज के अध्ययन का भी ध्यान रखा. अतिरिक्त समय निकालकर अंग्रेजी की पढ़ाई करता. दरअसल एक साधारण से गाँव की स्कूली पढ़ाई एवं उचित मार्गदर्शन के अभाव के चलते उसे अंग्रेजी साहित्य जैसे विषय के अध्ययन में कोई विशेष सहायता नहीं मिल पाई. नमन की रूचि अंग्रेजी अध्ययन के प्रति तब और बढ़ गयी, जब उसके ममेरे भाई ने चैलेंज किया -'भाई, तू कितनी भी अंग्रेजी जानता है, पर अंग्रेजी विषय लेकर ग्रेजुएशन की पढ़ाई कर ही नहीं सकता. इन सबको तू पढ़ लेगा, याद कर लेगा. मैं चैलेंज करता हूँ कि तू इसे पढ़ ही नहीं सकता.' तब नमन के मन में विचार आया कि कोई न कोई तो अंग्रेज़ी पढ़ता ही है, फिर वह भी क्यों नहीं पढ़ सकता? उसने मन ही मन तय कर लिया कि वह अंग्रेजी जरूर पढ़ेगा और सफल भी होगा. उसने पूरे मन से पढ़ाई शुरू कर दी. कई घंटों तक पढ़ाई में जुटा रहता. खेलना-कूदना बिल्कुल छोड़ ही दिया. कई बार तो उसे खाने-पीने की सुध नहीं रहती थी.

नमन का हौसला तब बुलंद हुआ जब उसने बी. ए. प्रथम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण की. दूसरे साल की पढ़ाई के साथ एक प्राइवेट इंजीनियरिंग कम्पनी में काम करने लगा. इससे खुद की पढ़ाई व घर की आर्थिक व्यवस्था में मदद मिली. फैक्ट्री से आने के बाद वह पढ़ाई में जुट जाता था. शारीरिक अस्वस्थता के चलते घर की आर्थिक व्यवस्था डगमगाने लगी, फिर भी जैसे-तैसे उसने अपनी पढ़ाई जारी रखी. कालेज का दूसरा साल भी निकल गया. बी. ए. अंतिम की पढ़ाई के दौरान एक ऐसा समय भी आया कि वह परीक्षा शुल्क जुटाने में असमर्थ था, तब उसके एक घनिष्ठ मित्र विजय ने उसे आर्थिक मदद की. इस साल उसने खूब मेहनत की. द्वितीय श्रेणी के साथ अपना ग्रेजुएशन पूरा किया. अब नमन ने एम. ए. अंग्रेजी करने का मन बना लिया. घर में निर्धनता तो थी ही, पर मेहनत-मजदूरी कर के भी वह अपना अध्ययन जारी रखना चाहता था. मेहनत की, परीक्षा दी. पर बदकिस्मती से नमन चार अंकों से फेल हो गया. छात्र-जीवन में पहली बार नाकामयाबी से सामना हुआ. उसे बहुत दुःख हुआ. घरवालों को भी अच्छा न लगा. नमन फिर परीक्षा की तैयारी में लग गया. परीक्षा में बैठा. परचा भी अच्छा गया. पर इस बार फिर एक अंक से दूर रह गया. माता-पिता ने उसका हौसला बढाने में कोई कमी नहीं की. नमन के कुछ मित्रों ने हतोत्साहित करने की कोशिश की - 'नमन, तू दो बार फेल हो गया यार इंग्लिश में, इसे छोड़. हिन्दी में ही कर ले, एम ए इंग्लिश में ही क्या रखा है. हिंदी भी अच्छा विषय है. अपनी भाषा है सरल है. हिन्दी से तुझे क्या परहेज है? '

“अरे नहीं मेरे भाई, हिन्दी से परहेज- वरहेज नहीं है. अगर मुझे हिन्दी से कोई तकलीफ होती तो मैं ग्रेजुएशन में हिंदी क्यों चुनता. ऐसा कुछ नहीं है, मैं पी.जी. इंग्लिश करना चाहता हूँ पहले. क्या मेरा ऐसा चाहना बुरी बात है?” नमन का जवाब था.

फिलहाल तो नमन का एक ही लक्ष्य था अंग्रेजी साहित्य में पोस्ट ग्रेजुएशन करना. दो बार असफलता का कटु स्वाद चख चुका नमन जी तोड़ मेहनत करने लगा. उसकी मेहनत रंग लाई. द्वितीय श्रेणी की कामयाबी के साथ उसने पोस्ट ग्रेजुएशन की डिग्री प्राप्त की. सबकी शुभकामनाएँ नमन के साथ थी. उसे सबका आशीष मिला. नमन ने अपनी सफलता का श्रेय अपने शिक्षक, माता-पिता व मित्रों को दिया. अब नमन के मन में शिक्षा के प्रति सेवा की भावना जागी. फिर उसने एक प्राइवेट कानवेंट स्कूल ज्वाइन कर लिया. सदैव अध्ययन व अध्यापन के प्रति सजग नमन आज एक अंग्रेजी अध्यापक है

लइका

रचनाकार - निखिल तिवारी

माँ के चूरी बाजे, छन - छन, छन-छन,
लइका ह लुक - लुक झाँके रे.

बाबू के गाड़ी बाजे टीं - टीं, टीं-टीं,
लइका सुन - सुन नाचे रे.

स्कूल के घंटी बाजे टन - टन, टन-टन,
लइका दउड़त भागे रे.

संगवारी मन घर मा झांके हूँ - हूँ, - हूँ - हूँ,
नेवता खेले के पारे रे.

पहेलियाँ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा " गब्दीवाला '

1.
न किसी भाषा का रस,
न हीं फलों का रस.
कौन सा रस, कर रहा है,
दुनिया को तहस-नहस.

2.
आसमान पर उड़ता जाए,
ऊपर-नीचे दाएँ-बाएँ.
श्यामल वर्ण मनमोहक,
धरती पर जल बरसाए.

3.
एक रासायनिक गैस जिसे,
सूँघने पर हँसी आती.
नाम इसका बतालाये जो,
होशियार बच्चा कहलाये वो.

4.

जून माह का तारीख एक,
प्रथम सप्ताह में रहता.
पर्यावरण सुरक्षा की बात,
हर कोई जरूर कहता.

5.

तीन अक्षरों का मेरा नाम,
प्रथम कटे तो मैं हाथी.
मध्य कटे तो बनूँ काम,
अंत कटे तो मैं कौआ साथी.

उत्तर :--- 1. कोरोना वायरस 2. बादल 3. नाइट्रस आक्साइड 4. पाँच जून 5. कागज.

My online classes

Poetess - Devika sahu

Nowadays I get up at six in the dawn,
My alarm clock wakes me every morn,
I start rummaging the videos in my phone,
My online classes helps me to study on my own,
I can learn my lessons on the website cgschool.in,
All I have to do is to type my number and login,
My teacher has checked homework online and remarked that how I did,
You see now I am a new era kid,
Although I can't go to school as it's temporarily lock down,
But I see my friends in our online classes every noon,
Now my everyday classes seems to be really interesting,
My online teachers clear my doubts,
have learned to search online about everything,
My studies haven't stopped even in such tough days,
I am grateful to my teachers who have found a way always.

पंचतंत्र की कथाएं

सियार और ढोल

किसी समय दो राजाओं का आपस में युद्ध हुआ. युद्ध समाप्त होने के पश्चात बची - खुची सेनाएँ अपने - अपने नगरों को लौट गईं. युद्ध के समय राजाओं का यशगान करने और सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के उद्देश्य से चारण, वीरता की गाथाएँ सुनाते थे. साथ - साथ वे ढोल आदि भी बजाते थे. ऐसा ही एक ढोल उस युद्ध भूमि में रह गया था.

समय बीतने के पश्चात वहाँ बहुत पेड़ - पौधे और झाड़ियाँ उग आईं. वहाँ एक छोटा वन प्रांत ही बन गया. कभी जब तेज पवन बहती तो झाड़ियाँ ढोल से टकरातीं और ढम - ढम की ध्वनि उत्पन्न होती थी. यह ध्वनि विचित्र और भयावह लगती थी.

प्रायः एक सियार उस वन क्षेत्र में विचरता था. एक दिन उसने ढोल की तीव्र ध्वनि सुनी. उसने सोचा, अवश्य ही यह किसी बड़े हिंसक जीव की बोली है. उसके मन में उस जीव के बारे में जानने की तीव्र उत्सुकता उत्पन्न हुई. वह छुपता - छुपाता उसके कुछ निकट चला गया. सियार देखना चाहता था कि वह प्राणी कैसा दिखता है, वह उड़ता है अथवा दौड़ता है.

सियार एक घनी झाड़ी के पीछे से ढोल पर दृष्टि गड़ाए, दम साधे बैठा रहा. एकाएक उसने देखा कि एक गिलहरी उस ढोल पर कूदी. उसके कूदते ही "ढम" की एक ध्वनि गूँजी. इसका उस गिलहरी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा. वह ढोल पर बैठी आनंद से फल कुतरती रही.

यह देखकर सियार के मन में भी साहस उत्पन्न हुआ. वह दबे पाँव ढोल की ओर बढ़ा. उसे सूँघकर, छूकर देखा. उसे उस जीव का कोई अंग दिखाई नहीं पड़ा. एकाएक पवन के झोंकों से टहनियां हिलने लगीं और ढोल पर आघात होने लगे. "ढम - ढम" की गंभीर ध्वनि उत्पन्न हुई और सियार चौंककर पीछे जा गिरा.

उसने कहा, "ओह! यह उस जीव का बाहरी आवरण है और वह अवश्य ही इसके भीतर रहता है. ऐसा प्रतीत होता है वह बहुत मोटा होगा. उसके शरीर में मांस भी बहुत होगा तभी इसकी बोली इतनी भयावह और तीव्र है. "

इसी प्रकार चिंतन करते हुए वह अपनी माँद में लौट आया. वहाँ पहुँचते ही उसने अपनी पत्नी को पुकारा, "ओ भाग्यवान! सुनती हो, आज मैंने तुम्हारे लिए स्वादिष्ट भोजन ढूँढ़ा है. "

सियारनी उत्सुकतापूर्वक बाहर निकली और पूछा, "ढूँढ़ा है का क्या अर्थ है, तुम उसे मारकर क्यों नहीं लाए?"

सियार ने कहा, अरी मूर्खा! यदि मैं ऐसा प्रयत्न करता तो वह भाग जाता. वह प्राणी एक बड़े आवरण के भीतर छुप कर रहता है. उसे पकड़ता तो वह दूसरी ओर निकल जाता. उसे प्राप्त करने के लिए हम दोनों को युक्तिपूर्वक यत्न करना होगा.

रात्रि में चंद्रोदय होने के उपरांत सियार और उसकी पत्नी दोनों उस ढोल के निकट पहुँचे. वायु के प्रवाह के कारण हिलती हुई टहनियाँ बार-बार ढोल से टकरा रही थीं. इससे तीव्र ध्वनि उत्पन्न हो रही थी. रात्रि की निस्तब्धता में यह ध्वनि वातावरण को भयावह बना रही थी.

दोनों उस ढोल के एक-एक सिरे की ओर बैठ गए और ढोल में लगे सूखे चमड़े को दाँतों से चीरने का यत्न करने लगे. बड़े परिश्रम के उपरांत चमड़े में इतना स्थान बन गया कि वे अपने पंजे उस में घुसा सकें. उन्हें पूर्ण विश्वास हो चला था कि अब वे स्वादिष्ट भोजन प्राप्त कर ही लेंगे.

उन्होंने उस ढोल के भीतर एक साथ अपने पंजों को डाल दिया. लेकिन हाय! यह क्या? भीतर तो कुछ भी नहीं था. दोनों अपना मुँह लटकाए अपनी माँद में लौट आए.

सच है, कोई चीज हमेशा वैसी नहीं होती जैसी वह दिखाई पड़ती है.

पढ़े ला आबे पाठशाला मा

रचनाकार - नंद कुमार सिंह

स्कूल खुल गे हे नोनी बाबू
पढ़े ला आबे पाठशाला मा
तहुं आबे अपन संगे संगे
मीना अऊ सीमा ला लानबे

खाये बर भात मिलही
पहिरे भर फराक
चढ़े बर साइकिल मिलही
पढ़े बर किताब

पढ़ई कर संगे संगे
बागवानी काम सीखबो
पेड़ पौधा लगाके
पर्यावरण ला बचाबो

नमामि गंगे

रचनाकार - अविनाश तिवारी

हे गंगा मां कलुषहरणी,
विष्णुपदी पापविमोक्षणि,
विनती अब स्वीकार करो.
हम भटके मानव तेरी शरण में,
मां जनगण का उद्धार करो

जब अवतरित हुई गंगा,
भगीरथ ने मां कहके पुकारा था.
धरा को निर्मल करने
माता ने अमृत बहाया था.

मां तुमने हमें तृप्त किया
आँचल जो तेरा पाया.
निज स्वार्थों में पड़कर मानव ने
तुझ पर कलंक लगाया.

हलाहल घोलते कारखाने,
तेरे अन्तस् में समाए जाता है
पापियों का पाप धुला,
तेरा रूप बिखर-सा जाता है

तेरे पावन चरणों में मां
शीश हम नवाते हैं
शुद्ध करेंगे तेरा आंगन
शपथ यही उठाते हैं
हम शपथ यही उठाते हैं.

गाँधी

रचनाकार - योगेश कुमार ध्रुव "भीम"

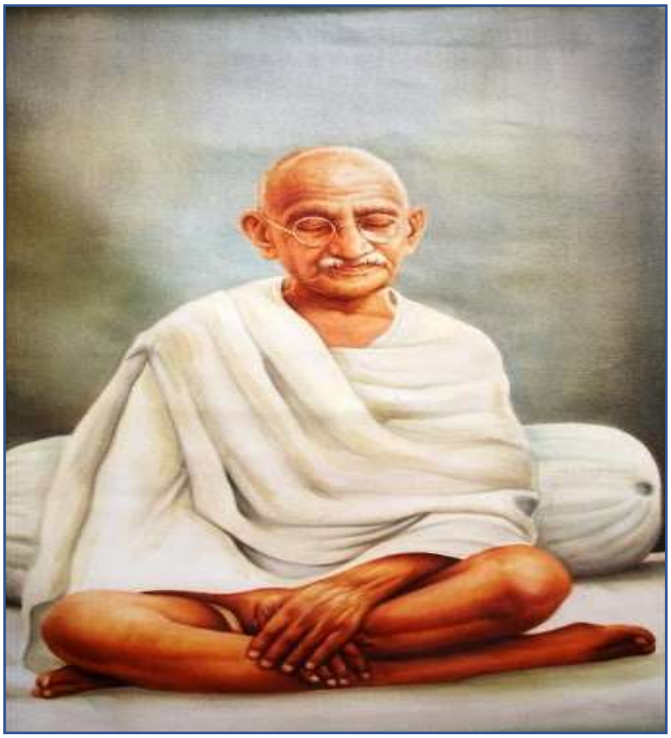

ये गाँधी की धरती है,
राम रहमान भी बसते है,
साफ नियत भी बनते है,
ये गाँधी के चश्मे से,
हाथ थामे जो डंडे को,
नेक पथ पर चलते है,
ओढ़े जो खादी को,
सत्य अहिंसा बोल बोलते है,
कमर में लटके घड़ी जो,
समय की पाबंद बनते है,
हाथ मे रखे गीता वो
समरसता का पाठ पढ़ाते है,
तेरे तीन ये बंदर जो,
न कह सुन न देख बुराई को,
ये इसको अपनाता है,

गाँधी के पथ पर वो चलता है,
ये फकीरी तेरे जीवन तो,
स्वच्छता की राह बताते है,
आज गाँधी की जरूरत है,
फैले भ्रष्टाचार मिटाने को,
ये गाँधी की धरती है
जहाँ राम रहमान बसते है,

गोदना कला से निर्मित मास्क व दस्ताने

रचनाकार - कुमारी काजल ठाकुर

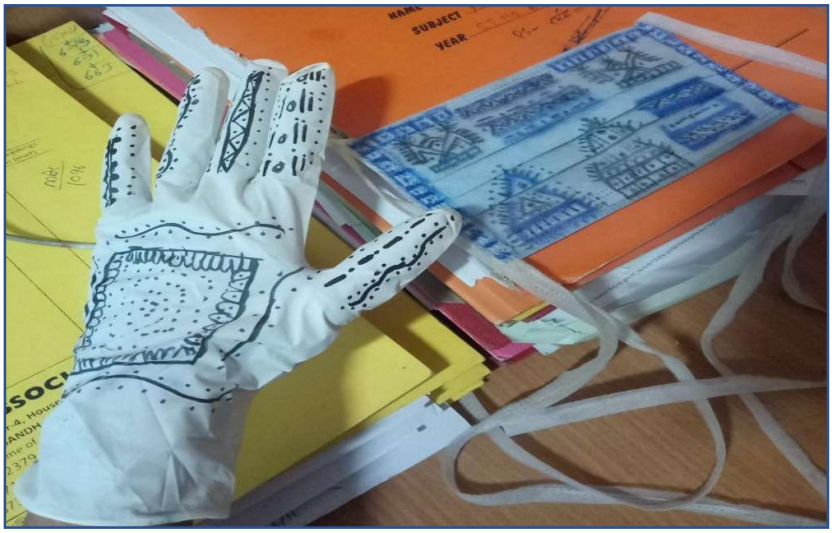

श्रीमती रजनी शर्मा व्याख्याता रायपुर छत्तीसगढ़ मार्गदर्शन में कुमारी काजल ठाकुर द्वारा खुद बनाया गया है. जो शासकीय विद्यालय मायाराम सुरजन चौबे कालोनी में अध्ययनरत है. कोरोना काल में युवाओं के बीच यह बेहद पसंद आ रहा हैं. भविष्य में यह छत्तीसगढ़ की संस्कृति गोदना कला की पहचान बन सकती है.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

उस दिन बहादुर अपनी माँ के साथ घर की साफ सफाई में लगा हुआ था. दीवारों पर और छप्पर के नीचे मकड़ी ने जाले बना लिए थे.

एक लंबी छड़ी में झाड़ू बांधकर वह जाले निकालने की कोशिश कर रहा था.

अचानक उसने देखा, छप्पर और दीवार के बीच की खाली जगह में बहुत सा घास - फूस जमा हो गया है. उसने अपनी झाड़ू से घास-फूस के ढेर को दूसरी ओर आँगन में गिरा दिया. तभी अचानक उसे चिड़ियों की तेज चहचहाहट सुनाई दी. उसने खिड़की से झांक कर बाहर देखा.

घास-फूस का जो ढेर बाहर गिरा था वह दरअसल चिड़ियों का घोंसला था. चिड़ियों के दो छोटे-छोटे बच्चे भी घोंसले के साथ गिर पड़े थे. उन बच्चों के पंख तो निकल आए थे पर वे उड़ नहीं पा रहे थे. बच्चों के साथ की दोनों चिड़ियाँ बच्चों की माँ और पिताजी थे उन दोनों ने चीख - चीख कर आसमान सर पर उठा लिया था. वे दोनों मजबूर थे. अपने बच्चों को उठाकर कहीं ले जा नहीं सकते थे

यह दृश्य देखकर बहादुर का मन दुःख और पश्चाताप से भर गया.

टेकराम ध्रुव 'दिनेश' व्दारा पूरी की गई कहानी

बसेरा

बहादुर ने गिरे हुए घोंसले के पास जाकर देखा कि ऊँचाई से गिरने के कारण चिड़िया के बच्चों को थोड़ी चोट लग गई है. उनके शरीर में खरोंच के निशान दिख रहे थे. अनजाने में हुई इस घटना से बहादुर का मन दुःख और पश्चाताप से भर गया. उसने दोनों बच्चों को घोंसले सहित घर के अंदर लाकर एक टोकरी में कपड़े का बिछौना बनाकर रख दिया. चोटग्रस्त स्थान पर दवा लगाकर उन्हें छोड़ दिया. बहादुर ने टोकरी के पास थोड़े-से चावल भी रख दिए. बच्चों के माता- पिता अभी तक चीख- चीख कर आसमान सर पर उठाए हुए थे पर थोड़ी देर में वे शांत हो गए

अब बहादुर ने टोकरी को खिड़की के पास रख दिया,पास ही कटोरियो में चावल के दाने और पानी भी रख दिए.

अब चिड़ियों के बच्चों और उनके माता पिता का डर खत्म हो गया था और वे बहादुर के दोस्त बन गए.

बहादुर को खेलने के लिए चिड़ियों के रूप में नए दोस्त मिल गए. वह रोज उनके साथ खेला करता. कुछ दिनों बाद जब एक सुबह बहादुर टोकरी के पास गया तो उसने देखा कि चिड़िया और उनके बच्चे वहाँ नहीं है, वह समझ गया कि वे उड़ गए हैं. बहादुर अब भी रोज सुबह उसी खिड़की के पास चावल के दाने व पानी रखता है. रोज़ कई चिड़ियाँ आतीं हैं और दाना चुगकर उड जाती हैं. रोज सुबह चिड़ियों की चहचहाहट से घर गूँज उठता है. बहादुर को बहुत सारी चिड़ियाँ अब दोस्त के रूप में मिल गई हैं.

प्रियंका सिंह व्दारा पूरी की गई कहानी

पश्चाताप

बहादुर की मां उसे देखकर समझ गईं कि वह बहुत दुखी है. उन्होंने बहादुर को अपने पास बुलाया और प्यार से कहा - बेटा तुमने जानबूझकर चिड़ियों का घोंसला नहीं तोड़ा है, अब हमें यह सोचना है कि हम कैसे इनकी मदद कर सकते हैं.

बहादुर ने कुछ देर सोचा फिर घोंसले को सावधानी से उठा कर आंगन में लगे नीबू के पेड़ पर रख दिया. पहले तो चिड़ियों ने डरकर बहुत शोर मचाया परंतु फिर उन्हें एहसास हो गया कि अब वे सुरक्षित हैं.. इन दिनों बहादुर के स्कूल की छुट्टियाँ चल रहीं थीं. अब चिड़ियों के बच्चों के साथ खेलना बहादुर का रोज का काम हो गया.

बच्चों के माँ बाप भी निश्चिंत होकर भोजन की तलाश में बाहर चले जाते. बहादुर चिडियों के उन बच्चों के साथ खेलता और उन्हें दाना भी खिलाता. अब चिड़िया के बच्चे बड़े होने लगे थे. उनके पंख थोड़े और बढ़ गए थे. अब बच्चे खुद आँगन में उड़ने की कोशिश करने लगे थे. बहादुर को आभास होने लगा था, कि अब वे ज्यादा दिन उसके साथ नहीं रहेंगे. यह सोचकर वह दुखी हो जाता. बहादुर ने उन बच्चों के साथ अपनी ढेर सारी फोटो भी लेकर अपने पास संभाल कर रख ली. एक दिन बहादुर आँगन में बैठा था तभी चिड़िया और उनके बच्चे आकर उसकी गोद में बैठ गए और चहकने लगे. बहादुर को ऐसा लगा जैसे कि वे उसे धन्यवाद दे रहे हों और जाने की अनुमति मांग रहे हों. उसने प्यार से उन्हें उठाया सहलाया और कहा, अलविदा दोस्तों.

वे सभी उड़ गए वह उन्हें देखता रहा. उनके जाने से बहादुर बहुत दुखी हो गया. तब माँ ने उसे समझाया कि तुमने तो उनकी जान बचाई है वे तुम्हें कभी नहीं भूलेंगे. और वे तुमसे मिलने जरूर आएँगे. तुम उनके लिए रोज खाना और पानी रखा करना. बहादुर ने वैसा ही किया फिर क्या था. तोता मैना, कबूतर, गौरैया, कोयल कौवा सभी तरह के पक्षी छत पर आने लगे, और बहादुर को बहुत सारे दोस्त मिल गए.

संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी

बहादुर का प्रायश्चित

यह दृश्य देखकर बहादुर का मन दुःख और पश्चाताप से भर गया. वह सोचने लगा कि अनजाने में चिडियों का घोंसला गिराकर उसने जो गलती की है उसके प्रायश्चित के लिए चिडियो की मदद करनी चाहिए. बहादुर ने यह सोचकर दोनों बच्चों को प्यार से उठाया और उन्हें घर के अंदर ले आया. उनके लिए दाना-पानी की व्यवस्था कर दी. बहादुर अब प्रतिदिन परिवार के सदस्यों की तरह उसका ध्यान रखने लगा. बहादुर की माँ भी उन बच्चों का ध्यान रखतीं. कुछ दिनों बाद चिड़िया के दोनों बच्चे बड़े हो गए और उनके पंख भी मजबूत हो गए, अब वे बच्चे उड़ने के लिए तैयार हो रहे थे.

बच्चों के माता पिता प्रतिदिन उन्हें उड़ने का अभ्यास करवाने लगे थे और बहादुर उन्हें उड़ता देखकर खुश होता. थोड़े दिनों में वे दोनों बच्चे उड़ना सीख गए. फिर एक दिन वह चिड़ियाँ परिवार सहित बहादुर के घर से उडकर चली गईं.

बहादुर अपने घर के आँगन में अब भी चिड़ियों के लिए दाना-पानी रखता है जिससे कई अन्य चिड़ियाँ भी वहाँ दाना चुगने आने लगीं हैं. बहादुर इन चिड़ियों को देखकर बहुत खुश रहता है.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

फटी कमीज़

उस दिन खेलकूद के कालखंड में दसवीं और ग्यारहवीं कक्षा के बच्चों के बीच कबड्डी का मैच चल रहा था. दसवीं की टीम कुछ कमजोर पड़ रही थी. ऐसे में इस टीम के दीपक के पैर में अचानक मोच आ गई. दीपक बहुत अच्छा खेल रहा था.

अब सवाल था उसकी जगह किसे लिया जाए.

दसवीं के सारे बच्चे चिल्लाने लगे, "आनंद... आनंद..."

आनंद डरकर पीछे हो गया. पर उसके साथी उसका हाथ पकड़कर उसे खींचने लगे. आनंद प्रतिरोध करता रहा. इस खींचतान में अचानक चर्रऽऽऽऽऽ की आवाज़ के साथ आनंद की कमीज़ बांह से फट गई.

एकाएक सभी सहम गए. उनके हाथ ढीले पड़ गए. आनंद ने गर्दन घुमाकर अपनी कमीज़ देखी. उसकी आंखें डबडबा गईं. उसे हमेशा इसी बात का डर रहता था कि खेलते हुए कहीं कपड़े न फट जाएं. और आज वही हो गया. उसने किसी से कुछ न कहा,अपना बस्ता उठा सर झुकाए मैदान से बाहर निकल गया.

घर लौटते हुए उसे लग रहा था कि ये रास्ता कभी खत्म न हो.

पिताजी के गुज़र जाने के बाद एक बरस में ही घर की दशा बहुत खराब हो चुकी थी. आय का कोई साधन न था. जरूरतों ने एक - एक कर मां के गहने बिकवा दिए थे. कुछ खरीदने की कल्पना करना भी मुश्किल था. ऐसे में आज उसकी ये कमीज़ फट गई.

उसकी आंखों में मां का उदास चेहरा घूम रहा था. उसने तय कर लिया कि माँ को इसका पता न चलने देगा.

घर पहुंचते ही उसने अपनी कमीज़ उतारी और तह लगाकर बस्ते में ही रख लिया.

अब इसके बाद क्या हुआ होगा, इसकी आप कल्पना कीजिए और कहानी पूरी कर हमें ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

नन्हें-मुन्हें बच्चे

रचनाकार -नंदिनी राजपूत

नन्हें-मुन्हेंबच्चे हम,
रोज स्कूल जाते हैं.
अज्ञानता का अँधेरा मिटाने,
ज्ञान का दीपक जलाते हैं..

जब हम अ से अ: पढ़ते हैं,
स्वर को स्वर से गढ़ते हैं.
क से ज्ञ पढ़कर ही,
पुस्तक का पठन करते हैं..

हमारे नन्हे कंधों पर,
देश का भार हैं.
हमसे ही पूरी दुनिया,
हमसे ही पूरा संसार हैं..

हमसे ही स्कूल की आन हैं,
हमसे ही स्कूल की शान हैं.
हमसे ही शिक्षा हैं,
हमसे ही शिक्षक की पहचान हैं.

नई इबारत लिख जाना

रचनाकार -रजनी शर्मा बस्तरिया

कल थामा था जहाँ हमारा हाथ,
माउस, की - बोर्ड के संग हो लेना
मानीटर में चमकते अक्षरों के साथ,
आँखों की स्लेट में सपने लिख लेना.

बदलते वक़्त की मानकर बात,
नवप्रयास की अगुआई कर लेना.

जब कभी शिखर पर पहुँचो
नींव के पत्थरों को भी याद कर लेना.
मन आकुल होकर जब जाये थक,
दे आवाज़ हमें पुकार लेना.

साहस के बस्ते में ज्ञान के साथ,
भविष्य की नई इबारत लिख जाना.

All Likes

Poet- Tikeshwar Sinha " Gabdiwala "

All likes,
Blowing air.
Hot and cold,
Soft and fair.

Air likes itself,
Always to blow.
A tree waves,
Fast and slow.

In the air,
A bird enjoys.
Takes the joy,
By girls and boys.

It's true,
A nice flower.
Has always,
Its own power.

Let you come on,
O my dear !
Laugh aloud,
Clap and cheer.

एक था अनिर्बान

रचनाकार - मनोज कुमार शराफ़

कहानी शुरू होती है एक कक्षा से, जिसमें लगभग 50 बच्चे पढ़ते थे. मुझे उस कक्षा को गणित पढाने का आदेश इस नए सत्र में मिला. अभी मैं बच्चों से घुलने मिलने तथा उन्हें समझने की कोशिश कर रहा हूँ.

चूंकि कक्षा काफी बड़ी थी, इसलिए मुझे लगा सभी बच्चों को समझने में वक्त लगाने के बजाय पढ़ाई की शुरुआत कर देनी चाहिए.

मैंने अपने हिसाब से थोड़ा रुचिकर विषय वस्तु लिया ताकि बच्चे मेरी ओर एवम् गणित की ओर आकृष्ट हो सकें. मैं शायद यह भी चाहता था कि, उनके पिछले गणित शिक्षक के बजाय मेरा रुआब उन पर ज्यादा पड़े. खैर जब में कुछ सवालों को लेकर बात करते हुए उसे बोर्ड पर बना रहा था ताकि बच्चे उसे अच्छी तरह समझ जाए. तभी मुझे कक्षा में ज़ोर से हंसने की आवाज सुनाई दी.

मैंने देखा, एक लड़का जोर-जोर से हंस रहा था. जब मैंने हंसने कारण जानना चाहा तो वो चुप हो गया. उसके पास बैठे बच्चों ने बताया कि उसका नाम अनिर्बान है और वह न केवल बीच-बीच में हँसता है बल्कि अपने आस पास बैठे बच्चों को परेशान करता है. मुझे यह भी पता चला की उसे बोलने में और चलने में काफी परेशानी आती है. जब भी मैं पढ़ा रहा होता और

उसे कुछ पूछता वह उत्तर देने में इतनी देर लगाता कि मेरा धैर्य टूट जाता. वह उत्तर देने के लिए खड़े होने में ही 30 सेकेंड लगा देता

. मैंने उसे पूछना ही छोड़ दिया पर उसका हँसना और कक्षा में बच्चों को गाहे बे गाहे परेशान करना जारी था. एक दिन उसने चलती कक्षा में जोर-जोर से हंसना चालू कर दिया मुझे हंसने का कोई कारण नजर नहीं आ रहा था. मुझे उसका इस तरह कक्षा में व्यवधान उत्पन्न करना खल गया

. क्योंकि, मैं अपना काम बड़ी तल्लीनता से कर रहा था. बच्चे भी ध्यान देकर सवालों को हल करने लगे थे. फिर क्या था मैं, आपे से बाहर हो गया. मैंने सीधे प्रिंसिपल के कमरे की ओर रुख किया. मेरी भाव भंगिमा देखकर ही उन्हें आभास हो गया कि मैं बहुत गुस्से में हूं. मैंने उनसे कहा कि जब तक अनिर्बान उस कक्षा में है मैं उस कक्षा में नहीं पढ़ा सकता. मैंने उन्हें सारी बात बताई.

उन्होंने मुझे बैठने को कहा, एक गिलास पानी पीने को कहा, साथ थोड़ा शांत होने को भी कहा. मैंने उनकी बात तो मानी पर मेरा क्रोध शांत नहीं हुआ था. प्रिंसिपल सर ने चपरासी को बुलाकर उसे अनिर्बान की मां को बुला लाने को कहा. मुझे पहली बार पता चला कि अनिर्बान की मां उसके स्कूल में रहते तक स्वयं भी स्कूल में रहती है. वो आयीं, सर ने उनका परिचय कराया. उनका पूरा नाम मीना डे खान था.

जब मिसेस खान को बताया गया कि उनके बेटे की वजह से मैं बहुत परेशान हूं. उन्होंने गर्दन नीची कर लीं हाथ जोड़े, कुछ कहा नहीं. सर ने बताया अनिर्बान को जन्म के समय कम आक्सीजन मिलने के कारण कई शारीरिक परेशानी है. उसकी मां यानी मिसेज खान को जब पता चला कि उनका बेटा सामान्य बच्चों की तरह चल -फिर नहीं सकता. उसका मतिष्क का विकास भी धीमा रहेगा. उन्होंने कई फैसले लिए, पहला वह अब कोई गर्भ धारण नहीं करेंगी ताकि उसके चलते अनिर्बान की परवरिश में कमी न हो जाए. उसे आम बच्चों की तरह एक स्कूल में पढ़ाएंगी.

जब तक अनिर्बान स्वयं से स्कूल के सभी गतिविधियों में भाग न लेने लगे और स्वयं स्कूल से घर आने जाने न लगे, वो उसके साथ स्कूल आएंगी और उसका ख्याल रखेंगी. प्रिंसिपल सर से अनुरोध करके वह छोटी कक्षाओं में उसकी साथ बैठती थी. और कभी- कभी वो कुछ कक्षाओं को अवैतनिक पढ़ाती भी हैं. जब ये बातें हो रही थी तब मिसेज खान के कहने पर अनिर्बान को बुलाया गया. जब उससे पूछा गया कि वो बार-बार हंसता क्यों है, और क्या उसे दूसरे कक्षा में पढ़ना है. उसने बड़ी मुश्किल से जो बताया. जिसका अर्थ कुछ इस प्रकार था,उसे मेरा पढ़ाना पसंद था. उसे कोई बात जब समझ में आती है तो, वह यह सोचकर हंसता है कि इतनी सी बात उसे पहले समझ में क्यों नहीं आयी. वह अपने साथियों को बताना चाहता है

कि, अब वह पहले से जल्दी समझने लगा है और उन्हें भी समझा व बता सकता है. सबसे बड़ी बात वह मुझे बेहद पसंद करता है.

अब सिर नीचे करने की बारी मेरी थी. मैंने कुछ नहीं कहा और अनिर्बान को लेकर कक्षा की ओर चल पड़ा. रास्ते में सोच रहा था मैं भी कितना बुद्धू हूं और चीजों को कितनी देर में समझता हूं.

शहीद वीर नारायण सिंह

रचनाकार - योगेश कुमार ध्रुव "भीम"

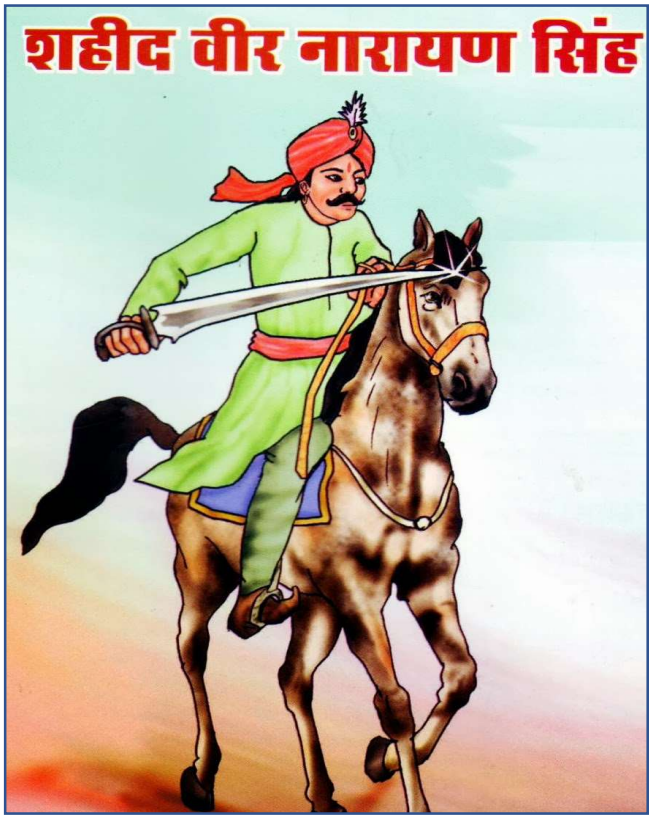

छत्तीसगढ़ के चन्दन मिटटी,
वीर सपूत को यह जन्म दिए,
सोना स वह चम -चम चमके,
वीर नारायण वीर के गुंजन से
सोनाखान की धुली को वन्दन है..

घटाघोप वह अकाल भयंकर,
कालग्रास में मानो ग्रस रहा,
त्राहि -त्राहि प्रजा की रुदन,
अश्रु सा नित तेज धार चले,
न सह सका वीर के सीना जो,
वीरो स वीर नारायण सिंह जागे..

प्रजा हित हितैषी बनकर,
वीनिती कर अन्न झोली में,
निष्ठुरता ये तो माँग न मानी,
अन्न कोठी व्यापारी के लूट,
भर -भर झोली बाँटे प्रजा में,
वीरो स वीर नारायण सिंह जागे..

दुष्टों की दुष्टता ये फिरंगी चाल,
न पकड़ सका वह घेरा डाले,
सेना देखो वीर नारायण की,
तीर कमान वज्र समान हाथों में,
खूब लड़े गोली बारूद सेना से,
वीरो स वीर नारायण सिंह जागे..

खूब छकाते वह दौड़ भगाता,
फिरंगी के न पकड़ में आता,
दाँतो तले मानो वह चना चबाते,
छद्मवेषी गोरिल्ला वीर सेना जो,
वीरो स वीर नारायण सिंह जागे..

कर्मभूमि वह मर्मभूमि है मेरी,
मिटटी को हंस तिलक लगता हूँ,
आन बान की रक्षा हित मैं,
फंदे चूम हँसते गले लगता हूँ,
साक्षी बनी जयस्तंभ मेरी,
आज वही नया गीत दोहराता हूँ,
वीरो स वीर नारायण सिंह जागे..

प्रकृति की लीला

रचनाकार - महेन्द्र देवांगन माटी

देख तबाही के मंजर को, मन मेरा अकुलाता है.
एक थपेड़े से जीवन यह, तहस- नहस हो जाता है..

करो नहीं खिलवाड़ कभी भी, पड़ता सबको भारी है.
करो प्रकृति का संरक्षण, कहर अभी भी जारी है..

मत समझो तुम बादशाह हो, कुछ भी खेल रचाओगे.
पाशा फेंके ऊपर वाला, वहीं ढेर हो जाओगे..

करते हैं जब लीला ईश्वर, कोई समझ न पाता है.
सूखा पड़ता जोरों से तो, बाढ़ कभी आ जाती है..

संभल जाओ दुनिया वालो, आई विपदा भारी है.
कैसे जीवन जीना हमको, अपनी जिम्मेदारी है..

आओ हम वृक्ष लगाएं

रचनाकार - शशि पाठक

रो रो करुण पुकार है करती, जल, जंगल व जमीन.
इनके बिना जीवन है जैसे बिन पानी के मीन.
आओ हम वृक्ष लगाएं, पर्यावरण को बचाएं..

बहुत किया दोहन हमने, अब सोच समझ कर बढ़ना होगा.
व्यर्थ बहाओ न जल को, अब संरक्षण करना होगा.
सुख रहे बहते धारे सब, अब रोको न इनकी धार.
तरसोगे एक -एक बूंद को, जब सूखे की पड़ेगी मार.
आओ हम वृक्ष लगाएं, पर्यावरण को बचाएं..

बोया कम काटा ज्यादा, भावी चिंता है किसको.
श्वसन की वायु देते वही, हम काट रहे हैं जिसको.
फल, फूल, औषधि और संतुलन, का है ये आधार.
जंगल -जंगल आग लगी है, न बचेगा जग संसार.
आओ हम वृक्ष लगाएं, पर्यावरण को बचाएं..

चिर के अपना सीना देखो, धरा अन्न उगाती है.
सहती रहती है सबकुछ, हम सबका भार उठाती है.
नासमझी क्यों करते, धरती का कचरे से ये नाश.
पल भर में ये कर सकती है, जन जीवन का विनाश.
आओ हम वृक्ष लगाएं, पर्यावरण को बचाएं..

हरा भरा जीवन सुहावना, धरती की गोद हरी हो.
नदियाँ, पोखर, कूएँ तलैया, सब पानी से भरी हो
नवल पौधों को रोप करें, हर कोई ये काम महान.
तभी सुनहरा हो पाएगा, जनजीवन आसान.
आओ हम वृक्ष लगाएं, पर्यावरण को बचाएं..

Decision

Writer- Tikeshwar Sinha " Gabdiwala "

Triveni was a middle-aged woman. She became widow earlier. Her husband Gopal Verma was martyrdom as a soldier in the terrorist attack. So, Triveni had faced the punishment in her life. But satisfied of her life today. She was very happy to have a son like Shashank. Shashank was a self-employed. He was the owner of a petrol pump. His business was running well. He was earning money good.

Shashank got married this year. He was happy to get Geeta as a life partner. Triveni also made a good relationship with her daughter-in-law. Geeta also was so good that all liked her very much. Triveni tried always to keep Geeta happy. Geeta would take care Triveni also. Thus, it was a good family. All was running well.

But they fortune turned over. It happened that Shashank was died in the motor accident. Triveni was broken inside once again. Her past hit her again. She felt that her life was stayed at zero. She became very sad for Geeta because she knew that her daughter-in-law's world entirely had been destroyed. Geeta was seemed like the lifeless stone.

Today, sitting on chair, Triveni thought of Geeta that the Geeta was unimportant without Lord Krishna. She did not want to see the unfortunate life as Geeta again. So, she decided to present her real point to Geeta. But it was very hard to accept that for Geeta. Geeta felt that she was trapped of all. She was speechless. Finally, Triveni made Geeta hardly get ready for re-marriage. Today Triveni was very glad to see the Geeta's life was turned green once again.

नन्हे तारे

रचनाकार - विजय लक्ष्मी राव

आसमान पर निकले तारे,
देखो-देखो कितने सारे.
नन्हे- नन्हे कितने प्यारे,
मंद-मंद है सदा मुस्काते.
चमक-चमक कर हमें बुलाते,
नभ में जैसे मोती जड़े.
चाँद के स्वागत में खड़े,
रोज रात को आ जाते.
सारे नभ पर छा जाते,
प्रभात होते ही छिप जाते.

पर्यावरण बचाओ

रचनाकार - महेन्द्र देवांगन माटी

पेड़ लगाओ मिलके सभी, देते हैं जी छाँव.
शुद्ध हवा सबको मिले, पर्यावरण बचाव..

पर्यावरण विनाश से, मरते हैं सब लोग.
कहीं बाढ़, सूखा कहीं, जीव रहे हैं भोग..

जब-जब काटे वृक्ष को, मिलती उसकी आह.
भुगत रहे प्राणी सभी, ढूँढ रहे हैं राह..

सड़क बनाते लोग सभी, वृक्ष रहे हैं काट.
पर्यावरण विनाश कर, देख रहे हैं बाट..

पेड़ों से मिलती हवा, श्वासों का आधार.
कट जाये यदि पेड़ तो, टूटे जीवन तार..

माटी में मिलते सभी, सोना चाँदी हीर.
पर्यावरण बचाय के, समझो माटी पीर..

दो दिन की है जिंदगी, समझो इसका मोल.
माटी बोले प्रेम से, सबसे मीठे बोल..

जहाज आया जहाज आया

रचनाकार - कृष्ण कुमार ध्रुव

जहाज आया जहाज आया,
सब बच्चों के मन को भाया.
वो दूर नीले आसमान में,
चुन्नू-मुन्नू के गाँव में,
देखने में दिखता सफेद,
चाहे इसके रंग हो अनेक.
इसके दो पंख होते भारी,
सैर कराते दुनिया सारी.
हवा में ये तैरता,
सबको खुशियों से भर देता.
इसमें दो लगे है इंजन,
संकट में बचाता सबका जीवन.
पास हो या लंबी दूरी,
घंटों में कर देता है पूरी.
इसके चाल का कोई न पाए पार,
सबकी हो जाती है पीछे रफ्तार.
जमीन से कोसों दूर है चलता,
नहीं अपनी मंजिल से भटकता.
जहाज आया जहाज आया,
बच्चों के मन में ख़ुशियाँ लाया.

हमारे प्रेरणास्त्रोत - शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा

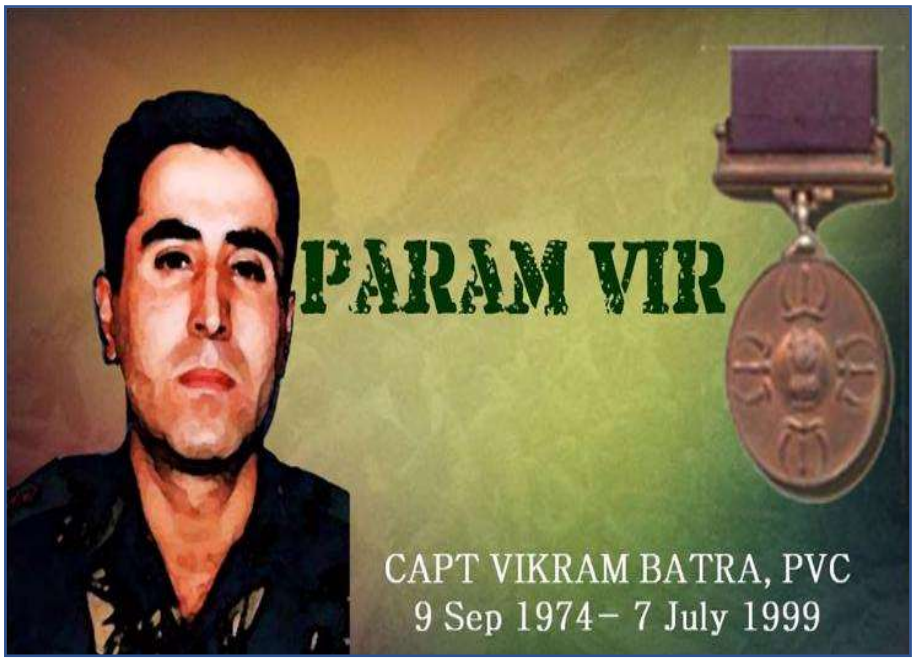

आज हम ऐसे वीर की कहानी सुनेंगे जिनके लिए निम्नलिखित पंक्तियाँ बिलकुल उपयुक्त हैं-

“जब जान किसी और की ख़तरे में होती है तो सीना ये अपना आगे करते हैं आँच माटी पर आती है तो सींच देते हैं अपने लहू से.”

हम बात कर रहे हैं कारगिल युद्ध के हीरो, परमवीर चक्र से सम्मानित कैप्टन विक्रम बत्रा की. विक्रम बत्रा का जन्म 9 सितम्बर 1974 को हिमाचल प्रदेश के एक बहुत ही ख़ूबसूरत शहर पालमपुर में हुआ. वे अपने माता पिता की जुड़वा संतानों में बड़े भाई थे. उनके पिता गिरधारी लाल बत्रा स्कूल टीचर थे. विक्रम बचपन से ही आर्मी ज्वाइन करना चाहते थे. उन्हें स्कूल के दिनों में बेस्ट एन.सी.सी.केडेट ऑफ़ नॉर्थ इंडिया अवार्ड मिला था. वे कराटे में ग्रीन बेल्ट चैम्पियन रहे.

विज्ञान विषय में स्नातक करने के बाद विक्रम का चयन सीडीएस के जरिए सेना में हो गया. जुलाई, 1996 में उन्होंने भारतीय सेना अकादमी देहरादून में प्रवेश लिया. दिसंबर 1997 में शिक्षा समाप्त होने पर उन्हें 6 दिसंबर 1997 को जम्मू के सोपोर नामक स्थान पर सेना की 13 जम्मू-कश्मीर राइफल्स में लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्ति मिली. उन्होंने 1999 में कमांडो ट्रेनिंग के साथ कई प्रशिक्षण भी लिए.

1999 में जब कारगिल में पाकिस्तानी घुसपैठ को लेकर तनाव बढ़ता जा रहा था. वे छुट्टियों में अपने घर पालमपुर गए हुए थे. 1 जून, 1999 को उनकी टुकड़ी को कारगिल युद्ध में भेजा गया. हम्प व राकी नाब स्थानों को जीतने के बाद उसी समय विक्रम को कैप्टन बना दिया गया. इसके बाद श्रीनगर-लेह मार्ग के ठीक ऊपर सबसे महत्त्वपूर्ण 5140 चोटी को पाक सेना से मुक्त करवाने का जिम्मा भी कैप्टन विक्रम बत्रा को दिया गया. बेहद दुर्गम क्षेत्र होने के बावजूद विक्रम बत्रा ने अपने साथियों के साथ 20 जून, 1999 को सुबह तीन बजकर 30 मिनट पर इस चोटी को अपने कब्जे में ले लिया.

विक्रम बत्रा ने इस चोटी के शिखर पर खड़े होकर रेडियो के माध्यम से एक कोल्ड ड्रिंक कम्पनी की कैच लाइन 'ये दिल माँगे मोर' को उद्घोष के रूप में कहा तो पूरे भारत में उनका नाम छा गया.

कुछ दिनों बाद वे दूसरे गोपनीय ऑपरेशन के लिए निकल पड़े जो कि 17000 फ़ीट की ऊँचाई पर था. यह पूरी पहाड़ी बर्फ़ से ढकी हुई थी और 80 डिग्री ढलान पर थी और दूसरी तरफ़ पाकिस्तानी सैन्य दल 16000 फ़ीट की ऊँचाई पर थे. कैप्टन विक्रम का कोड नेम 'शेरशाह' था जो पाकिस्तानी सैनिक भी जानते थे. उनके युद्ध कौशल की निपुणता का लोहा पाकिस्तानी भी मानते थे. दोनों तरफ़ से गोली -बारी हो रही थी. लड़ाई के दौरान एक विस्फोट में उनके जूनियर लेफ़्टिनेंट नवीन के दोनों पैर बुरी तरह ज़ख़्मी हो गए. जब कैप्टन बत्रा लेफ्टिनेंट नवीन को बचाने के लिए उन्हें पीछे खींच रहे थे तभी उनकी छाती में गोली लगी. अंत समय में वे 'जय माता दी 'कहते हुए वीरगति को प्राप्त हुए.

कारगिल के युद्ध में उनके कभी न भूले जा सकने वाले योगदान के लिए कैप्टन विक्रम बत्रा को सर्वोच्च सम्मान परमवीर चक्र से अगस्त 1999 को सम्मानित किया गया.

प्यारा हाथी

रचनाकार -अरविन्द कुमार गुप्ता

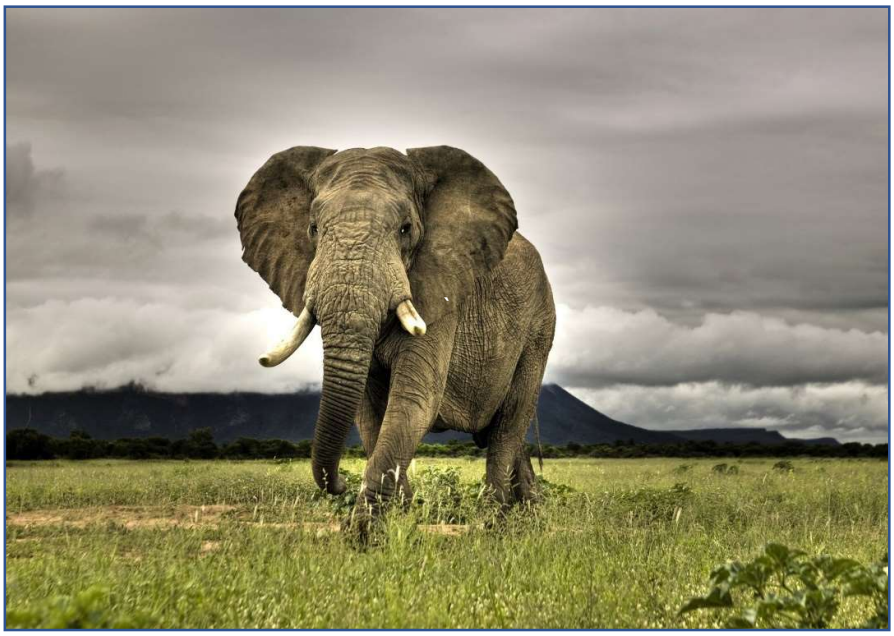

बचपन में देखा था, एक बड़ा सा जानवर
बड़ा सा शरीर, और बड़ा ताकतवर
लेकिन सबसे प्यारा और निराला था, ओ साथी
पापा ने बताया उसे बोलते हैं हाथी
हाथी मेरे साथी जैसे पिक्चर सबको भाती
पर कैसे जानवर की जान, यू ही चली जाती
खाना ढूँढती, उस भूखी माँ ने फल को चबाया
इंसानियत के पटाखे ने, उस जबड़े को उड़ाया
मरते दम तक उसने इंसान को, नुकसान नही पहुंचाया
उस बेजुबान ने,मानवता का पाठ पढ़ाया
तीन दिन तक टूटे जबड़े से, खड़ी रही पानी में
क्या बताऊँ तुम्हे, उस माँ की कहानी मै
हथनी और बच्चा दोनो गए स्वर्ग सिधार
बहुत बड़ा कर्जा, फिर हो गया हम पर उधार
इंसानियत तो मर गईं, अब इंसान कहा बच पायेगा

कोरोना, साइक्लोन, भूकंप और बाढ़ ही तो आएगा
अभी संभल जाओ,पृथ्वी का न तुम अपमान करो
पेड़, पंछी, जानवरों सबका तुम सम्मान करो
समय बीत जाएगा, तो फिर लौट के न आएगा
और ऐसा ही चलता रहा तो, 2020 हर साल आएगा

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

इस चित्र को देखकर भेजी गयीं जो कहानियाँ हमें प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

सुभाष राजवाड़े,शा. उ. मा. विद्यालय कनकी द्वारा भेजी गई कहानी

छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले के छोटे से गाँव कनकी का निवासी राजू और उसकी पत्नी उर्मिला अपने तीन बच्चों के साथ दिल्ली में रहते थे. यहाँ राजू एक नई बन रही कॉलोनी में राज मिस्त्री का काम करता और उर्मिला भी वहीं मजदूरी करती थी.

एक दिन यह समाचार मिला कि विश्व के अनेक देश कोरोना वायरस के संक्रमण से जूझ रहे हैं. कोरोना वायरस एक बड़ी महामारी का रूप ले चुका है. इसे काबू में करना बहुत मुश्किल होता जा रहा है. यह वायरस चीन के वुहान शहर से फैलना शुरू हुआ और अब अमेरिका, ईटली, फ्रांस चीन आदि देशों में वायरस से लाखों लोग संक्रमित हो गये हैं रोज हजारों लोगों की मौत हो रही है.

भारत में भी कोरोना वायरस के संक्रमित मरीज मिलने लगे तो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पूरे देश भर में लॉकडाउन घोषित कर दिया. लॉकडाउन में किसी को भी अपने घरों से बाहर निकलने की अनुमति नहीं थी. सारे निर्माण कार्य बंद कर दिए गये. रेल,बस, हवाई सेवाएँ बंद कर दी गईं. होटल, मॉल, मंदिर,मस्जिद, गुरुद्वारा आदि सार्वजनिक जगहें भी बंद कर दी गईं.

राजू जैसे लाखों मजदूर कमाने के लिएअपना गाँव छोड़कर शहरों महानगरों में रहते हैं और बरसात के पहले अपने गाँव लौट आते हैं. लेकिन इस बार लॉकडाउन ने ऐसे मजदूरों की हालत खराब कर दी. मार्च महीने में ही काम बंद हो गया. घर लौटना भी संभव नहीं था क्योंकि बसें,ट्रेन सभी बंद थे. राजू ने कुछ पैसे बचत के रूप मे जमा किये थे पर अब वह पैसे भी खत्म होने लगे. ढ़ाई महीने किसी तरह बीत गये.

फिर एक दिन राजू को टी वी समाचार से पता चला कि राज्य सरकार बाहर के राज्यों से मजदूरों को वापस घर लाने के लिए ट्रेन चलाने वाली है. राजू ने परिवार के लिए ट्रेन का टिकट बुक करवा लिया. एक सप्ताह बाद श्रमिक स्पेशल ट्रेन दिल्ली से रवाना हुई. अगले दिन रात को वे चाम्पा रेलवे स्टेशन पहुँचे. शासन के नियमानुसार राजू को परिवार सहित क्वारंटाइन सेंटर कोथारी में रहने कहा गया. वहां उन सभी का कोरोना टेस्ट भी हुआ. 14 दिनों की क्वारंटाइन अवधि के राजू सपरिवार अपने घर पहुँचा. तब उन सभी के चेहरों पर एक अलग ही खुशी झलक रही थी.

पल्लवी साहू द्वारा भेजी गई कहानी

लॉक डाउन में मज़दूरों की समस्या

जनवरी 2019 में मनोज अपने परिवार सहित छत्तीसगढ़ से जम्मू-कश्मीर मजदूरी करने गया था. वह बहुत गरीब था इसलिए मजदूरी कर के अपने परिवार का गुजारा करता था.

दिसंबर में इस प्रकार की खबरें आने लगीं कि चीन में कोरोना नामक एक वायरस की वजह से हड़कंप मचा हुआ हैं और चीन के वुहान शहर को पूरी तरह से बंद कर दिया गया है. इस वायरस के अन्य देशों में भी फैलने का खतरा था परंतु अभी भारत में सभी कार्य सामान्य रूप से चल रहे थे. इसी तरह वर्ष 2019 बीत गया.

अब कोरोना वायरस का कहर बढ़ता जा रहा था. मनोज अभी भी जम्मू कश्मीर में ही मजदूरी कर रहा था. जनवरी माह में कोरोना वायरस इटली, अमेरिका, ईरान और दुनिया के अन्य देशों में खतरनाक तरीके से फैल गया. वायरस के कारण रोज़ हजारो लोगों की मृत्यु होने की खबरें आने लगीं. मनोज के कई मजदूर साथी छत्तीसगढ़ वापस लौटने लगे पर मनोज वापस नहीं लौटा और वहीं काम करता रहा.

मार्च 2020 में भारत में भी कोरोना वायरस के मरीज मिलने लगे. संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए पूरे देश में लॉकडाउन लगा दिया गया. अब मनोज और उसका परिवार वही फँस गया. सभी मजदूरों को उनके घर पहुँचाने के लिये सरकार ने व्यवस्थाएँ कीं परंतु सरकार भी एक साथ कितने मज़दूरों को घर पहुँचाती. मनोज के साथ वहाँ रह गए अन्य मजदूर अपने परिवार के साथ घर के लिए पैदल निकल पड़े. कई दिनों की पैदल यात्रा के बाद वह अपने गाँव पहुँच पाया. गाँव पहुँचने पर मनोज को परिवार सहित गाँव के ही स्कूल में क्वारंटाइन में रहने को कहा गया. अभी क्वारंटाइन का समय पूरा नहीं हुआ है इसलिए मनोज सपरिवार स्कूल में ही है. अभी भी क्वारंटाइन सेंटर में दूसरे राज्यों में गए मजदूर आ रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

लॉकडाउन में फँसा मजदूर

किशन अपने परिवार के साथ जीवन यापन करने दूसरे राज्य गया था. वहाँ वह अपने परिवार सहित किराये के मकान में रहता था. वह रोजगार की तलाश में अपना गाँव छोड़कर आया था. यहाँ किशन और उसकी पत्नी को मकान निर्माण कार्य में मजदूरी का काम मिल गया था. इससे किशन के परिवार का गुजारा चल जाता था. बच्चों की पढ़ाई भी चल रही थी और कुछ बचत भी हो जाती थी. सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था.

तभी एक दिन देश में कोरोना वायरस संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए लॉक डाउन लगा दिया गया. लॉक डाउन में निर्माण कार्य बंद हो जाने के कारण किशन के परिवार की आजीविका भी बंद हो गई. कुछ दिनों तक बचत के पैसों से घर का गुजारा चल गया लेकिन ऐसा लंबे समय तक नहीं चल सकता था. लाॅक डाउन की अवधि बढाने की घोषणा होने के बाद किशन और उसकी पत्नी बहुत चिंतित हो गये. विपत्ति के समय में अपने गाँव और घर की याद सताने लगी. दोनों ने मिलकर अपने गाँव लौट जाने का निश्चय कर लिया. बसें और ट्रेनें सभी बंद थीं अतः घर लौटने का एकमात्र तरीका था कि वे पैदल ही अपने गाँव के लिए चल पड़ें.

घर जाने की प्रबल इच्छा से प्रेरित होकर किशन सपरिवार पैदल ही सारा सामान लेकर निकल पड़ा. दो दिनों तक पैदल चलने के कारण किशन, उसकी पत्नी और बच्चे थककर चूर हो गये. तभी सौभाग्य से उन्हें एक ट्रक का ड्राइवर मिल गया जो उनके गाँव के पास के शहर तक सामान पहुँचाने अपना ट्रक लेकर जा रहा था. किशन के निवेदन पर वह ड्राइवर उन्हें ट्रक में अपने साथ ले जाने को तैयार हो गया..

ट्रक से अपने गाँव के नजदीक के शहर तक पहुँचने के बाद किशन ने सपरिवार एक दिन का पैदल सफर किया और आखिरकार वह अपने गाँव तक पहुँच ही गया. गाँव पहुँचकर किशन और उसकी पत्नी ने बहुत राहत महसूस की और शहर में झेली कठिनाइयों के बारे में गाँव वालों को बताया. गाँव के लोगों ने किशन को सांत्वना देते हुए 14 दिन के लिए क्वारंटाईन सेंटर शाला भवन में रहने की सलाह दी. क्वारंटीन की अवधि पूर्ण करने के पश्चात वे अपने घर आ गए. अब किशन और उसकी पत्नी ने तय कर लिया कि वे मजदूरी करने शहर नहीं जाएँगे बल्कि गाँव में ही रहकर अपनी रोजी-रोटी चलाएँगे.

अगले माह हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

गुमनाम

रचनाकार - अविनाश तिवारी

कौन हूँ मैं?
क्या हूँ?
थोथा एक ज्ञान
अहं का अभिमान
अन्तस् के प्रश्न से
सकुंचित हैरान हूँ.

क्या मैं
एक नाम हूँ?
हाथों में काम
रोटी- कपड़ा-मकान
लक्ष्य मेरा क्या?
लब्ध क्या यही?
भौतिक सामान हूँ.

साँसों के तार,
तन का प्रवाह,
जीभ का स्वाद,
समेटने का भाव,
जीवन का निर्वाह हूँ.

प्रेम समर्पण त्याग
विछोह या अनुराग
विप्लव का गान,
बंशी की तान,
कदम की डाली,
अनुरक्त इंसान हूँ.

कौन हूँ मैं?
क्या हूँ?
अनुत्तरित प्रश्न
भ्रमित पहचान हूँ,
गुम हूँ या गुमनाम हूँ,
स्व से अनजान हूँ.
कौन हूँ मैं?
क्या हूँ?

खुल गे स्कूल

रचनाकार - महेत्तर लाल देवांगन "राजू"

खुल गे स्कूल दाई ओ,
बस्ता मोर दे दे.
संगी साथी संग दाई,
स्कूल मोला जावन दे.

रामू जाथे, श्यामू जाथे
अउ जाथे भोला.
संग संग महुँ जाहुँ
संग जाही रमोला.

जाबे संग मोर दाई
नाम लिखाय बर
थारी बोतल देबे दाई
भात साग खाय बर.

स्कूल ड्रेस पुस्तक कापी
खाना फोकट मिलही
नई लागे बिसाय बर
सब्बो ल शासन देही.

नवा नवा शिक्षा आय हे
लइका ल सिखाय बर
खेल खेल म पढ़ई होही
पाठ सरल बनाय बर.

पढ़ लिखके मैं दाई
संस्कार पाहूं ओ
ददा दाई के नाम ल
उज्जर कराहूं ओ.

भाखा जनऊला

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली)

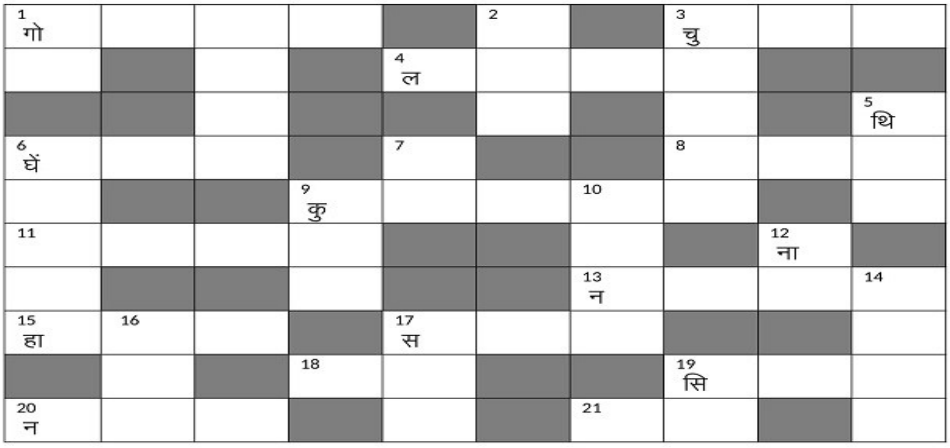

बाएँ से दाएँ:– 01. कोटवार 03. पकाया 04. मुश्किल से 06. जिद्धी 08. खुला मैदान 09. रेतीला 11. बार–बार 13. दशगात्र 15. हिलता हुआ 17. सड़ा हुआ 18. संदेश, सूचना 19. अगुआई 20. मुकरने वाला 21. बहू

ऊपर से नीचे:– 01. पैर 02. गिरगिट 03. गवांर सेमी/फल्ली सब्जी 05. आराम किया 06. बात करते समय नाक का आवाज आना 07. शौक 09. कमरा 10. मुखिया, बुजुर्ग 12. नाम 14. नातिन 16. मुड़ना, वापस 17. स्वर्ग 19. सच्ची बात, सही

भाखा जनउला का उत्तर

1 गो	ड़	ई	त		2 टे		3 चु	रो	य
ड़		त		4 ल	ट	प	ट		
		वा			का		चु		5 थि
6 घें	क्ख	र		7 सा			8 टी	क	रा
न			9 कु	ध	र	10 सि	या		य
11 घें	री	बे	री			य		12 ना	
न			या			13 न	हा	व	14 न
15 हा	16 ल	य		17 स	र	हा			त
	हु		18 सो	र			19 सि	या	नी
20 न	ट	हा		ग		21 प	त्तो		न